राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

www.hellobhojpuri.com

₹20

हेलो भोजपुरी

HELLO BHOJPURI

माटी के महक

जून 2014

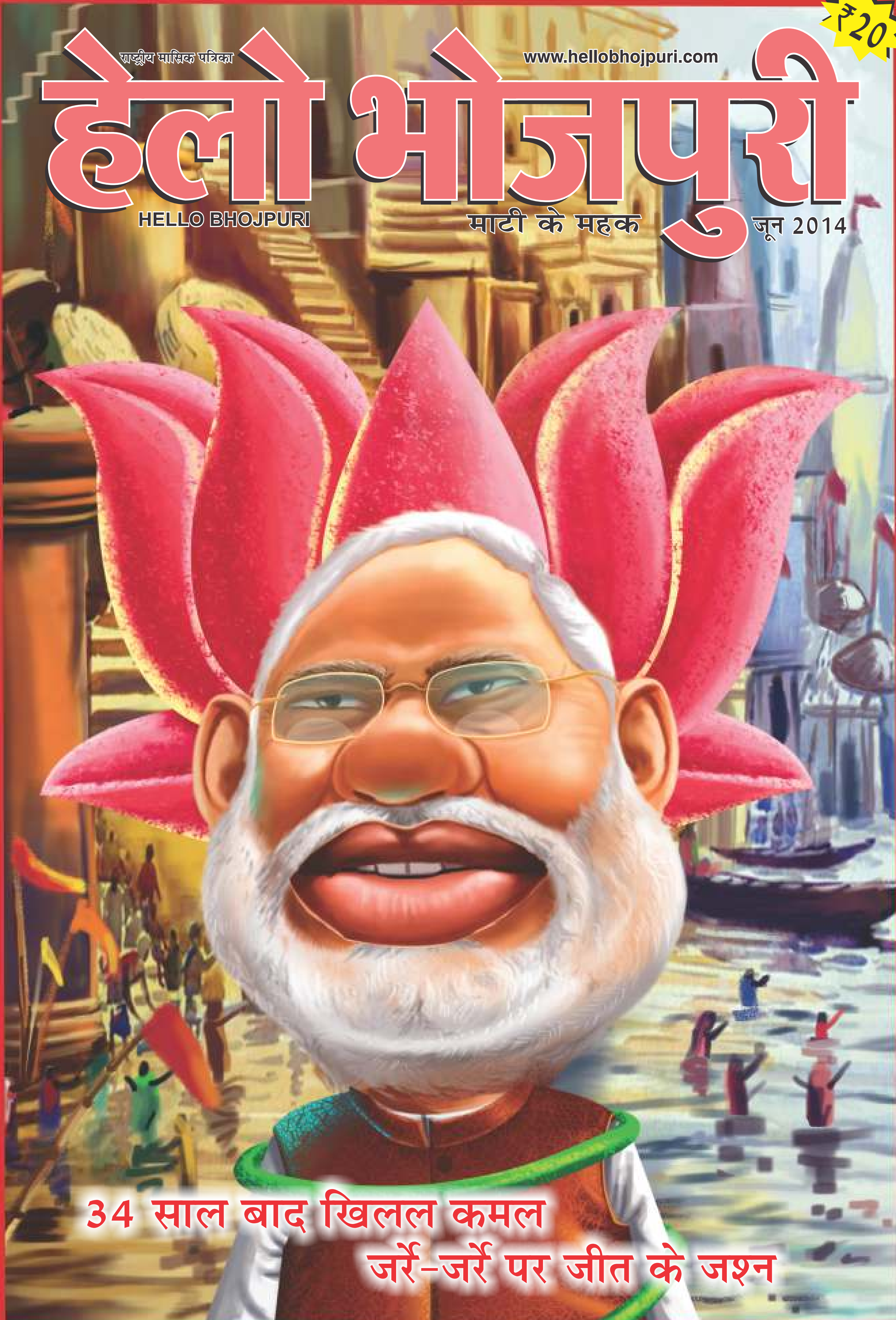

34 साल बाद खिलल कमल
जर्रे-जर्रे पर जीत के जश्न

DCP No.: F2(H-4) PRESS/2014

ABM
MARKETING

A Complete Solution of

★ Health ★ Skin Care ★ Hair Care

NATURAL . SAFE . EFFECTIVE

आहार ही उपचार है

ADVICE FOR HEALTHY LIFE

Regd. Off.: WZ-3, First Floor, Umdesh Bhawan, Palam Village, New Delhi--110045
Tel.: 91-9250006999, 91-9507171960, 7376680209
visit us at : www.abmmarketing.co.in E-mail : care@abmmarketing.co.in

*Customer Care Helpline :
91-9250006999

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.hellobhojpuri.com
हेलो भोजपुरी
HELLO BHOJPURI
माटी के महक

वर्षः 1 अंकः 8 जून 2014 मूल्यः ₹ 20/-

प्रधान संपादक
राज कुमार प्रसाद
+91-7838398788
ई-मेल : **rkanuragi@gmail.com**

***
परामर्श मंडल
प्रो. शत्रुघ्न कुमार, डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव,
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ.अलका सिंह
डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना'
***
साहित्यिक संपादक
संतोष कुमार
***
संपादक मंडल
राजेश कुमार मांझी, नवल किशोर सिंह 'निशांत'
जयप्रकाश गिरी, राजेश भोजपुरिया,
लव कान्त सिंह, अवधेश सिन्दुरिया
***
प्रबंध संपादक
आरिफ अंसारी
***
सेल्स एंड मार्केटिंग
अशोक मिश्रा
***
विशेष आभार
बिपिन बहार
***
फीचर संपादक
मनोज मजनूं, मोहन मितवा
***
कानूनी सलाहकार
अशोक चैतन्या (अधिवक्ता-सुप्रीम कोर्ट)
***
ग्राफिक्स
राज कुमार
आवरण कलाकृति
ओमप्रकाश अमृतांशु
***
क्षेत्रीय प्रतिनिधि
दिल्ली-**दीपक श्रीवास्तव**, मुंबई-**दिनेश सिंह**, नासिक-**प्रभास मिश्रा**, कोलकाता-**प्रिंस रितुराज दुबे**, पटना-**स्यंदन सुमन**, विक्रमगंज-**राजन तिवारी**, **उत्तर** बिहार-**कुंदन सिंह**, वैशाली-**अमित कुमार मिश्रा**, मुजफ्फरपुर-**मोहित दुबे**, एकमा-**डॉ. एम.के. सिंह**, सिवान/गोपालगंज/छपरा-**अभिनव कुमार**, सोनपुर-**प्रभात कुमार** महाराजगंज/जनता बाजार-**रमेश कुमार, सुरेश पंडित** (श्री लक्ष्मी आर्ट स्टूडियो), भगवानपुर हाट-**गुरूचरण गुरू**, बलिया-**आदित्य कुमार अंशु, आनंद मोहन सिंह**, गोरखपुर-**अंगद यादव**, पंजाब-**सिमरनजीत सांडल**
***
अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि
मॉरिशस-**कमला कूंजुल**
बहरीन (खाड़ी देश)-**परवेज लहरी, सतेन्द्र कुमार सिंह**
(उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं।)
***

प्रशासनिक कार्यालय
WZ-3, प्रथम तल, उमदेश भवन, पालम गांव, नई दिल्ली-110045
***
स्वामित्व, प्रकाशक व मुद्रक राजकुमार प्रसाद की ओर से ए-3, गली नं.1 विकास कुंज एक्स., मोहन गार्डेन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59 से प्रकाशित एवं एशियन प्रिंटवेल, 240, गांव-नवादा, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-59 से मुद्रित

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री से प्रकाशक अथवा संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र दिल्ली है।

अन्दर के पन्नों पर

भाषा-साहित्य :
भोजपुरिया माटी आ मिठास 6

व्यंग्य
बेटा अफसर बाड़ें... 8

आवरण कथा
34 बरिस बाद
खिलल कमल...9

यात्रा वृतांत
स्वर्ग धरा का ... 15

आपन बात :
स्वस्थ बिहार
विकास के नवका सूरज ...20

कहानी : डोम के पईसा .. 23

पर्यटन
सारण के शान अम्बिका भवानी... 35

संपादकीय के बहाने

मांझी के सहारे नितीश के बिहार

सबसे पहिले हेलो भोजपुरी के समस्त पाठकगण आ प्रशंषक लोग के 16वी लोकसभा के चुनाव में भारी संख्या में मतदान में भाग लेवे खातीर बहुत बहुत बधाई। देश में आज एक तरफ जहां भाजपा आ मोदी के जीत के जश्न बा त एह आम चुनाव में पार्टी के करारी हार के जिम्मेदारी लेत बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार आपन इस्तीफा दे दिहलें। देश में जहां 30 साल बाद स्थायी सरकार बनला के खुशी मन रहल बा त ओही देश में बिहार आपन राजनितिक उठा पटक के झेल रहल बा।

आज एक तरफ एह बात के इंतजार बा की शायद अब अच्छा दिन आई त दोसरा तरफ बिहार में एह बात के चिंता रफ्तार धईले बा की का अच्छा दिन रह पाई ...

काहे की 15 बरिस के जंगल राज के बाद बिहार के जनता के नितीश कुमार सुशासन के तोहफा दिहलें, नितीश कुमार लगभग 10 बरिस के अपना शासन में बिहार के जनता के बहुत कुछ दिहलें। बिहार के चर्चा बिकास के राह प चले वाला बिहार के रूप में होखे लागल, अपना सुशासन के वजह से दुनिया भर के निगाह ओह बिहार के तरफ देखे लागल जहां कुछे दिन पहिले केहू सोंच भी ना सकत रहे।

सड़क, बिजली आ एतना बिकास के बाद भी आखिर नितीश कुमार के कवन अईसन गलती रहल जवना के वजह से एह आम चुनाव में नितीश कुमार के पार्टी जेडीयू के ई दिन देखे के पड़ल जवना के खुद नितीश कुमार भी कल्पना ना कईले होईहें।

हम कवनो राजनितिक विश्लेषक आ चाहे जानकर त नईखीं बाकिर हामार आपन विचार इ कहत बा की नितीश कुमार राजनितिक परिवर्तन के ओह हवा के रोख के ना पहचान पवलें जवन पूरा देश में बहत रहे।

कुछ राजनीतिक जानकार लोग के मानल जाव त भाजपा 2009 में अगर मोदी के पीएम उम्मीदवार घोषित क देले रहित त शायद पांच बरिस पहिले ही नमो नमो हो गईल रहित। खैर इ सब त अब सामने बा लेकिन जहां तक बिहार के बात बा त नितीश कुमार जवन कहले ओह पर कायम रहलें इ माने के पड़ी। लोकसभा में हार के जिम्मेदारी बहुत लोग लिहल बाकिर नितीश ओहपर कायम रहलें। एह घटना के जे नौटंकी कहत रहे ओकर मुंह बंद करे खातीर पहिला बेर कवनो महादलित के मुख्यमंत्री बना के बईठा दिहल अपने आप में काफी बा। जीतन राम मांझी महादलित वर्ग के एगो मुसहर परिवार से बाड़े। उत्तर भारत में मुसहर समुदाय सामाजिक आ आर्थिक रूप से काफी पिछड़ल मानल जाला। 16वीं लोकसभा के परिणाम के बाद बिहार भाजपा में एगो उम्मीद के किरण जवन जागल रहे ओकरा के नितीश कुमार आपन इस्तीफा देके खाली धुमिले ना कईलन बल्कि एगो महादलित के मुख्यमंत्री बना के आपन जबरदस्त स्ट्रोक भी मरलन।

नितीश कुमार के एह कदम से जाहिर बा की एक ओर सामाजिक न्याय के आगे बढ़ावे वाला नेता के रूप में नितीश के पहचान बढ़ी त दोसरका ओर महादलित समुदाय के एगो अच्छा-खासा वर्ग के उनका प्रति आकर्षण भी बढ़ी।

अईसे जीतन राम मांझी के लेके बिहार में आशंका भी बहुत बा। नितीश कुमार के काम-काज आ सुशासन से संतुष्ट बिहार के अब एह बात के आशंका बा की का मांझी नितीश कुमार जईसन दक्षता देखा पईहन की ना। अगर एह आशंका के जवाब ना में मिलल त इ जीतन राम मांझी आ नितीश कुमार के अलावा जेडीयू खातीर भी नोकसान से सौदा रही।

हालाँकि इ बात नितीश कुमार के भी मालूम बा, एहिसे उनकर कहनाम बा की हम विधानसभा चुनाव तक आपन सारा समय पार्टी आ संगठन के खड़ा करे में लगायेम। अगर एह काम में नितीश कुमार कामयाबी हासिल क लिहलें त एगो शानदार मुख्यमंत्री, जबरदस्त रेल मंत्री के भूमिका के बाद नितीश के इहो भूमिका यादगार हो जाई जवना के आशंका बहुत कम बा। एकरा अलावा खुद जीतन राम मांझी के ओर से भी अईसन संकेत बा की उ नितीश कुमार के बनावल ट्रेक पर ही चले के कोशिस करिहन।

एह सब राजनितिक उठा पटक पर केंद्र में पहिले बेर पूर्ण बहुमत लेके सरकार बना चुकल भाजपा के भी लगातार नजर बा। हर एक घटनाक्रम पर ध्यान राखल जा रहल बा। पहिला बेर प्रधानमंत्री के कुर्सी पर बईठल मोदी के ध्यान भी बिहार पर बा, बिहार में खुद मोदी के भी अपना अईसन जीत के उम्मीद ना रहे। आजादी के बाद बिहार में शायद पहिला बेर अईसन भईल बा की जातीय समीकरण के सीमा टूट गईल होखे। एकर असर अगिला साल होखे वाला बिहार विधान सभा के चुनाव में भी देखे के मिल सकेला। लोकसभा चुनाव में करारी हार के बाद नितीश कुमार खातीर विधानसभा चुनाव में पटना के गद्दी बचावल चुनौती बा। बिहार में छोट से लेके बड तक सभकर इहे कहनाम रहल ह की लोकसभा में मोदी, नितीश के बारे में विधानसभा के बेर देखल जाई। अईसे में आवे वाला समय बताई की बिहार में नितीश कुमार जीतन राम मांझी के सहारे आपन किला बचा पावेलन की ना।

अंत में हमेशा के तरे हम त इहे कहब की भोजपुरी बोलीं, भोजपुरी लिखीं आ भोजपुरी पढ़ीं।

प्रणाम!

राज कुमार प्रसाद
(आर. के. अनुरागी)

“ कुछ राजनीतिक जानकार लोग के मानल जाव त भाजपा 2009 में अगर मोदी के पीएम उम्मीदवार घोषित क देले रहित त शायद पांच बरिस पहिले ही नमो नमो हो गईल रहित। खैर इ सब त अब सामने बा लेकिन जहां तक बिहार के बात बा त नितीश कुमार जवन कहले ओह पर कायम रहलें इ माने के पड़ी। लोकसभा में हार के जिम्मेदारी बहुत लोग लिहल बाकिर नितीश ओहपर कायम रहलें। एह घटना के जे नौटंकी कहत रहे ओकर मुंह बंद करे खातीर पहिला बेर कवनो महादलित के मुख्यमंत्री बना के बईठा दिहल अपने आप में काफी बा। ”

चिट्ठी आईल बा

फाल्गुन अंक बड़ा ही रोचल रहल। जमाना बदलल फगुआ भी बदलल सम्पादकीय पढ़ के अच्छा लागल। शिक्षण केंद्र धन उगाही के केंद्र बनल बिहार में इ सांच बात बा। एकरा अलावे तित सर्वत के कलम जियता में माड़ भात ... खातिर राजेश पाण्डेय के बधाई बा पत्रिका में हिंदी भोजपुरी के साथे भोजपुरी कहानी आलेख के अंग्रेजी रूपांतर भी एह पत्रिका के सफलता के कहानी कहता।

योगीन्द्र शर्मा
अंकित होम डेकोर, एकमा सारण।

एगो दुकान पर हेलो भोजपुरी देखते ही मन ललच गईल आ एके बार में पूरा पत्रिका पढ़ के ही दम लेहनी साथ ही पता लगा के तीन वर्ष खातिर ग्राहक बन गईनी। जिला-जवार के समाचार के साथे-साथे गंभीर सम्पादकीय पढ़ के लागल की अपना भोजपुरी के ऊपर उठावे खातिर अईसन पत्रिका के सख्त जरूरत बा। एकरा खातिर हेलो भोजपुरी से जुड़ल सभे लेखक लोग के बधाई बा।

चैतेंद्र नाथ सिंह
भाजपा मंडल अध्यक्ष एकमा सारण

हेलो भोजपुरी के मार्च अंक पढ़नी हऽ। ई पत्रिका भोजपुरी भाषा के संवैधानिक दर्जा दिवावे में लोग के आवाज बनके, साहित्यिक मंच पर प्रबुद्ध लोग के बीच में विचार-विमर्श के अहम मुद्दा बनके, भोजपुरी भाषी जनता में अपना भाषा के साहित्य के नवीन रूप में पहुँचा के, पूरा भोजपुरी समाज के गौरवान्वित होखे के मौका देलेबा। पूरा भोजपुरी बिरादरी एह सार्थक प्रयास खातिर 'हेलो भोजपुरी टीम' के सराहता।

एह पत्रिका में तींत शरबत वाला कोना बड़ी नीक बा। ज्ञान, साहित्य, लोक गाथा, बालगीत, आऊर पर्यटन के जानकारी से भरल ई पत्रिका एगो संपूर्ण पत्रिका होखे के काफी करीब बा।

नेहा तिवारी
बलिया, उ.प्र.

प्रिय सम्पादक जी

राउर मासिक पत्रिका 'हेलो भोजपुरी' के सहारे राउर भोजपुरी भाषी वालन के लिए आवे वालन दिनन में एगो बहुत बढ़िया सम्बल देवे क काम कईले बानी। जब ऐ पत्रिका के सहारे हमनी क आपन माटी क बात लोगन के समझा देवे मे सफल हो जायेके तब ऐ पत्रिका क अहमियत औरू लोगन के समझ मे आ जाई। पत्रिका सम्पादन में लगल मय लोगन क हमनी के ओर से सादर प्रणाम बा !

चन्द्र कुमार तिवारी
जनपद-गाजीपुर उ.प्र.

जय भोजपुरी जय भोजपुरी जय भोजपुरी आ राज जी रऊओं के जय हो। भोजपुरी बिकास में पत्रिका के अहम् भूमिका बा। भोजपुरी हमनी के माई हिय अऊर आपन माई के माई बोले खातिर सरकार से परमिसन लेवे के जरूरत नइखे। हमनी के भोजपुरी छाती तान के बोले के चाही। भोजपुरी विकास 'हेलो भोजपुरी' जईसन पत्रिका से होता।

आज कल्ह भोजपुरी आर्टिस्ट भोजपुरी शुद्ध नईखे बोल पावत 'रऊआ' जगह प 'आप' उपयोग करतारे, अईसे त भोजपुरी के आपन अस्तित्व मिट जाई। हमनी के इ बात के धेयान देके खाटी भोजपुरी बोले के पड़ी तबे भोजपुरी अपना अस्तित्व में आई। भोजपुरी कईगो देस में बोलल जाला अऊर भोजपुरी मॉरिशस के 'नेशनल लेंगवेज' हऽ।

नवीन कुमार दुबे
आसनसोल, वेस्ट बंगाल

हेलो भोजपुरी मेगजीन बहुत निक बा, संपादक जी राऊर काम त बहुत बढ़िया बा। भोजपुरी विकास के नवका दौर मनोज तिवारी जी से शुरु भईल, ओहिमे रऊआ लोगिन के अहम् भूमिका बा। भोजपुरी के बिकास ना होखे में सबसे अहम् भूमिका खुद भोजपुरी भाषी लोग निभावतारे, उ लोग भोजपुरी के अनपढ़ के भासा बुझेले। हमनी के इहे सोच के बदले के पड़ी आ भोजपुरी के जवन हक बा ओकरा के छीन के लेबे पढ़ी।

हमनी के बंगाल में भोजपुरी भासा भासी के जवन तादात बा उ देख के बहुत निक लगे ला। हमनी के इहे फायेदा उठा के भोजपुरी के दुनिया भर में फैलावे के पढ़ी।

अनीता दुबे
वसई ईस्ट, मुम्बई

राज जी,

इ पत्रिका सराहनीय बा आ रऊआ के धन्यवाद दे तानी की रऊआ आपन अऊर हमनी के माईभाषा भोजपुरी के विकास खातिर पत्रिका सुरु कईनी, जहा तक फगुआ स्पेसल के बात बा त उ संकरन बहुत निमन रहे।

भोजपुरी खली झारखण्ड यूपी बिहार के नइखे रह गईल, अब इ पूरा उत्तर भारत के साथे साथे साउथ में आपन छाप छोड़े लागल बिया। रऊआ से निहोरा बा की मनोज तिवारी जी के बारे में स्पेशल कुछु छापी।

हमके इ पत्रिका के जानकारी प्रिन्स रितुराज दुबे जी के माध्यम से मिलल। चली येही तरह से हमनी के एक होके भोजपुरी विकास में शामिल होखे के।

जय भोजपुरी जय भारत!

बलिराम दुबे
अंडाल, पश्चिम बंगाल

भोजपुरिया माटी आ मिठास

-डॉ.गजाधर मिश्र

भोजपुरी भाषा के कमाल त एकर मीठास बड़ले बा लेकिन एकर एगो आउर कमाल ई बा कि सुने वाला पर एकर असर आतना जोर से होखेला कि उ झकझोर देला

हमनी के धरती मईया के, सबसे सुनर आ नीमन देश, भारत के रहेवाला हईं सन। एह बात के गुमान त हरदम रहेला, बाकी एकरो से बड़हन गुमान के बात ई बा कि, हमनी के भोजपुरिया माटी आ पानी में सनाईल बानी सन। हमनी के एही देशवा में कईसन-कईसन माटी आ पानी होखेला ई त हमनी के कुछ घूम-फिर के आ कुछ पढ़ के जानते बांनी सन, ओही में एगो ई भोजपुरिया माटी-पानी भी बा। एकरा के एगो संजोगे कहल जाई कि, जहां-जहां भोजपुरिया लोग बसल बा, ओहिजा के पानी मीठ होखेला आ ओहिजा के माटी में उपज भी खूब होखेला। इहे कारण बा कि भोजपुरियन के सुभाव भी मीठ होखेला आ ईहंवा के लोग दोसरा के कुछ देहला पर, बाड़ा खुश होखेलन।

खारा आ नमकीन पानी आदमी के सुभाव पर भी असर डालेला, जवना से उनकर मिजाज खारा आउर नमकीन हो जाला। ई त भगवान के कृपा बा कि हमनी के भोजपुरिया माटी में बानी सन, कि आतना मीठ आ दानी कहातानी सन। ए भईया, ई कवनो अपना माटी के बड़ाई नईखी करत, एकर परमान भी बा, जईसे भोजपुरियन के 'माई' कहला में, जवन मीठास होखेला, उ कहियो 'मम्मी' में ना मिली। जब बड़-बूढ़ लोग लईकन के, अरे बबुआ आ बाचवा कह के बोलावेलन त लागेला कि उनका बोलिया से मध टपकऽता।

एही से एगो कहावत कहल जाला कि 'ई ह भोजपुरीया माटी, ना केहु आंटल बा ना आंटी' साचहुं में भईया, ई भोजपुरीया माटी के सोन्हाई आ एकर पानी के मीठास के मुकाबला करे वाला, केहु नईखे। भोजपुरी भाषा के कमाल त एकर मीठास बड़ले बा लेकिन एकर एगो आउर कमाल ई बा कि सुने वाला पर एकर असर आतना जोर से होखेला कि उ झकझोर देला आ नाहियों मन रहला पर, भाषा के कमाल से आदमी, उ काम करे लागेलन। गाँधी जी के आजादी के लड़ाई में गांव-गंवई के मेहरारू जांत-ढेंका चलावत में जब गीत गावऽ सन कि, 'गाँधी जी के अईले जमाना, पिया जेल खाना चलऽ' त ढेर मरद जे आजादी के मतलब ओतना ना जानत रहलें, उहो लड़ाई में कूद गईलन। दोसरो भाषा बोले वाला लोग जब, भोजपुरिया माटी से गुजरे लन आ माई के गीत जईसे 'निमिया के डाढ़ी मईया' आ 'सुगवा के मरबो धेनुश से, उनका कान में जाला त खाड़ होके लोग सुने लागेला।

ई भोजपुरिया माटी के कमाल ना त आउर का कहल जाई। भोजपुरी में विरता के बखान जब होला त, ओकरो कवनो जवाब नईखे। चाहे आल्हा-रूदल के कहानी बा चाहे 'बाबू वीर कुंवर सिंह तेगबहादुर' के गीत होखे। सिंगार रस के भोजपुरी कविता आ गीत के त कुछ कहहीं के नइखे, अईसन लागे ला जईसे दुल्हा-दुलहिन सांचो के राम-सीता के रूप ले लेले बाड़न। सचमुच हमनी के एह भाषा एह माटी के कर्जदार बानी सन, आ एकर बदला हमनी के कुछुओ क के ना चुका सकखतानी सन।

(लेखक हाई स्कूल व्यापुर, पटना में वरीय शिक्षक बानी)

***

जीअन बहुते ईयाद आवेलें

-केशव मोहन पाण्डेय

जीअन कहले गाँव में
पिपरा के छाँव में
इनरा के पानी पर
लौकी-कोहड़ा छान्ही पर
जे के मन करे
तुर के खाव,
धोबीघटवा में डुबकी लगाव।
सभे भाई-भतीजा ह,
गाँव के दमदा
सबके जीजा ह।
गाँव भर के दाढ़ी
बोधा भाई
बनावेले एके छूरा से,
यादो जी, महतो-अंसारी चाचा
तपिस जगावे देह में
एक्के घूरा से।
एक्के ताश के फेंटा पर
एक्के कुरुई में भुजा बा,
अपना झमड़ा के फरहरी सब
जुआ के भइल खूजा बा,
सब हाँड़ी पर परई बइठल
सबके राग समझेला लोग,
भले कतहूँ दही चिउड़ा से
त कतहूँ -
गरई के लागेला भोग।
दुअरा काका के काना-फुस्सी पर
गिरधारी चुटकी मारे ले
होत भिनुसारे नगीना भाई
सबके गइया गारे ले।
भक्ति-भक्त के नाम ले के
तिरछोलई के अम्बर ओढ़ेला जे
डांढ़-आर मिलावे में
कुदारी के कोना से कोड़ेला जे,
ऊ सगरो टोला के मुद्दई हवे
मिल जोल से रिश्ता निबहेला,
सबके हाथ से ले के लौंग
लौंगिया बाबा के बतिया नेह से
उचरेला।
जब एक्के लहरिया मारे सब
तब ताल लड़े बलाय से
भोरहरिया चुस्की चढ़ जाला
पंडी जी के चाय से।
लउके ना कतहूँ इनरा अब
बाड़-बगीचा छान्ह भी
ओहिसन बतरस कहवाँ बा
नाहीं मीठ जुबान भी।
अइसन अब गाँव कहाँ ?
पिपरा के छाँव कहाँ?
टाटी-बाती-बान्हा ना
हँसियाली के बहाना ना।
अटकन-चटकन दही चटाकन
सबके घर के गीत हवे
जे बाउर से बैर करेला
ऊहे सबके मीत हवे।
बदलत समय के फेरा ह
ई जग तब्बे त डेरा ह।
होत बिहाने जब कतहूँ
कवनो मनई लोटा ले धावले,
साँच कहिले हियरा में
जीअन बहुते ईयाद आवेले।

देशी टूल 'इंडो-वर्डनेट' करेगा 18 भारतीय भाषाओं में अनुवाद

हेलो भोजपुरी। इस साल कंप्यूटर और भाषा विज्ञान के क्षेत्र में ट्रांसलेशन टूल के रूप में भी बड़ी उपलब्धि की तैयारी है। केंद्र सरकार के प्रोजेक्ट के तहत आईआईटी, मुंबई के विशेषज्ञों की टीम 31 अगस्त तक मशीन ट्रांसलेशन के लिए एक ऐसा खास टूल बना रही है, जिसकी मदद से देश की प्रमुख 18 भाषाओं में अनुवाद सरल हो जाएगा। इंग्लिश टू इंडियन लैंग्वेज मशीन ट्रांसलेशन (ईआईएलएमटी) के दूसरे चरण का काम पूरा होने के साथ ही यह संभव हो जाएगा।

इन भाषाओं में हो सकेगा अनुवाद : इस परियोजना का उद्देश्य कम लागत और कम समय में अधिक से अधिक कंटेंट अनुवाद की सुविधा भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना है। इस टूल और सर्च इंजन के जरिए अंग्रेजी से हिंदी, बांग्ला, मराठी, उड़िया, उर्दू, तमिल, बोडो, गुजराती, असमिया, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, नेपाली, पंजाबी, संस्त और तेलुगु में अनुवाद हो सकेगा। इन भाषाओं से अंग्रेजी अथवा इन्हीं में से एक-दूसरे में भी अनुवाद करना सरल होगा। इस पूरे प्रोजेक्ट का नाम इंडो-वर्डनेट रखा गया है।

भारत की 18 भाषाओं के 4 लाख 56 हजार 739 शब्दों को इंडो-वर्डनेट की डिक्शनरी में फीड किया गया है। अंग्रेजी या किसी भी भारतीय भाषा का कोई भी शब्द (खास कर टूरिज्म या हेल्थ से जुड़े) इस टूल में टाइप कर मनचाहे भारतीय भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। इसके लिए वर्चुअल की बोर्ड भी नीचे दिया गया है। कोई भी व्यक्ति जिस भाषा का चयन अनुवाद के लिए करेगा, की-बोर्ड भी खुद ही उस भाषा का सिलेक्ट हो जाएगा। पर्यटन और स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े शब्दों को एक भाषा से दूसरे भाषा में आसानी से ट्रांसलेट किया जा सकता है।

इस टूल के इस्तेमाल के जरिए मणिपुरी बोलने वाला कोई भी पर्यटक तेलुगु के शब्दों को आसानी से समझ सकता है। इसी तरह बोडो भाषा बोलने वाले किसी भी मरीज की बात को अंग्रेजी या हिंदी बोलने-समझने वाला डॉक्टर भी समझ सकेगा। जब इस टूल को लीगल फील्ड में सक्रिय कर दिया जाएगा, तब सुप्रीम कोर्ट और विभिन्न हाईकोर्ट के फैसलों को सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद के जरिए पढ़ा-समझा जा सकेगा। इंडो-वर्डनेट पर्यटन उद्योग, लेखकों और अनुवादकों के लिए खास उपयोगी होगा। भाषा और भाषाविज्ञान के क्षेत्र में शोध कर रहे लोगों को भी लाभ मिलेगा। यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्लान (यूएनडीपी), चिकित्सा विज्ञान और शिक्षा, मेडिकल कम्युनिटी सेंटर, जच्चा-बच्चा स्वास्थ्य कार्यक्रमों में जुटे कर्मियों और संचारी रोगों के बारे में लोगों को जागरूक करने में यह टूल खास कारगर होगा।

इन-इन संस्थानों में चल रहा है शोध : सी-डैक, पुणे (कॉन्सोर्टिया लीडर), सी-डैक मुंबई, आईआईटी मुंबई, आईआईआईटी हैदराबाद, आईआईआईटी इलाहाबाद, जादवपुर यूनिवर्सिटी कोलकाता, उत्कल यूनिवर्सिटी बंगलुरू, अमृता यूनिवर्सिटी कोयम्बटूर, वनस्थली विद्यापीठ वनस्थली, नॉर्थ महाराष्ट्रीय यूनिवर्सिटी जलगांव (महाराष्ट्र), नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी और धर्मसिंह देसाई यूनिवर्सिटी (डीडीयू) गुजरात।

अभी उपलब्ध अनुवाद टूल्स पर्याप्त नहीं हैं। क्योंकि, इन टूल्स के साथ फीड किए शब्द भारतीय भाषाओं की विविधता और ग्रामर के मुताबिक फिट नहीं बैठते हैं। इसलिए पहले अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया जाता है और फिर उसका मैनुअल अनुवाद होता है। इसमें मानव श्रम अधिक लगने से समय और धन दोनों ही ज्यादा लगते हैं। कई बार मूल पाठ (कंटेंट) का संदर्भगत (कंटेक्स्ट) अर्थ अनुवाद वाले पाठ (टेक्स्ट) में बदल जाता है। इसलिए इंडो-वर्डनेट में शब्दकोश इस तरह फीड किया गया है, ताकि वह पाठक या उपयोगकर्ता की भाषा में सही अर्थ दे।

भोजपुरिया सुपरस्टार, अभिनेता व गायक

मनोज तिवारी

के उत्तर पूर्वी दिल्ली से ऐतिहासिक जीत पर

हेलो भोजपुरी

टीम के तरफ से हार्दिक बधाई

बेटा अफसर बाड़ें

डॉ.रमाशंकर श्रीवास्तव

बाबूजी के केतना हाली समझवले होखब कि रउआ हमरा के अफसर मत कहीं। बड़का तनखाह पवला से का भइल, हम त सरकारी दफ्तर के एगो कलर्को से गइल-गुजरल बानी। रउआ मन में अपना जमाना के इयाद सटल बा। अंगरेजन के समय रहे। ओह घरी जवना पढ़ल-लिखल के नोकरी लाग जाव त उ सांचो के अफसरे रहे। हम मास्टर डिग्री तक पढ़नी, फेन एम.बी.ए. कइनी। एम.बी.ए. करे के मन ना रहे बाकिर लोगवे ना मानल। बेर-बेर टोक देव - ऐ रमेश जी, तू जे बिना नौकरी-चाकरी के एने-ओने मारल-फिरत बाड़ त ई कइसन लागत बा। लइकांई में तहरा के कुल दीपक कहल जाव। बापे-महतारी के ना तू भर गाँव के सपना रहल। तहरा तरक्की खातिर सभे मने मन इंतजार करे। तीन जगेह छोट-मोट नौकरी कइल आ छोड़ देहल। दोसरा के देख त तू मनेमन सिहाये लाग। बाप रे, अमुक त हमरा से कमे पढ़ले बाड़े बाकिर साठ हजार रूपिया तनखाह घींचत बाड़े। एतना पढ़लो पर हम अठारह हजार पावत बानी। दोसरा के बड़का तनखाह देख के ताहार मन बेचैन रहे।

अब त जेकरे बारे में सुन उहे एम.बी.ए. करे में लागल बा। छोट डिग्री भइला से ताहार मन मुटठी भर के हो जाव।

तबो कुछ दिन ले भटके के पड़ल। लिखित परीक्षा भइल, इंटरव्यूयो भइल। हर बार बुझाव कि ताहार सेलेक्शन हो गइल। अप्वाइंटमेंट लेटर के इन्तजार में महीनों सरक जाव।

ढहत-ढिमलात आदमी जिनिगी में अनुभव बटोरेला। आपन पढ़ाई-डिग्री आ प्रयास के बाद मन एहू बात पर अटक जाव कि आदमी के जिनिगी में किस्मत भी कवनो चीज ह। सब कुछ त किस्मते पर नइखे छोड़ल जा सकत मगर तबो किस्मतो के थोड़ा-बहुत भूमिका होला, चाहे उ एके परसेंट होखे। खैर आखिर में ताहार नौकरी लाग गइल। नौकरी के तनखाह सुन के घर भर के लोग खुश हो गइल। साठ हजार रूपया महवारी कम ना होला। पहिले त तहरा बुझाइल कि बाप रे एतना पइसा कइसे खर्चा होई। बाबूजी अपना जमाना से तुलना करीं। उहां का नौकरी में अढ़ाइए हजार पाके बम-बम रहनी। मगर हमार साठ हजार सुनके भक रह गइनी। वइसे उहां का मालूम रहे कि हिन्दुस्तान में ढेर एम.एन.सी. कम्पनी ढेर-ढेर तनखाह देके अपना टेकनिकल स्टाफ के खुश रखेले। खान-पान, परिवहन सब तरह के सुविधा देले।

मगर कम्पनी के भीतरी बइठला पर रमेश के मन में सचाई उजागर होखे लागल। कम्पनी के दफ्तर में एक सवेरे के गइल रात के नौ दस बजे लउटे के पड़े। हमार मन छटपटा के रह जाव। मगर ओह जंजाल से निकले के राह ना लउके। एगो दोस्त हँसते हमरा पर ताना मरले - मीठा-मीठा गप आ कड़ुआ-कड़ुआ थू। बोरा भर तनखाहो पइब आ ऊपर से तू कम्पनी से मजा मारे के फुर्सतो चाहत बाड़? कम्पनी कम होशियार बिया? एही साठ हजार में तहरा के दूह के ध दी।

दोस्त के टिपनी हमरा अच्छा ना लागल बाकिर उनकर बात हमरा मन में बइठ गइल। हमार अपने शादी में मुशिकल से चार दिन के छुटटी मिलल। बाबूजी अस्पताल में बीमार रहनी त उहां के देखे हम ना जा सकनी। कम्पनी में ऑडिट चलत रहे। कम्पनी के देखीं कि अपना बाप के देखीं। बीमार महतारी हमरा के देखे खातिर आखिरी सांस तक हीकत रह गइली। साठ हजार के नौकरी अइसन जकड़ ले ले रहे कि मन के तनिको चैन ना रहे अपने बेटा के जन्मदिन में मेहमान लोग के चहुँपला के दू घंटा बाद हम डेरा पर पहुँचनी। रास्ता में गाड़ी खराब हो गइल। सब सुविधा मिलल मगर जिनगी के चैन गायब होत गइल। बेर-बेर नौकरी छोड़ देबे के विचार मन में उठे लागे। मगर नौकरी के बाद फेर कहाँ जइतीं। दू-चार जगह अप्लाइयो कइनी। कवनो ऑफर ना आइल। बाबूजी गुमशुम रहनी। एक बेर खिसिया के कहनी। इ कम्पनी छोड़ के कवनो दोसर नौकरी काहे नइख ज्वाइन क लेत। हम त उहो करे के तैयार रहनी मगर अमेरिका-इंग्लैंड जइसन बड़का देश जब मंदी के चपेट में रहले सन त ओकर असर अपनो देश पर त रहे। दोसरा जगह एतना तनखाह पर कवनो कम्पनी हमरा के रखे के तइयार ना रहे।

अब एने साल भर से बाबूजी कहल छोड़ देले बानी कि हमार बेटा अफसर बाड़े। हमरा अफसरी के असली चेहरा बाबूजियो के नीमन से मालूम हो चुकल बा। भावुकता में हम नौकरी छोड़ी दीं त फेर सवाल उठी कि अब कवन कम्पनी हमरा के ओतने तनखाह दी। सभे एक दोसरा के मजबूरी से फायदा उठावे के चाहेला। हमार गति साँप - छुछूंदर के हो गइल रहे। एही तनखाह के दम पर अपना गृहस्थी के जोड़े खातिर हम जगह-जगह से लोन ले चुकल रहनी। उ कर्जा कइसे चुकी। कर्जा के किश्त तनखाहे से भरात रहे।

बाबूजी एक दिन गाँव के बरामदा में चुपचाप बइठल रहनी-गाँवे के एगो साथी आके टोकले-ऐ मरदे, अब कवना बात के फिकिर में पड़ल बाड़? आज ताहार बेटा साठ-सत्तर हजार पावत बा, काल्ह लाख रूपिया पाई। तहरा अइसन किस्मत वाला के बा। बाबूजी मनेमन अपना किस्मत के तरजूई पर जोखत रहीं। हमरा बेटा के बड़के तनखाह वाला नौकरी त लागल। अच्छा खाना, पीना, पहनना-ओढ़ना सब चलत बा। मगर बम्बई में रहे वाला रमेश अपना बाप महतारी से केतना दूर हो गइले। नीमन नौकरी सौत बन गइल। एह से त अच्छा रहित कि कमे पइसा के नौकरी मिलित आ घरे के निचिका रहते। समय से घर आना-जाना रहित आ समय समय पर घर-परिवार भाई-रिश्तेदार से भी सम्पर्क बनल रहित। एगो बड़के तनखाह तरह-तरह के जिम्मेदारी से एतना लाद देहलस कि सहजता से मिलल-जुलल, पर्व-त्योहार में शामिल भइल तक दुलुम हो गइल।

बाबूजी के मुँह से अब ना निकलेला कि हमार बेटा अफसर बाड़े। बेटा के अफसरी केतना महँगा पड़ेला, इ त अब सोचे-विचारे के विषय बा। इस सब कम्पनी देश के जवान लड़का-लड़की लोग के ऊर्जा-दोहन खातिर आइल बा। पन्द्रह बीस साल काम करा लेला के बाद ये लोग के छंटनी होखे लागी। पुरनका चाउर पथ बनेला अब एह मुहावरा पर भरोसा ना रहल। नौकरी के तनाव खा रहल बा। ना ठीक से जीए के बा ना हँसे बोले के। जिनिगी में खाली रूपये पइसे के महत्व नइखे। पइसा के साथ समाज में जीयला के सुखो चाहीं। हे बेकारी के जमाना में आखिर हमरा अइसन जवान लोग का करे का ना करे। हमार द्वन्द्व बढ़त गइल। एक दिन फोन पर बाबूजी से कह देहनी अब हम नौकरी छोड़े वाला बानी। अपने ही गाँव-शहर के आसपास कौनो छोट-मोट नौकरी खोजल जाई। ओमे कम से कम चैन त मिली।

***

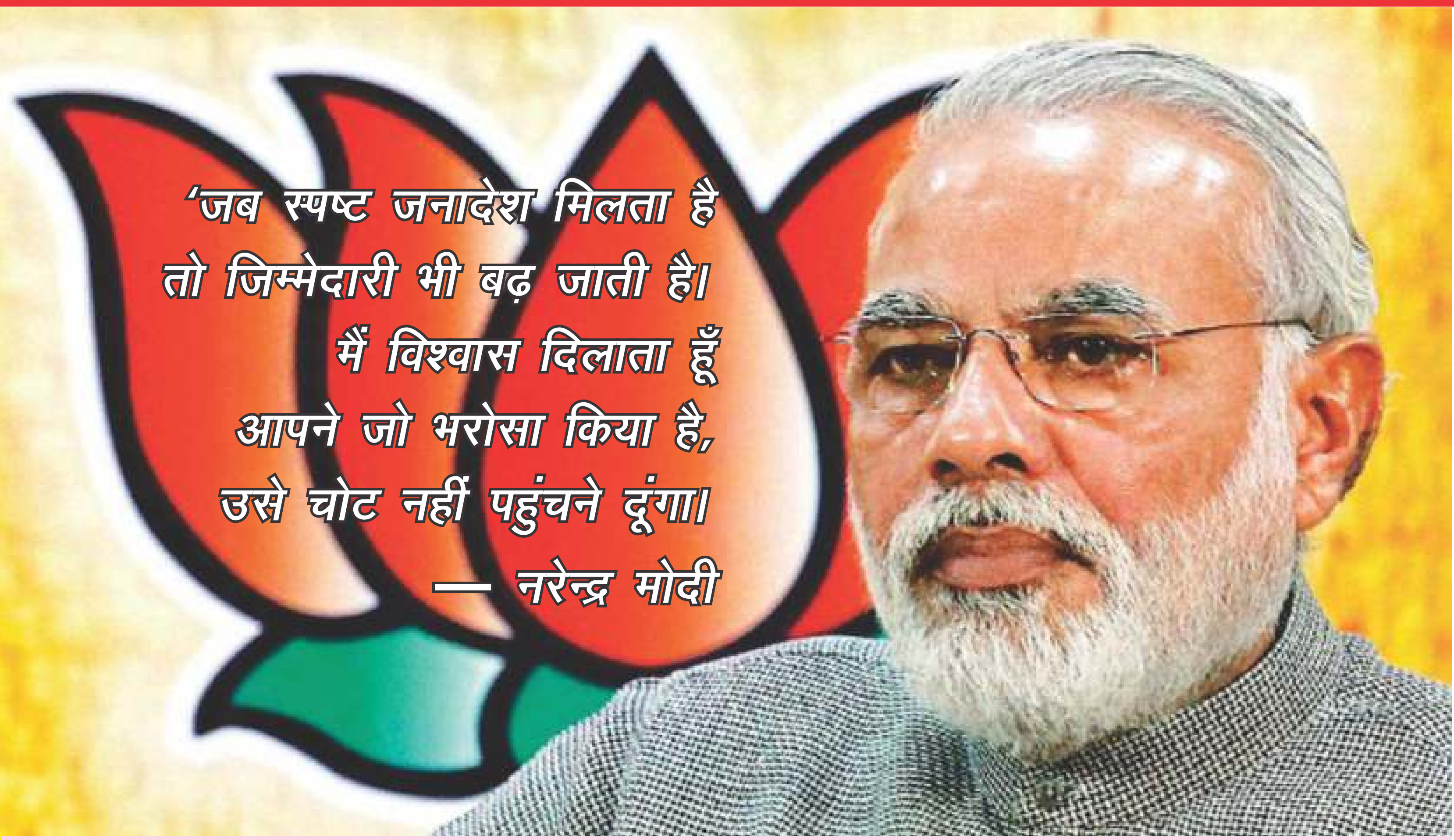

'जर्रे-जर्रे पर जीत के जश्न'

34 बरिस बाद खिलल कमल

जय प्रकाश गिरी, 'जनाक्रोशी'

भारतीय जनता पार्टी के गठन 1980 में भईल ओकरा बाद पूरा 34 बरिस इंतजार करे के पड़ल एह कमल के पूरा तरे से खिले खातीर। हालाँकि बीच में कुछ दिन खातीर कमल खिलल जरुर बाकिर बुझाईल की जबरदस्ती खिलावल गईल बा। स्पष्ट जनादेश, हर तरफ जयघोष। जर्रे-जर्रे पर जीत के जश्न, यंग इंडिया, ओल्ड इंडिया, ग्रामीण इंडिया, शहरी इंडिया, अइसन जनादेश सिर्फ भारत खातीर ही ना बल्कि पूरा विश्व के सबसे बड़ प्रजातांत्रिक देश के सोलहवीं लोकसभा में चमत्कार ही कहल जा सकेला। 543 सीट में से भाजपा के 282 आ अन्य सहयोगी दल के संगे 334, जेकरा कवनो भी समर्थन के जरुरत ही ना पड़ल आ एकरा पीछे जवन जादूगर खड़ा बा ओकर मुकाबला कवनो भी दोसरा नेता से कइल मुश्किल बा। एह चुनाव के नतीजा देखला के बाद जवन नजर आ रहल बा ओकरा से इहे कहल जा सकेला कि ई चुनाव सिर्फ एक कारण से ही ना बल्कि कई अभूतपूर्व कारण से याद कईल जाई। एगो जनतंत्र के सबसे मजबूत फैसला, अभूतपूर्व विजय। एगो अइसन सपना जवन 66 प्रतिशत से ज्यादा वोटर के खिंच ले आइल। भारत के सब युवा एह युवा भारत के साथ पहिला बेर अपना आशा के वोट में तब्दिल कर दिहलस।

एमें सबसे प्रमुख भाजपा के अभूतपूर्व विजय के साथ-साथ भारत में बदलाव के चाहत राखे वाला लोग अपन मत से एक एतिहासिक धरोहर वाला कांग्रेस पार्टी के सिर्फ हरवलस ही ना बल्कि आगे खातीर सोंचे पर मजबूर कर दिहलस। का कहियो कोई सोच भी सकेला कि 60 बरस तक एकछत्र राज कईला के बावजूद घमंड से जनता के मूड के ना भाप सकल। राहुल के नेतृत्व में लगातार दूगो राज्यन में पराजय के बावजूद ना संभल सकल।

आज भारतीय संघीय प्रणाली में हर राज्य में अपने क्षेत्रीय दल तथा अलग-अलग राज्यन में अलग-अलग दल के राज होखे के बावजूद भाजपा एगो बहुत ही मजबूत आ सशक्त दल के रूप में उभरल बा जबकि सभ राष्ट्रीय तथा राज्य स्तरीय दल एकजुट होके मोदी के खिलाफ मुहिम

छेड़ले रहल्ह लो। कहाँ गइल मुलायम आ माया के उतर प्रदेश, नीतिश आ लालू के बिहार। आज देश बदलाव मांगता उ भी कइसन बदलाव, जईसन मोदी के जबरदस्त जीत दिहलस मार्केट के सलामी। कारोबारियन के पसंद अईलें ई मोदी। एगो नया दौर के साथ एगो नया युग में प्रवेश कर गइल भारत।

सच्चे मायने में इ ह जनतंत्र के विस्तार के प्रमाण पत्र। अगर हम बदलाव के समय के बात करीं त हमनी के 1977 जब पहली बार केंद्र में एगो गैर-कांग्रेसी सरकार बनल रहे ओह समय ई नया बात रहे। इंदिरा गांधी जवना तरह आपातकाल लगवले रहली आ उ जन विरोधी फैसला लिहल गईल रहे आ देश में जवन जनाक्रोश फइलल रहे आज फिर उहे जनाक्रोश सिर्फ एह कांगेस के खिलाफ हि ना बल्कि क्षेत्रिय तथा अन्य राज्य स्तरीय दलों के भी उहे हश्र भईल बा जे सपने में भी उ लोग ना सोचले होखी। दलितन के नाम पर राजनीति करे वाला दल 'बहुजन समाज पार्टी' के त खाता भी ना खुलल त कुछ दल के रिजल्ट त अंगूरी पर गिनन जा सकेला। पूरा भारत में भ्रष्टाचार के भयंकरता के खिलाफ बदलाव के बयार कहे जाये वाला 'आम आदमी पार्टी' सिर्फ चार अंक में सिमट के रह गईल। भारतीय राजनीति के मजाक समझे वाली राखी सावंत त सबसे नीचे से टॉप रहली, मात्र 15 मत। ई ह जनतंत्र के सफलता के प्रमाण पत्र। बॉलिवुड से आयातित कईल गइल बप्पी लहरी, गुल पनाग, नगमा, जया प्रदा, महेश मांजरेकर, जावेद जाफरी, रवि किशन, स्मृति ईरानी तथा राज बब्बर जइसन कलाकार सब के पराजय के मुंह देखे के पड़ल। इ ह सफल जनतंत्र के विस्तार के प्रमाण पत्र।

लाखों सपना आ करोड़ों उम्मीद के असली इम्तहान त अब शुरु होता। भाई नरेन्द्र दामोदर दास मोदी एह सुनहरा आ बेमिशाल उम्मीदन के सपना के कईसे पूरा करिहें इहे देखे के बा। आज युवा भारत के उनका पर पूरा भरोसा बा, काहे कि उ गरीबी देखले बाड़े आ, ट्रेन में भी चाय बेंचले बाड़े, एही कारण से गुजरात के सब्जबाग के दिखा के एगो विकास पुरुष के तौर पर उनका के अंकित कइल गईल बा। अब भारत आपन तकदीर बदले के इंतजार करता। जवन मोदी ई ताज पहिनले बाड़े वाकई इ एगो कांटन से भरल ताज बा लेकिन ओतना मुश्किल भी नइखे जेतना लोग समझत बा।

अच्छा दिन आईः आज अगर देश के नवजवान मोदी के चुनलें बाड़ें त उनका से बहुत उम्मीद बा। आज युवा मे एगो नया खून के संचार भइल बा, तबे त एह देश के युवा जाति, धर्म, अपना-पराया, सबकुछ छोड़-छाड़ के मोदी के एह देश के सुनहरा भविष्य तथा खुशहाली खातीर, देश के तकदीर सुधारे खातीर आउर बदलाव खातीर जनादेश दिहल बा। एह उम्मीद के का होई-

1. का देश में नया अर्थशास्त्र के सृजन होई?
2. का काला धन वापस आई?
3. का बेरोजगारी खातीर नया रोजगार के अवसर खुली?
4. का हरेक गांव के रोशनी मिली?
5. का करप्शन से छुटकारा मिली?
6. का आप मंहगाई पर रोक लगा पायेब?
7. का हरेक जिला में एकहेगो आई०टी०आई० कॉलेज खुली?
8. का कृषि के उधोग के दर्जा मिली?
9. का भारत के कॉरपोरेट घरानन से पैसा वसूले खातीर कारवाई होई?
10. का शिक्षा नीति में सुधार होखी? शिक्षा माफिया राज खत्म होई?
11. का बिहार जईसन पिछड़ल राज्य के विशेष राज्य के दर्जा हासिल होई?
12. का दिल्ली के पूर्ण राज्य के दर्जा हासिल होई?
13. का भारत के हरेक नगरिक के एगो 'नागरिक कार्ड', जवना में पूरा विवरण होखे उ मिली?

अगर ना त अच्छा दिन कईसे आई?

चींटीयाँ

प्रो. शत्रुघ्न कुमार, इग्नू
सूत्रधार, भोजपुरी भाषा केन्द्र, इग्नू

कितनी निर्भीक ये चींटीयाँ
कितनी कर्मठ ये चींटीयाँ
न डरती ये भगवानों से
न डरती ये इन्सानों से
न डरती ये साधूओं से
न डराती ये 'शैतानों से
न डरती ये जीवन से
न डरती ये मृत्यु से
न डरती ये बचपन से
न डरती ये बुढ़ापा से
देखों चढ़ रही नाक पर
राम की मूर्ती के उस मंदिर में,
देखो चढ़ रही कान पर
सीता की, मूर्ती के उस मंदिर में
देखो चढ़ी जा रही उस मस्जिद पर,
बिन मुल्ला के चिन्ता किए।
देखो चढ़ी जा रही उस चर्च पर।
विन पादरी के चिंता किए।
अभी दिख रही थीं ये,
उस ग्रंथी की दाढ़ी में लिपटे हुए।
अभी दिख रही थी वे
उस बाबा की जटा में लिपटे हुए।
दिखते बनती इनकी निर्भीकता
हर पहुँच से बाहर के जगहों पर।
दिखते बनती इनकी दिलेरी हर
उन स्थानों पर।
न पहुँचे जिस जगह साधारण
जन, राजा, प्रतिष्ठत जन।
डरती ये नहीं कभी किसी नेता से,
डरती नही कभी किसी मंत्री से,
न डरती ये कभी किसी राजा से,
न डरती ये कभी किसी रंक से,
न डरती ये कभी भूत से,
न डरती ये कभी किसी प्रेत से,
न गिरने का डर इन्हें किसी
वृक्ष की उँची फुनगी से,
न गिरने का डर इन्हें किसी शिवाला के त्रिशूल से
देखों कितनी मस्ती से चल रही
मोहन शर्मा की लाश पर,
देखों कितनी मस्ती से चल रही
सोहन वर्मा की लाश पर।
न डरा पाई कोई आत्मा इन्हे,
थकान रात्रि की आधी रात में।
न डरा पाई इन्हे कोई ध्वंस,
भूकंपन के उस घोंर रात्रि में।
निरंतर बढ़ रही, चल रही
निरंतर कर रही काम
अपने धुन में अपनी मस्ती मे,
बना डाली रास्ता चट्टानों के बीच
बना डाली रास्ता जंगलों के बीच।
कैसी निर्भीक ये चींटीयाँ।
कैसी कर्मठ ये चींटीयाँ।
आओ कुछ तो सीखो ऐ इन्सानों,
जीवन का मकसद इन चींटीयों से,
न किसी से बैर न किसी से लगाव।
निरंतर बढ़ना निरंतर बढ़ना इन का काम।
बिन बाधा पैदा किए बिन रोड़ा अटकाँए
किसी के राह में। बढ़ना इनका काम
सिर्फ चलना इनका काम।

सबक लेके चले के जरुरतः 1984 के बाद अगर कवनो दल के पूर्ण बहुमत मिलल त भाजपा के, लेकिन काहे? ई प्रश्न बहुत ही गंभीर बाटे। 1984 में अगर बहुमत मिल रहे ता दिवगंत प्रधानमंत्री श्रीमती इंदरा गांधी के मृत्युपरांत सहानभुति के बहुमत रहे जबकि एह बार बहुमत विकास तथा पूर्ण बदलाव के खातीर मिलल बा। भारत के जनता के अब गठबंधन के सरकार बर्दाश्त नईखे। आज लोग बिना कवनो शक के भाजपा के पूर्ण बहुमत सौंप दिहल ताकि गठबंधन के बहाना ना चल सके। भारत के युवा आजादी के 66 साल तक कुशासन से पैदा भईल बदहाली के झेल चुकल बा अब सिर्फ विकास चाहिं।

आउर दल के खातीर सबकः कवनो भी चुनाव लोकतंत्र मे अंतिम ना होला। राहुल गांधी जईसन नेता एह बार सिर्फ 1,07,903 मत से जीतलें, जबकि पिछली बार 2009 7,10,000 मत से विजय हासिल भईल रहे। नरेन्द्र मोदी जईसन नेता सिर्फ 3,71,784 बनारस से जीतलें आ आपन गढ़ गुजरात के बड़ोदरा से 5,70,128 मत से। इ बात सोंचे पर मजबूर कर देता कि का जे भी हारल नेता बाड़े उ लोग कभी आपन क्षेत्र के मुआयना भी ना कइले रहे लोग या बरसाती मेढक जइसन सिर्फ चुनाव में ही आपना क्षेत्र में आईल रहे लो। अब ई राजनीति ना चली आउर अगर चुनाव जीते के बा त अब जनता के बीच में जाके काम करे के पड़ी। जात-पात, धर्म-संप्रदाय की राजनीति से दूर रहे के पड़ी। आपन चरित्र के चारा घोटाला तथा शिक्षा घोटाला में शरीक ना करे के पड़ी। जवन भी जन के जनशिकायत होई ओकरा के दूर करे के पड़ी। उ होई जनता के जननेता, आ ना त इहे जनता कान पकड़ के सिर्फ पांच साल पूरा भईला पर गद्दी से उतार फेकी।

जवन तरे कार से वामफ्रंट तथा कम्यूनिष्ट पार्टीय लोग सिर्फ दिल्ली में बैठ के राजनीति कि जनता भी ओव लोग के ओही प्रकार से नकार दिहलस। जदयू तथा सी०पी० आई० को वोट नोटा से भी कम मिलल। इ संकेत हटे वो दल के जे सिर्फ दिल्ली में तथा वातानुकूलित कक्ष में बैठ के राजनीति करत बा लो।

'आप' के हश्रः भारत में भ्रष्टाचार की भयंकरता से मुक्ति दिलावे वाला उ दल जवन बदलाव के बुनियाद समझत जात रहल उ दल भी मात्र चार सीट ही जीत पवलस। केजरीवाल के करिश्मा, केजरीवाल के कल्पना, ऊंच उड़ान, शीर्षस्थ नेतवन के घमंड, पार्टी में संगठनात्मक ढांचा के अभाव, अपने पुराने कार्यकर्तायों की अनदेखी इ ह इनकर पराजय के कारण। जैसे आम आदमी पार्टी आपन दू साल में आपन कार्य प्रणाली से, आपन कैंपेनिंग स्टाईल, सोशल मीडिया के जबर्दश्त इस्तेमाल के उपयोग कइलस ओकर ठिक कॉपी अन्य सब दल भी कईलस। 'आप' के 49 दिन के कार्यकलाप, हर सरकारी तंत्र में भय के माहौल जवन बनल रहे लेकिन केजरीवाल के कुर्सी के कुर्बानी या अत्यधिक इच्छाशक्ति एह पार्टी के असफलता के कारण बनल। अन्यथा इ पार्टी कम से कम 50 या 100 सीट जीत के आइत। आज भले ही चार सीट मिलल बा लेकिन संसद में धमक दिखावे खातिर कवनो कम नईखे तथा दिल्ली के सब क्षेत्र में दूसरा नंबर पर रहल भी अपने-आप में एगो कामयाबी ही कहल जा सकेला।कम से कम केजरीवाल इतना हिम्मत त करेले कि केहु से मुकबला करे खातिर हमेशा तैयार रहेले।

सता परिवर्तन, युग परिवर्तन या व्यवस्था परिवर्तनः एमें कवनो संदेह नईखे कि एह बार जवन इतिहास के रचना भईल बा उ युग, युग-युग तक एह चमत्कार के याद कईल जाई।अइसन स्पष्ट जनादेश जवन जिम्मेवारी के बढ़ावता इ का ह? का इ परिवर्तन सिर्फ सता परिवर्तन ह, युग परिवर्तन ह या व्यवस्था परिवर्तन के खातिर ह? जवना प्रकार से एह दल में पद, प्रतिष्ठा तथा पावर के लालची लोग शामिल बा लो ओकरा से अईसन महसूस होता कि है कि कहिं इ दल भी पूरा तरह कुछ समय बाद में कांग्रेसीकरन वाला ढर्रा पर चले के मजबूर ना हो जावा। एह दल में भी कांग्रेस तथा अन्य सहयोगी दलों से पर्याप्त संख्या में नेता लोग आयातित कईल गईल बा लो आउर वो लोग के नजर हमेशा कुर्सी के करनामे यानी दागदाग करे पर लागल रहि। दिल्ली के एम०सी०डी० में 12 बरिस से राज करे वाली भाजपा से आज तक कुछ भी सुधार ना हो पावल। आज भी कवनो काम बिना रिश्वत के ना होला जबकि 'आप' के 49 दिन के कार्यकाल के लोग आज भी याद करेला। दिल्ली के हर क्षेत्र में दूसरेनंबर पर आइल भी ई दर्शावता कि कहीं ना कहीं लोग के दिमाग व्यवस्था परिवर्तन के लिए लालायित जरुर बा। अगर इ ना आइल त इहे जनता फिर सोचें पर मज्बूर हो जाई।

मजबूत प्रतिपक्ष के न होखल एगो अशुभ संकेतः लोकतंत्र के एक सतम्भ में अगर मजबूत पक्ष दल के भुमिका हवे त दूसरा तरफ प्रतिपक्ष के मजबूत होखल भीए बहुत जरुरी बा। लेकिन एह बार भारतीय जनता पार्टी नआपन विपक्षी दलों का सूपड़ा साफ कर देले बिया वहीं भारतीय संसद के इतिहास में मान्यता प्राप्त प्रतिपक्ष नेता के होई एह पर भी सवाल खड़ा हो गईल बा. कांग्रेस सहित कौनो भी दल के पास नेता प्रतिपक्ष के दर्जा पाने के लिए संख्याबल नईखे. ऐसे में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष कौन के होई? एह पर भी संकट के बादल बादल मरड़ाता। सिर्फ राष्ट्रीय ही ना क्षेत्रीय दल में भी केहु के अईसन स्थिति नईखे कि आपन अकेले दम पर संसद में प्रतिपक्ष के प्रमुख के भुमिका अदा कर सके लो। भारतीय संसद के नियमानुसार मान्यता प्राप्त प्रतिपक्ष के लिए सांसदों की संख्या कुल सांसदों कि संख्या के दश प्रतिशत होखल जरुरी बा। घोषित परिणामों के बाद कवनो भी दल अइसन नईखे जेकर संख्या 54 होखे लेकिन कांग्रेस के सहयोगी दल यूपीए के सदस्यन के संख्या 60 बाटे जे सोनिया के चुनके प्रतिपक्ष के नेता चुनल जा सकेला लेकिन इ बात सब कोई जानऽ ता कि सोनिया एगो मजबूत प्रतिपक्ष के भूमिका अदा ना कर सकेली आ इ भारतीय लोकतंत्र के बहुत बड़ा खतरा कहल जा सकेला।

***

'आप' में अंतर्कलह या आंतरिक लोकतंत्र का अभाव

-जय प्रकाश गिरी, 'जनाक्रोशी'

जनता के नायक, जन-जन के नायक, दिल्ली के गरीबों के मसिहा बनने वाले, बिजली-पानी के मुद्दों से आगे बढ़ने वाले नायक 'आम आदमी पार्टी' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को कौन नहीं जानता। जिन्होंने मात्र 49 दिनों के अंतराल में दिल्ली में कांग्रेस के सहयोग से सरकार बनाकर सरकारी तंत्रों में खौफ फैलाया था, वह भी कैसा खौफ भ्रष्टाचार तथा घूसखोरों के खिलाफ। पुलिस महकमा हो या एम०सी०डी० सभी के कान खड़े रहते थे कि कोई मेरा वीडियो तो नहीं बना रहा है। झुग्गी-झोपड़ी, ठेले-खोमचे वालों तथा फुटपाथ पर अपना व्यवसाय करने वाले शांति की नींद में सोते थे, क्योंकि उन्होंने पुलिस तथा हफ्ता वसूलने वाले एम०सी०डी० कर्मचारी तंग नहीं करते थे और आज स्वयं केजरीवाल जेल में सलाखों के पीछे हैं। अपनी ईमानदारी के बल पर गर्व करनेवाले केजरीवाल स्वयं को न तो गुनाहगार मान रहें है और न तो बेल बॉन्ड पर साईन कर रहें हैं।

दूसरी तरफ इनकी अपने ही कुनबे में इतना अंतर्कलह है जो फूट-फूट कर बाहर आ रही है। एक तरफ केजरीवाल कानून को चुनौती दे रहे हैं तो दूसरी तरफ पार्टी के भीतर ही कुछ लोग चाहते हैं कि केजरीवाल जेल में सलाखों के पीछे रहे और हम लोग अपना चेहरा चमका कर अपनी राजनीति में रोटियां सेंक सके। दिनांक 24 मई 2014 को पार्टी के संस्थापक सदस्या शाजिया इल्मी जो विधान सभा तथा लोकसभा के चुनाव में करारी हार के बाद स्वयं पार्टी से त्यागपत्र दे दिया, इसके सांथ ही कैप्टन गोपीनाथ, अश्वनि उपाध्याय, अशोक अग्रवाल, मधु भादुड़ी एवं संदीप दुबे ने भी त्यागपत्र सौंप

दिये। सिर्फ गोपी नाथ को छोड़कर ये सभी दल के संस्थापक सदस्य थे। क्या ये सभी आम आदमी की परिभाषा गढ़ने में असफल हो चुके हैं या स्वयं केजरीवाल एक तानाशाह की तरह दल को चलाना चाहते हैं। ऐसा आरोप सिर्फ विनोद कुमार बिन्नी का ही नहीं बल्कि शाजिया इल्मी एवं अन्य त्याग सौंप चुके सदस्यों का है। लोकतंत्र सिर्फ नियमों और परंपराओं का मैदान ही नहीं बल्कि एक प्रयोगशाला भी है जिसमें केजरीवाल तथा आम आदमी पार्टी असफल हो चुकी है। दिल्ली के रामलीला मैदान में शपथ ग्रहण समारोह के दौरान स्वयं केजरीवाल ने कहा था 'ये सारी कवायद जो हमलोगों ने कि थी वह मुख्यमंत्री बनने के लिए नहीं की थी। ये सत्ता के किले तोड़कर जनता के हांथ में देने के लिए की थी'।

लेकिन लोकसभा के चुनाव नजदीक आते ही स्वयं केजरीवाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री पद को त्याग कर लालच में लोकसभा के चुनावी मैदान में कूद पड़े। इस सोलहवीं लोकसभा में करारी हार के उपरांत जितने भी सदस्य को यह महसूस हुआ कि अब इस पार्टी में कुछ भी नहीं बचा है, वे किसी न किसी तरह अपना पल्ला झाड़कर मैदान खाली कर रहें हैं तथा पार्टी पर दोषारोपण कर रहे हैं।

कथनी और करनी में अंतरः इस दल के कुछ सदस्यों का मानना है कि इस पार्टी के कथनी और करनी में अंतर है, जो साफ दिख रहा है। पार्टी के वरिष्ठ नेता व स्वयं केजरीवाल ने कहा था कि हम राईट टू रिजेक्ट तथा राइट टू रीकॉल ले कर आयेंगे तथा हमारी पार्टी में उम्मीदवार का चयन दल के सक्रिय सदस्यों द्वारा की जायेगी लेकिन न तो विधानसभा और न ही लोकसभा के चुनाव में इन नियमों का पालन किया गया। इस दल का भी वही हाल है जो अन्य दलों का है। इससे जो आंदोलनकारी सदस्य थे वह टूट चुके है और वे शांत होकर बैठ चुके हैं। पार्टी के एक राष्ट्रीय सदस्य अनिल भारद्वाज का कहना है कि पार्टी इन नियमों में बदलाव अपने एक राष्ट्रीय परिषद के मींटिंग में कर चुकी है। अब उम्मीदवारों का चयन सेलेक्शन समिती अपने विचारों से करती है जो पार्टी के नियमों के खिलाफ है। इस बार जो पराजय हुई है इस पराजय का ठीकरा पार्टी अपने

कार्यकर्ताओं में फूट बता रही है लेकिन पराजय का कारण पी०ए० सी० के सदस्यों की गैरजिम्मेदाराना रवैया है। अतः इस पी०ए०सी० को तुरंत भंग कर देना चाहिए और एक नई पी०ए० सी० का निर्माण होना चाहिए। वही कुछ सदस्य केजरीवाल को स्वयं जिम्मेवार मानते हैं। उन्होंने बनारस में लोकसभा के चुनाव में सभी कार्यकर्ताओं को बनारस आने का न्योता दे दिया था तथा सभी कार्यकर्ता बनारस की ओर रुख कर चुके थे तथा दिल्ली के किसी भी विधानसभा क्षेत्र में एक भी 'आप' के सदस्य दिखाई नहीं देते थे।

पार्टी का संगठनात्मक ढांचा का अभावः भारत को भ्रष्टाचार की मार से मुक्ति दिलाने वाला दल जो बदलाव की बुनियाद समझी जाती थी, वह भी मात्र चार सीटों पर जाकर सिमट गई। केजरीवाल का करिश्मा, केजरीवाल की कल्पना, ऊंची उड़ाने, शीर्षस्थ नेताओं का घमंड, पार्टी का अपने पुराने कार्यकर्तायों की अनदेखी, ये हैं इनके पराजय के कारण। लेकिन इन कारणों के साथ यह भी देखने में आ रहा है कि इस दल में संगठनात्मक ढांचा का अभाव है। आज कोई भी विधानसभा, लोकसभा, ब्लॉक लेवल, वार्ड लेवल पर देखा जाय तो निर्णय लेने वाला कोई नहीं है। प्रत्येक विधानसभा तथा लोकसभा में चार-पांच गुट बने हुए हैं और सब अपनी डफली और अपना राग अलापते रहते हैं और अगर कोई राष्ट्रीय स्तर का प्रतिनिधि आता है तो सभी एक हो जाते हैं लेकिन उसके जाते ही फिर सभी गुट सक्रिय हो जातें है। इसका मुख्य कारण पार्टी के सभी ईकाई में संगठनात्मक ढांचा का अभाव। जिस भी सदस्य के पास विधानसभा के हेल्पलाईन नंबर हैं वह अपने आप को भगवान समझता है, यहाँ तक कि पार्टी की कौन-सी सूचना किस को देनी है किस को नहीं यह भी उसी पर निर्भर करता है। सभी सदस्यों को मीटिंग की सूचना भी नहीं मिल पाती है। अब यह दल एक आंदोलन नहीं बल्कि एक राजनैतिक दल बन चुका है और सभी को अपने-अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना होगा लेकिन यह उत्तरदायित्व देगा कौन? बिना जवाबदेही तय किये तथा बिना संगठनात्मक ढांचे के अभाव मे यह दल विलिन हो सकती है।

आंतरिक लोकतंत्र का अभावः स्वराज की बात करने वाली पार्टी में ही आंतरिक लोकतंत्र नहीं है। यहां पर कुछ लोग सारे फैसले लेते हैं और केजरीवाल भी उन्हीं की सुनते हैं। यह बात सिर्फ शाजिया ही नहीं बल्कि इस दल से निकले सभी सदस्यों का कहना है। प्रख्यात नृत्यांगना मल्लिका साराभाई ने भी इस बात को स्वीकार किया। पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र न होने की बात कहते हुए ही दिल्ली के विधायक विनोद कुमार बिन्नी भी आप से दूर गए। अब 'आप' के बिखरते कुनबे को बचाने में लगी पार्टी के शीर्ष नेता बहुत ही परेशान हैं। 'आप' के करारी हार के बाद जहां वर्त्तमान 'आप' के विधायकों को भय सता रहा है, कुछ तो अपने भविष्य को लेकर भी चिंतित है। कुछ विधायक व कार्यकर्ता अब बगावत करने के लिए भी आतुर हैं और साथ ही

अरविंद केजरीवाल की गैर मौजूदगी में आपकी निर्णय लेने वाली शीर्ष समिति 'पीएसी' बिल्कुल प्रभावहीन हो गई है। उनकी बातों का असर किसी पर भी नहीं हो रहा है।पार्टी कि स्थिति के देखते हुए व आगामी चुनावों का सामना करने के लिए पर्याप्त धनराशी का अभाव भी एक बहुत बड़ी स्मस्या है। दिल्ली में कभी भी चुनाव का बिगुल बज सकता है।

चुनावी बिगुल की संभावनाः चुनावी बिगुल की संभावना को देखते हुए केजरीवाल ने दिनांक 29 मई 2014 को स्थानीय कांस्टिच्यूशनल क्लब में अपने सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं की एक बैठक में यह विचार विमर्श किया कि हमने जो काम किया है उसे लेकर जनता कि बीच जाओ और अपने कार्यों को समीक्षा के साथ जनता के साथ रखा जाय, अन्यथा जनाधार घटने की संभावना लगातार दिखाई दे रही है। विधायक फंड से मिले हुए सारे पैसे इन जनता के बीच में जाकर मुहल्ला सभा कर उनकी मर्जी के अनुसार खर्च करनी चाहिए। लेकिन समाज में मौजूद उपद्रवी तत्व क्या इस नई सिस्टम को जन्म देने देंगे? आपके स्वयं के विधायकों के पास न तो कोई खर्च करने की नीयत है और न कोई सार्थक नीति। अभी दो महीने बाद चुनाव की घोषणा हो जायेगी और आंचार संहिता भी लग जाना है तो क्या कोई भी विधायक अपना फंड इतनी आसानी से खर्च करेगा?

गुड बाय कहलें नितीश बाबू ....

-राज कुमार अनुरागी

सुशासन बाबू के रूप में आपन पहचान बनावे वाला नितीश कुमार अचानक अर्श से फर्श पर आ गइलें। आम चुनाव से पहिले खुद नितीश कुमार के भी इ अनुमान ना रहे की भाजपा से नाता तुरल अतना महंगा पड़ी। नितीश के अपने आप पर आ अपना काम पर विश्वास रहे जवना के गुमान में उ केहू के ना मनलें। शरद यादव खाली नाम के पार्टी अध्यक्ष बाड़ें अइसन कहल जाव त गलत ना होई, काहे की सारा फैसला नितीश कुमार के ही होखे।

एह आम चुनाव में 20 गो सीट से एके हाली 2 गो सीट पर आ जाई पार्टी अईसन सपनो में ना सोंचले होइहें सुशासन बाबू। आखिर में हार के जिम्मेदारी लेत 17 मई के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिहलें।

एहसे ठीक 11 महिना पहिले नितीश बाबू भाजपा से अलग भईले। लगभग 17 बरिस के गठबंधन पिछले साल टूटल। गठबंधन टूटे के वजह नरेंद्र मोदी के पीएम उम्मीदवार बनावल मानल गईल।

16 मई के आईल आम चुनाव के नतीजा मोदी के पक्ष में रहल आ भाजपा गठबंधन के भारी बहुमत से जीत मिलल, जबकि नितीश कुमार के खाता में मात्र 2गो सीट आईल। जबकि भाजपा के संगे गठबंधन में लड़ल गईल 2009 के लोकसभा चुनाव में नितीश बाबू के जदयू के 20 गो सीट मिलल रहे।

कुल मिलाके नितीश बाबू के राजनीतिक जीवन के इ एगो बुरा दौर मानल जा रहल बा। एह सब के दरकिनार कके देखल जाव त बिहार खातीर नितीश कुमार बहुत कुछ कईले। आईं जानल जाव नितीश कुमार के राजनीतिक जीवन के कुछ खट्टा मीठा अनुभव के...

बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री नितीश कुमार के जन्म 1 मार्च 1951 के बिहार के पटना जिला के बख्तियारपुर में एगो मध्यमवर्गीय परिवार में भईल। बिहार इंजीनियरिंग कालेज (अब एनआईटी) से इंजीनियरिंग में स्नातक करेवाला नितीश कुमार 1974 में जेपी आन्दोलन में शामिल भईले। 1974-75 में मीसा के तहत जेल में भी रहलें। 1980 में पहिला बेर बिहार विधानसभा के चुनाव लड़लें बाकिर हार के सामना करे के पड़ल। 1984 में नितीश कुमार पहिला बेर बिहार विधानसभा में पहुंचलें।

केंद्रीय राजनीति : पहिला बेर 1989 में लोकसभा पहुंचेवाला नितीश कुमार 1990 में

वी.पी. सिंह सरकार में केंद्र में कृषि राज्य मंत्री बनले।

1991 में दशवीं लोकसभा खातीर दुबारा चुनल गईले। 1996 में तीसरी बार लोकसभा के सदस्य बनले। 1998 में नितीश कुमार 12वीं लोकसभा खातीर चौथी बार चुनल गईलें।

रेलमंत्री के रूप में शानदार सफर :

अटल बिहारी बाजपेयी सरकार में नितीश कुमार पहिला बेर रेल मंत्री बनले बाकिर 1999 में गैसल में भईल रेल हादसा के बाद नैतिक जिम्मेदारी लेत इस्तीफा दे दिहले।

साल 2001में नितीश दुबारा रेल मंत्री बनले। उनकर रेलमंत्री के रूप में इ कार्यकाल यादगार रहल। इंटरनेट टिकट बुकिंग के शुरुआत, काफी संख्या में टिकट काउंटर खुलवावल, रेलवे में तत्काल टिकट बुकिंग सुविधा के शुरुआत, कइगो राज्यन के जोड़े खातीर सम्पर्कक्रांती जईसन ट्रेन चलावल इत्यादि कईगो सराहनीय काम खातीर यादगार रहल रेलमंत्री के रूप में उनकर इ सफर 2004 तक रहल।

मुख्यमंत्री के रूप में शानदार सफरः

2000 में नितीश कुमार पहिला बेर मुख्यमंत्री बनलन, बाकिर समर्थन के अभाव में मात्र सात दिन में ही गद्दी छोड़े के पड़ल। भाजपा के मदद से साल 2004 में नितीश दुबारा मुख्यमंत्री बनलन। आ 15 साल के राष्ट्रीय जनता दल के शासन के उखाड़ के फेंक दिहलें। उनका एह कार्यकाल में गांव-गांव तक सड़क सुविधा, सरकारी अस्पतालन के सेवा सुविधा में सुधार, बिजली व्यवस्था में सुधार, अपराध, अपहरण आ गुंडागर्दी में कमी, स्थानीय निकाय में महिला आरक्षण 50 फीसदी कईल,पढ़ेवाली लड़कियन के साईकिल योजना जईसन प्रभावी कार्यक्रम के बल पर नितीश कुमार शुसासन बाबू हो गईलन जवना के बदौलत 2010 में बिहार में नितीश कुमार के दुबारा सत्ता में वापसी भईल।

ताकत :

विकासः राजद के एक दसक से भी ज्यादा पुरान जर्जर शासन के बाद नितीश कुमार विकास के राजनीति के आपना शासन प्रणाली के आधार बनवलन।

बौद्धिक छविः काफी दिन बाद बिहार के लोग के अईसन बुझाईल की साफ-सुथर छवि वाला मुख्यमंत्री देश-दुनिया में बिहार के नाम रौशन करी। आ बौद्धिक छवि पेश करी।

प्रतिबद्धताः राज्य के विकास खातीर सातो दिन आ 24सों घंटा काम करेवाला मुख्यमंत्री के छवि से नितीश कुमार के जनता के बीच में काफी पहचान मिलल।

परिवारवाद ना रहलः तीन बेर के मुख्यमंत्री के कार्यकाल में नितीश कुमार पर परिवारवाद के एकहू आरोप नईखे, इहे ताकत उनका के लालू से अलग करत बा।

सिद्धांतवादीः सिद्धांत के नाम पर ही भाजपा से गठबंधन तुरलन। खुलेयाम कहलन की सरकार रहे चाहे जाव बाकिर हम विवादित आदमी के संगे खड़ा नईखीं हो सकत।

कमजोरीः

ब्यूरोक्रेसीः नितीश कुमार के आलोचना बराबर होत रहल की नौकरशाही पार्टी नेता लोग पर हावी बा।

आपन मनमानीः सरकार आ चाहे संगठन, कवनो स्तर पर नितीश कुमार अकेले फैसला करस। इहे उनकर सबसे बड़ कमजोरी रहल।

संवादहीनताः पार्टी कार्यकर्ता बराबर कहत रहस की मुख्यमंत्री के संगे उनकर बातचीत नइखे हो पावत।

अनुपलब्धताः कार्यकर्ता के त छोड़ी पार्टी के विधायक भी मुख्यमंत्री से जब चाहस तब नईखन मिल सकत, इ बात दिनोदिन गंभीर होत गईल,जवना के नतीजा सामने बा।

कमजोर संगठनः अपना छवि के प्रति सतर्क रहेवाला नितीश कुमार कबहूँ अपना पार्टी कार्यकर्ता के मनमानी ना चले दिहलें, इहे नतीजा रहल की कार्यकर्ता भी बेरूखा होत गईलन आ संगठन कमजोर होत चल गईल।

***

स्वर्ग धरा का

आठ घंटे का सफर, एक ऐसा सफर था जिसमें न जाने हृदय कितनी बार संवेदित हुआ। हर तरफ हरियाली, नदियाँ, झील, झरने, पहाड़ और शुद्ध वारावरण। गंदगी क्या होती है? यह प्रशन बेवकूफाना सा प्रतीत होता था।

वर्षा सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय

जीवन एक किताब है जिसमें अब तक न जाने कितने अध्याय, कितने विषय कितने पाठ, कितनी यादें, कितने अनुभव के पन्ने जुड़ते चले जाते हैं कुछ श्याम रंग से तो कुछ सुनहरे रंग की कलम से लिखे जाते है। इसी सुनहरे रंग की खुशबू से सेरे जीवन को सुगंधित करने वाली तथा मेरे इतिहास के पन्नों में रुड़ने वाले मेरे अनुभव आज भी मेरे हृदय की असीम गहराइयों को झंकृत करने वाली मेरी पूर्वोत्तर भारत की यात्रा अविस्मरणीय है।

पूर्वोत्तर भारत यानी सिक्किम की राजधानी गंगटोक तथा दार्जिलिंग और पश्चमी बंगाल के कुछ हिस्से, जिसकी भ्रमण यात्रा बेहद जीवंत करने वाली थी। अपने जीवन के सुनहरे अनुभव की शुरुआत दिल्ली, पालम हवाई अड्डे से शुरू होती है, यह मेरी पहली हवाई यात्रा थी, जो स्वप्न सच होने जैसा था। हमारा स्पाइसजेट विमान डेढ घंटे में बागडोगरा एयरपोर्ट सिल्लीगुड़ी पर उतर चुका था। यहाँ से यात्रा शुरू हुई गंगटोक जाने की। आठ घंटे का सफर, एक ऐसा सफर था जिसमें न जाने हृदय कितनी बार संवेदित हुआ। हर तरफ हरियाली, नदियाँ, झील, झरने ,पहाड़ और शुद्ध वारावरण। गंदगी क्या होती है ? यह प्रशन बेवकूफाना सा प्रतीत होता था। हमारी गाड़ी जैसे जैसे आगे बझती, लगता जैसे जन्नत के दरवाजे खुलने लगे, वहाँ के लोगों में इतनी विनम्रता, इतनी विवेकशीलता तथा समझौतावादी दृष्टिकोण बेहद व्यापक था। एकता की मिसाल कायम करना तथा मदद के लिए हमेशा तत्पर रहना कोई वहाँ के वासियो से सिखे। सबसे हैरानी कि जो बात है वो ये कि यहाँ मच्छर और भिखारी देखने को नहीं मिलेंगे। कितने भी गरीब वासी हो परंतु वे कुछ न कुछ कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं। यह मुहावरा कि अपना हाथ जगन्नाथ की भावला देखने को मिला। प्रदूषण नाम की चीज का कोई नामोंनिशां नहीं।

कलरव करते पक्षी, झर-झर झरते झरने, जो पूर्णतरू स्वतंत्र रूप से संगीत सुना रहे थे मानो प्रकृति हर्षोल्लास से झूम रही हो। इसी स्वतंत्रता से ओत प्रोत बेफिक्र घूमती महिलाएँ जो रात के सूनसान इलाके में भी स्वतंत्र रूप से कार्य करने में लगी हुई है।यह देख कर इंसान सोचने पर मजबूर हो जाता है कि ये वाकई में जन्नत तो नहीं। क्योंकि दिल्ली, जो भारत की राजधानी है वहाँ पर महिलाओं कि किस तरह कि स्थिति है और गंगटोक में ठीक इसके विपरीत।

गाड़ी कि खिड़की से बाहर सिक्किम-मणिपाल यूनिवर्सिटी को निहारा। अंधेरा होने लगा था और जब रात में पहाड़ो पर बसे घर को दूर से देखा तो सच में वह स्वर्ग से कम नहीं था। संपूर्ण पहाड़ पर जगह-जगह इस तरह से रोशनी जल रही थी जौसे कि कितने रंग बिरंगे मोती और मणियों को उसमें खूबसूरती से जड़ दिए गए हों। ऐसा लग रहा था मानों सारे आसमां के तारे बस वहीं बड़े-बड़े पर्वतों पर आ कर बिखर गए हों। ये देख कर आखों को इतना सुकून मिल रहा था। रास्ते में बारिश शुरू हो गई थी। हमारी गाड़ी एक दुकान पर रुकी जहाँ हमने चाय और समोसे का लुफ्त उठाया।

वहाँ के लोगों में जिस तरह कि विनम्रता थी वैसे ही वहाँ के पालतू जानवर भी थे, बिल्कुल निडर और दोस्ती करने के लिए हर पल तैयार। यहाँ पर फ्लावर एक्जिबिशन, गणेश टॉक जो ८०० फीट कि ऊँचाई पर

लिए। यहाँ शिव जी कि 1000 फीट ऊँची मुर्ति बनीई गई है परंतु यहाँ पर बिकने वाले श्रद्धालु और खरीदने वाले लोग कुछ अजीब लगे। ये जगह मुझे उतनी अच्छी नहीं लगी।

दार्जिलिंग की ओर रवाना होती हुई हमारी गाड़ी जब वहाँ पहुँची तो याद आया चाँदनी चौक वैसे ही पतली पतली गलियाँ, बंगाली साड़ी पहने महिलाँए, ठेले वाले, रिक्शेवाले, भीड़ भरी दुकाने बहुत ही ज्यादा भीड़ भार वाला इलाका है। यहाँ प्रत्येक घर के बाहर न जाने कितने पेड़ पौधे पंक्तियों में लगाए हुए थे। ब्रह्मपुत्र नदी जिसे वहाँ रांगपो के नाम से जाना जाता है। यहाँ दार्जिलिंग की सबसे प्रसिद्ध चाय बगान देखे जिसकी ये खासियत है कि यह एक बार लगाया जाता है और 20 साल तक यह वैसे ही रहता है और जितना पुराना होता जाएगा पत्तियाँ उतनी ही अच्छी, ताजा मानी जाती हैं। यहाँ के लोगों में ईमानदारी और समर्पण की भावना हृदय को छू जाती है। इसी समर्पण भाव के साथ आगे बढते हुए हम वहाँ के चिड़ीया घर गए जहाँ विभिन्न

स्थित था, उसका दर्शन करते हुए हमारी गाड़ी आगे बढी। वहाँ घर एक मंजिल के थे और वो भी लकड़ी के बने हुए थे, पहाड़ के दूसरी ओर से देखने में डर लगता था। जनसंख्या तो बहुत कम है वहाँ पर और सुविधाएं भी उस तरह से वहाँ उपलब्ध नहीं हैं। हवा की रफ्तार को चीरती हुई हमारी गाड़ी आगे बढ़ी और चीन और भारत के बार्डर पर गए जो नथुला में स्थित है, यह जमीन से 14000 फीट की ऊँचाई पर है। यहाँ पहुँचने के लिए रास्ते बहुत घुमावदार और ऊबर खाबड़ है तथा साइड में रेलिंग भी नहीं थी, जिससे यह सफर बेहद रोमांचकारी बन गया था। यहाँ जाने के लिए सिक्किम सरकार से परमिट लेना आवश्यक है। बार्डर पर जाते वक्त कहा जाता है कि ऊपर जाते समय ऑक्सीजन की कमी होती है पर फिर भी कुछ फीट पैदल चढाई कर जब मैं चीन और भारत के बार्डर पर पहुँची तो वहाँ फ्लैग हाउस देखा और कुछ सैनिक जो भारत माँ की रक्षा में जुटे रहते है। बार्डर पर से चीन दूर-दूर तक नजर आ रहा था। मैनें सैनिकों से बात की और उन्हें शुभकामनाँए दी। दूर-दूर तक काले पर्वत और पर्वतों पर सफेद पत्थरों से लिखा 'मेरा भारत महान' हमारे हृदय में ओज गुण और राष्ट्रीय भाव उत्पन्न कर रहे थे। ठंड बहुत ज्यादा थी और बर्फ दूर तक फैली हुई थी। वहाँ से आते हुए एक होटल में सभी ने अपने पेट की जठराग्नि को शांत करने के लिए चाइनीज व्यंजन का मजा लिया। हमारी गाड़ी उसके बाद जा पहुँची सिद्धेश्वर धाम मंदिर जो नामची में स्थित है और मुझे वहाँ पर श्रद्धा के नाम लूट ज्यादा लगी। यह एक ऐसा धाम है जो चारों धाम की यात्रा करवाता है और प्रत्येक चीज के रुपए लिए जाते हैं। जूते-चप्पलों के पैसे, कैमरा ले जाले के लिए, कैमरा जमा कराने के लिए, शौचालय प्रयोग करने के, धागा बँधवाने के लिए, प्रसाद लेने के लिए और न जाने किस किस के

प्रकार के प्रजातियों के जानवरों को करीब से देखने का मौका मिला। पर्वतारोहण संस्था में ऐतिहासिक विभिन्न प्रकार के पत्थर, औजार और न जाने किस्म किस्म की रस्सियाँ, वहाँ के हस्तकला केन्द्र में विभिन्न प्रकार के हाथों से बड़े खिलौने, डायरी, कपड़े और साज सज्जा के समान आदि को बारीकी से देखने का मौका मिला। वैसे तो इस जन्नत से आने का मन नहीं था परंतु समय अवधि सीमित थी, इस सीमित अवधि में भी न जाने कितने व्यापक ज्ञान और अनुभव अर्जित किए। अंततः बागडोगरा एयरपोर्ट से दिल्ली के लिए रवाना हुए और अपने साथ वहाँ से अनंत खुशियाँ और अनुभव को बटोर लाए जो अंतिम साँस तक हमारे साथ रहेंगी। पूर्वोत्र भारत के बारे में सिर्फ यही कहना चाहूँगी कि –

'जन्नत तो नभ में होता है, ऐसा कैन बतलाता है,
इसी धरा पर स्वर्ग है ऐसा, जो भारत कहलाता है।'

वाकई में पूर्वोत्तर भारत एक अद्भुत एहसास है, अद्भुत संस्कृति है...

***

संजय ऋतुराज
लेखक व निर्देशक

सही मायने में देखी तऽ फिल्म माया नगरी हऽ, ठिक ओही तरिका से जे ''कवनो गांव में उंट गईल तऽ केहू कहलस की बलबले हऽ तऽ पूरा गांव के लोग ओकरा के बलबले कहे लागल'' बाकी अब उ बात नईखे।

चाईनिज बाजार के राह पर भोजपुरी सिनेमा

चाईनिज सामान पर भरोसा करी चांहे मती करीं चाईनिज सामान आपना निर्माण के गती से लगभग हरेक देश के घर-घर में थोर चांहे ढेर जगह बनाईये लेले बा ई जानते हुए की गारंटी के कौनो मरउवत नईखे।

बिजनेस बिजनेस हऽ चांहे कौनो चीझ के होखे, सास्ता सामान मंहगा सामान के भकोसे में कौनो कसर ना छोड़े कांहे की सास्ता खरीदेवाला के आबादी ढेरकीले जादे बा एगो समे रहल जब फिलिम में काम करेवाला आ फिलिम बानावे वाला बड़कवा काहात रहे आजो काहात बा बाकि पहीले आजु में फरक बा।

फिलिम के बाजार के रुप बदलऽता जब से चाईनिज मोबाईल आईल ओकरा संगे मिमोरी कार्ड आईल जवना के चलते ढेर लोग के बिजनेस के गर्दने मिमोरा गईल।

भोजपुरी फिल्म के निर्माण में एगो समें रहल जब भोजपुरी एलबम बानावे में पांची लाख रुपिया से बेसी लागी जात रहल आ एगो आजु के समे बा जे तिसे हाजार में एलबम बनी जात बा काहां बनऽता कईसे बनऽता ई आपन-आपन दांवपेंच बा, बाकिर एताना जरुर बा की कम बजट में एलबम भा फिल्म बानावे वाला के कातार लाम्बा बा आ जंहा कातार लाम्बा बा ओहीजा बिजनेस के जगहीयो बा रउरा सभे के पते होई की फिलिम के बाजार मोबाईल, इंटरनेट आ टेलिविजन में सामा के रही गईल बा दुसरका ओर सीनेमा हॉल सेटेलाईट के तरंग में बान्हा गईल बा जवना के डिजिटलाईज सीनेमा हॉल कहल जात बा पहिले फिल्म निर्माण के परकीरिया में कईगो जटिल पहाड़ के पार करे के परत रहे जवना के रास्ता भा जानकारी ना रहला के आभाव में सयकड़ो फिल्म बजट के कमी आ अज्ञानता के मार के कारण डाबा में धारा जात रहली आ कम बजट के निर्माता लोग तऽ फिल्म बानावे के सपना लेले बुढ़ा जात रहल हऽ लो लेकिन आज उ बात नईखे सस्तो फिल्मी मिठाई मिलऽता आ मंहगो फिल्मी मिठाई मिलऽता अब जेकरा जवन भावे।

सही मायने में देखी तऽ फिल्म माया नगरी हऽ, ठिक ओही तरिका से जे ''कवनो गांव में उंट गईल तऽ केहू कहलस की बलबले हऽ तऽ पूरा गांव के लोग ओकरा के बलबले कहे लागल'' बाकी अब उ बात नईखे। गावों के लोग उंट आ बलबल के फरक समझऽता फिल्म निर्माण के कल पूर्जा भी एकरा से कांहा अछूता रही, फिल्म निर्माण के दिशा में डिजिटल कैमरा फिल्म बानावे के क्षेत्र में क्रांती लिया दिहलस अब कमो बजट वाला निर्माता बड़ परदा के फिल्म बनावता, फिल्म चलल आ ना चलल ओकरा करम भरोसे बा।

जांहा तक चाईनिज बाजार के तर्ज के बात बा तऽ निर्माता लोग फिल्म निर्माण में ढेरकी ले पईसा हिरो आ हिरोईन के उपर खर्च करत बा जवना के कारण फिल्म मंहगा हो जातीया आ ओकरे पारछाही जईसन फिल्म तैयार होत बाड़ी

सं जवना के हिरो हिरोईन मसहुर नईखे रहत बाकी पईसा लेत नईखन भलुक देत बाड़न जवना के चलते फिल्म निर्माण के काम आसान हो जात बा एगो निर्माता के बदले अनेकों निर्माता हो जात बाड़न चांहे उनका लोगिन के निर्माता के मतलब पाता होखे चांहे ना, अउर जवन रोपया कास्टिंग में खर्च करे के चांही उ पईसा फिल्म के बाकी तकनिकी निर्माण आ प्रचार-प्रसार में खर्च कईल जात बा अब रहल बात की फिल्म निर्माण में लागल पईसा कईसे वापिस होई तऽ इ सवाल बड़की बजट वाली फिलमन के साथ में भी बा काहे की अंतिम फैसला तख जनता दरबार के हांथ में छोड़ दिहल बा चाहे फिल्म के सिनेमा हॉल में देखे चांहे मोबाईल भा पाइरेसी सीडी में देखे, अंतिम नतिजा में छोट बजट वाली फिलिम आ बड़ बजट वाली फिलिम दुनो के धाका लगखता, बाकी बड़ बजट के दोबारा मुड़ी उठावे में सोंचे के पड़ता उंहवे छोट बजट के निर्माता देंही के धुरी झारी के फिर से मैदान में कुदी जात बाड़न कांहे की उनका आसपास में थोरे-थोरे पईसा लागावे वाला अभिनेता लोग आपन बारी के इंतिजार करता। निर्माता भी पिछे नईखे हटत इहे भरोसा पर की आजु ना काल्हु कामयाबी पइबे करम सिनेमा हॉल में भले लोग देखे भा ना मोबाईल में त देखबे करी सही मायने में कंही त ओह कम बजट के निर्माता, हिरो, हिरोईन, लेखक, निर्देशक, गीतकार, संगीतकार, गायकार भा केहू प्रसिद्धि पावता त पूरा फिल्म के कामयाबी के नजर से देखल जात बा।

भोजपुरी फिल्म के गुणा गणित में जेतना हिरो हिरोईन के बड़ भूमिका बा ओतना बाकी केहू के नईखे फिल्म देखे से पहिले लोग हिरो आ हिरोईन के नाम जानल उचित समझेला ओकरा बाद कथा पटकथा आ फिल्मांकन के बारी आवेला।

हिरो हिरोईन हिट तऽ फिल्म हिट...। अब रुउरा सभे के मन में इहे सावाल चलत होई की जब नामी गिरामी हिरो हिरोईन के लेके फिल्म बानाई तख पईसा-रोपया ढ़ेर लगबे करी आ जब पैसा रोपया ढेर लागी तऽ फायदा कईसे होई। निर्माता लोग एकर भी जोगाड़ू काट निकालिए लिहलन, हिरो के बेहन तऽ गायकारने मे नू बनेला, अब जवन नाया भा पुरान गायकार आपना जिला भर में हिट बा आने नामी बा ओकरा के लेईके फिल्म बानावल लोग उचित

समझता फिलिमीया अउरी कंही हिट होखे भा ना होखे बाकी ओह जिलवा में तऽ हिट होखबे करी जावना जिला के गायकार फिलिमीया में हिरो बनल बा, ओह जिला के लोग भी आपन आंखी के सोझा पलाईल पोसाईल बड़ भईल गायकार के देखे जाला की फिलिमीया में कईसन लागता, एकरा चलते फिल्म के टिकट काउंटर पर भिंड़ हो जाला, भिंड़ के देखी के अउरी भिंड़ ईकट्ठा हो जाला एह तरिका से सप्ताह महिना भर फिलिम परदा पर लटकल रहेले, फिलिम के बेवसाय करेवाला लोग आपन फायदा खातिर दिन रात एक कर देला एक सिनेमा हाल से दुसारका सिनेमा हाल में फिलिम धउरे लागेले धिरे-धिरे फिलिम के गोड़ चाका में बदल जाता आ चाका से पंखी में बदल जाता अब फिलिम धउरे के जगहा उड़े लागऽतिया।

ऐही के देखा-देखी फिलिम बानावे वाला के हुजूम बिना कौनो चिंता-फिकिर के फिलिम के निर्माण में लागल बा, अब रहल बाजारवाद के बात तख चाईना के राह पर एह से कहल जा सकता की भोजपुरी में गायकारन के बाहारी आ गईल बा मनोज तिवारी से एह परंपरा के "शुरुआत भईल आ चलल जा रहल बा जवन गायकार जेतना नामी ओकर ओतने पूछ भले एक्टींग के ए-बी-सी-डी आवे चांहे ना, फिलिम देखे देखावे के दायरा भी घटी गईल बा, पहिले सगरे सीनेमा हॉल मे फिलिम लागत रहे अब जंहावा के हिरो बा ओहीजा फिलिम हीट करतीया आ हर जिला में साल भितरे एगो नामी गायकार जनम लेता जवन फिलिम में पईसा लागावे के भी जोगाड़ रखखता, एह तरिका से करोड़ो के लागत वाला फिलिम के आपन लागत निकाले खातीर बिचार करे के पड़ी कांहे की छोट बजट के फिलिम घर-घर में आपन जगह बानवतारी सं कम लागत कम खर्च अउर ज्यादे इंटरटेनमेन्ट आ लागत से ज्यादे फायदा ऐही के तख चाईनीज बाजारु फारमुला कहल जाला जवना के राह पर भोजपुरी फिल्म चल देले बिया, भोजपुरीहा लोग ढेर बाड़न, भोजपुरी के बाजार बाकी क्षेत्रिय भाषा के मुकाबले बड़ बा अईसना में भोजपुरी बोलेवाला आ ना बोलेवाला सभे बाजारी में आपन-आपन जोर अजमईबे करी, पुरान धोती आ कुरता पहीन के हिरो आपन जोर अजमइबे करी आपन बलबूता पर बाजार में छईबे करी कांहे की भोजपुरी फिल्मी दुनिया सास्ता में पुरहर माजा देबे के तइयार बा...

***

नमक! कितना सस्ता, कितना मूल्यवान

नवल किशोर सिंह 'निशांत'
हिन्दी-भोजपुरी साहित्यकार

रात के अंधेरे में एक चोर का हाथ रसोईघर में रखे एक बर्तन से टकरा गया। बर्तन में रखे हुए चीज का स्वाद जानने के लिए उसने मुँह में खा लिया। अरे ! यह तो नमक है। मैने इस घर का नमक खा लिया। मुझे इस घर में चोरी नहीं करनी चाहिए। वह घर से बाहर हो गया। नमक जैसा सस्ता चीज मुँह में चले जाने पर चोर का विचार भी बदल गया। आखिर क्या विशेषता है इस नमक में ?

नमक का रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड (*Nacl*) है। संस्कृत और बंगला में लवण, अंग्रेजी में साल्ट तथा भोजपुरी में नून कहलाता है। संसार की कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ के लोग नमक न खाते हों। कितना ही सुंदर एवं सुगंधित भोजन क्यों न हो, नमक के बिना स्वादिष्ट भोजन की कल्पना नहीं की जा सकती। तभी तो एक राजा की पुत्री ने अपने पिता से कहा था कि मैं आपको नमक से ज्यादा प्यार नहीं करती। ऐसा सुन राजा क्रोधित हो गए थे, कि तुम ऐसे सस्ते चीज से मेरी तुलना कर रही हो। तो क्या नमक तुच्छ चीज है ? कदापि नहीं। मेरे विचार से नमक ऐसा वस्तु है जो वफादारी एवं ईमानदारी के प्रतीक के रूप में विश्वविख्यात है। गांधी जी भी नमक आंदोलन करके अंग्रेजी हुकूमत को हिला दिए थे। नमक खा कर नमक हरामी करना किसी भले मानव के वश की बात नहीं। आज भी समाज उसी को पूजता है जो नमक हलाल हैं। नमक हरामी करने वालों के नाम पर दुनिया थूकती है। नमक का संबंध मस्तिष्क से भी है। जिसमें अपने देश तथा समाज के प्रति स्वाभिमान व गैरत नहीं होती। जो लालची एवं मक्कार होते है, वही देश का नमक खाकर वतन को बेचने का काम करते है। आपकी वफादारी की तुलना काजू-किशमिश तथा मूल्यवान सोने-चाँदी से नहीं बल्कि चुटकी से खाये जाने वाले नमक से होती है। जब तक हमारा नमक गुलाम था, हम गुलाम थे। जब हमें नमक की स्वतंत्रता मिल गई हम शीघ्र स्वतंत्र हो गए।

नमक का निर्माण समुद्री खारे जल से होता है। खारा जल कठोर होता है। उसी प्रकार नमक हलाल लोग वफादारी के प्रति कठोर होते हैं। उनकी कठोरता पर लोभ या प्रलोभन का प्रभाव नहीं होता। नमक का ऋण रूपये पैसे से नहीं बल्कि वफादारी से चुकाया जाता है। यह दीगर बात है कि आज बहुत से लोग ऐसे हैं जो देश का नमक खा कर विदेश की मानसिकता रखते हैं। ऐसे लोगों को इतिहास कभी माफ नहीं करता। घास की रोटी चबाने वालों को, अग्नि में भस्म हो जाने वालों को, सूली पर लटक जाने वाले नमक हलाल आत्माओं को दुनिया नमन करती है परंतु सुविधा सम्पन्न नमक हरामों को समाज तो क्या भगवान भी क्षमा नहीं करते हैं। आज भी जयचंद व मीरजाफर जैसै नमकहरामों पर हम थूकते हैं और थूकते रहेंगे। क्या ये तोड़-फोड़ करने वाले मुट्ठी भर असामाजिक लोग अपने वतन की चुटकी भर नमक का कर्ज सात जन्म तक भी चुका सकेंगे? उन्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि नमक का उपयोग किसी चीज को गलाने पचाने में भी होता है। देश द्रोहियों के जख्मों पर नमक पड़कर यह दिखा देता है कि नमक हरामी करने वालों को वह तड़प-तड़पकर मरने को विवश कर देता है। नमक का मूल्य नहीं समझने वाले अंग्रेज हमारे कई स्वतंत्रता सेनानियों को काला पानी (नमकीन पानी) भेजकर भी उनके नमकहलाली को नहीं डिगा पाये। यदि नमक का उपयोग चुटकी से हो तो वह जीवनदायी है। जब आदमी के शरीर से ज्यादा पानी निकल जाता है तब नमक चीनी का घोल संजीवनी बन जाता है। यदि कोई इसे अधिक खा ले तो उसे ब्लड प्रेशर की शिकायत होने लगती है। भोजन में इसकी मात्रा अधिक हो जाए तो भोजन का स्वाद बिगड़ जाता है। जमीन में नमक की अधिकता उसे ऊसर तथा बंजर बना देता है। यदि आपमें कायरता है तो लोग नमकीन कह कर संबोधित करते हैं, क्योंकि किसी भी चीज का संतुलन में रहना श्रेयस्कर होता है। चुटकी भर नमक की कीमत हम अपने देश व समाज के प्रति नमकहलाल बन कर ही चुका सकते हैं। यदि आप किसी का नमक खाते है तो अपनी वफादारी से उसका ऋण चुकाने का वचन दीजिए। यदि आप इससे सहमत नहीं हैं तो नमकहरामी करके देश व समाज से अपमानित एवं तिरस्कृत होने को तैयार रहिए।

***

पावन गंगा

हिमालय के गोद से निकलल बड़ू
सबसे पावन सबसे खाटी,तोहर पानी
तोहरे से बा मान भारत के।
पुराण बखाने तोहर कीर्ति
जन्मली माई हरी गोण से।
घर घर में तोहरा के पूजे
धरती माई के गोद में दाउरतारू हे माई
पूजे तोहके देबी देवता,
पिए पानी तोहर जीव जनावर हो।
फरका फरका जगह बा, फरका फरका नाव
केहू कहे गंगा त केहू कहे जमुना
इहे पावन नाव से बसल बड़ू
हर मंदिर आ प्रदेश में।
पूज रहल बा तोहके भारत
फईला रहल बा,गन्दा तोहरे तीर
जवन मानुष के तू जिनगी देलू
उ देता तोहके कूड़ा-कचरा के ढेर।
बड़-बड़ फैक्ट्री के करिया बऊर पानी
आके मिलाता तोहरे साथ
तुही चलाव कऊनो चकर,
छोड़ा आपन अऊरो तेज पान।
रऊआ से बा निहोरा,
मुर्ख मानुष के द सद्बुधी आ ज्ञान।
राखस साथ आपन गंगा माई के,
कारावस भारत के अमृत पान।

'प्रिंस' रितुराज दुबे

प्रभाष मिश्रा

स्वस्थ बिहार
विकास के नवका सूरज

बिहार में जागरूकता में कमी के कारण गरीबी आ अनपढ़ता बा। जागरूकता पैदा करे में सरकार के संगे-संगे स्वयंसेवी संगठन के बड़ भूमिका निभावे के पड़ी।

स्वस्थ रहे के माने होला कि तन आ मन दुनु से स्वस्थ रहल। बढ़िया स्वास्थ्य के कमी से समाज पिछड़ जाला। बिहार में अधिकांश लोग गांव में रहेला।बिहार के कुल आबादी में गांव में रहे वाला के हिस्सा 88.7 प्रतिशत बा, ओहिजा शहर में रहे वाला आबादी के हिस्सा 11.3 प्रतिशत बा। अपना देश में बिहार ,हिमाच प्रदेश के बाद दूसरका सबसे कम शहरीकरण वाला राज्य बा।शहर के तुलना में गांव में स्वास्थ्य सुविधा के घोर आभाव बावे।

बिहार में जनसंख्या वृद्धि के औसत देश के औसत से ज्यादा बा। नयका जनगणना आंकड़ा 2011 के हिसाब से बिहार घनी आबादी के मामला में सबसे आगे बा। एजी एक वर्ग किलोमीटर में रहे वाला लोग के संख्या 1102 बावे उहवे देश के आऊरू हिस्सा में रहे वाला लोग के औसत संख्या 382 बावे। उत्तर प्रदेश आ महाराष्ट्र के बाद सबसे ज्यादा लोग एही प्रांत में रहे ला।एतना बड़ आबादी खातिर स्वास्थ्य सुविधा के पहुचावल आसान काम नईखे। सभेके उत्तम स्वास्थ्य सुविधा से जोड़े खातिर सबसे पहिले जनसंख्या पर नियंत्रण करे के उपाय कईल जरूरी हो गईल बा।

दुनिया में सबसे पहिले परिवार नियोजन के लागू करे वाला आपना देश के गांव प्रधान बिहार राज्य में परिवार नियोजन कार्यक्रम हिचकोला खाता। बिहार के अस्पताल के बुरा हाल त केहु से छिपल नईखे।प्लास्टर खातिर रूई, पावडर आ सिरिंजों कभी-कभी मरीजे के खरीदे के पड़े ला। बाढ़ के त बाते अलग बा, सुखरूख दिनों में कबो-कबो रोगी के खटिया पर टांग के ले जाए के नजारा के दर्शन आसानी से होत रहेला। प्रदेश के कुछ अस्पतालन के हालत में कुछ सुधार जरूर भईल बा ,बाकिर ई गंवई स्वास्थ्य परिदृश्य के बदले खातिर नाकाफी बा।

अप्रिल 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के लागू भईला से राज्य के स्वास्थ्य केंद्र में बदलाव आवे लागल बा। एह कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्य के समय पर पावें खातिर राज्य सरकार, स्वास्थ्य विभाग के अंदर ही राज्य स्वास्थ्य समिति के बनवले बा। एहमें आम लोगन के भागीदारी बढ़ावे खातिर जिला स्तर पर जिला स्वास्थ्य समिति आ प्रखंड स्तर पर प्रखंड स्वास्थ्य समिति के भी बनावल गईल बा। 'स्वस्थ बिहार की मुहिम' के जरिए गांवा-गाई स्वास्थ से जुड़ल कार्यक्रम के पहुँचावे के प्रयास कईल जाता।गावं में लोक स्वास्थ, स्वच्छता आऊर पोषाहार के प्रति जनजागरण पैदा करे खातिर सामाजिक त्यौहार भी मनावल जाता।ऐमें गांव के आशा, एएनएम, ममता, आंगनबाड़ी सेविका आऊर ग्राम पंचायत के महिला समूह के नीमन भागीदारी रहेला। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन में प्रत्येक एक हजार के आबादी पर एगो आशा कार्यकर्ता के बहाली भईल बा।

जननी आ बाल सुरक्षा योजना, जवन बिहार में जुलाई 2006 में शुरू भईल एह से गांव में संस्थागत प्रसव के प्रचलन में बड़ी तेजी से बढ़ोतरी भईल बा। एकरा संगे-संगे एह से जन्म के समय, बच्चा आ जच्चा के मरे के दर में भी काफी कमी आईल बा। राज्य स्वास्थ्य समिति के ओर से नवजात बच्चा के सुरक्षा खातिर नवजात शिशु सुरक्षा कार्यक्रम शुरू कईल गईल बा। ग्रामीण लोग के सुविधा खातिर राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार एगो 'जयप्रभा जननी-शिशु आरोग्य एक्सप्रेस सेवा' शुरू कईले बा। ऐकर 24 घंटा सेवा मिलेला। ई ऐंबुलेंस सेवा सरकारी संस्था में ईलाज खातिर निःशुल्क मिलेला। ऐकर जरूरत होखला पर 102 नं. पर मुफ्त डायल कईल जा सकता।

बिहार में जागरूकता में कमी के कारण गरीबी आ अनपढ़ता बा। जागरूकता पैदा करे में सरकार के संगे-संगे स्वयंसेवी संगठन के बड़ भूमिका निभावे के पड़ी। सरकार के शिक्षा के बेहतरी के संगे-संगे स्वास्थ्य के बुनियादी आधारभूत संरचना के भी ठीक ढ़ंग से नया रूप देबे के पड़ी। सामाजिक स्तर पर भी लोग के नजरिया बदले के जरूरत बा जवना से कि विकास के नया सूरज गांव में ही दिखाई देबे लागो। वंचित आ पिछड़ल/अति पिछड़ल समुदाय के बीच स्वास्थ्य सुविधा के आसानी से पहुँच बनावल आज समय के बड़हन मांग बा। स्वस्थ बिहार मुहिम के सफलता वास्तविक रूप में बिहार के लोग के सशक्तिकरण में आ उन्नत बिहार के बने में बेजोड़ भूमिका निभाई।

***

भारतीय उच्च शिक्षा की रैंकिंग नीचे क्यों?

-जय प्रकाश गिरी

आज भारत विश्व में उच्च शिक्षा का अकादमिक हब बनता जा रहा है। यह भी देखने में आ रहा है कि शैक्षिक श्रेष्ठता के बलबूते पर अंतर्राष्ट्रीय आउट्सोर्सिंग बाजार का सबसे बड़ा हिस्सेदार है। भारत का यह बाजार विश्व के कई देशों को चुनौती दे रहा है। भारत की इस चुनौती से अमेरिका काफी चिंतित है लेकिन अब प्रश्न उठता है कि क्यों भारत की उच्च शिक्षण संस्थाओं को विश्व स्तर पर रैंकिंग नहीं हो रही है।

अभी-अभी लंदन में हाल ही में जारी टाइम्स हायर एजुकेशन मैगजीन की वर्ल्ड रेपुटेशन रैंकिंग-2014 की सूची में इस बार भी विश्व के 100 श्रेष्ठ उच्च शिक्षण संस्थानों में भारत को किसी भी यूनिवर्सिटी को कोई भी स्थान नहीं है। इस संस्था ने शोध की गुणवता, स्नातक स्तर पर रोजगार के अवसरों की उपलब्धता, वैश्विक स्तर पर शिक्षा, विषय वस्तु व शिक्षण प्रतिस्पर्धता तथा शिक्षण संस्था की अंतर्राष्ट्रीय साख जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विश्व के वरिष्ट शिक्षाविदों के मतों के आधार पर उच्च शिक्षण संस्थाओं का अकादमिक सर्वे किया जाता है।

इसमें पहले स्थान पर अमेरिका का हार्वर्ड विश्वविद्यालय, दूसरा स्थान भी मैसाच्यूट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमेरिका, तीसरा स्थान स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी, चौथा स्थान कैंब्रिज यूनिवर्सिटी ब्रिटेन तथा ऑक्स्फोर्ड को पांचवे स्थान पर रखा गया है। इस साल भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वस्तर की रैंकिंग में अमेरिका और इंगलैड ने ही बाजी मारी है। येले यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन, शिकागो यूनिवर्सिटी जैसी संस्थाएं विश्वस्तर पर अपने शाख बनाए हुए है जबकि भारत ब्रिक्स यानि ब्रजील, रुस, भारत, चीन, और दक्षिण अफ्रिका जैसे देशों में अकेला ऐसा देश है जो आर्थिक विकासशील देशों में शामिल है लेकिन चिंता इस बात की हो रही है कि क्यों उसका एक भी उच्च शिक्षण संस्थान दुनिया के 225वें स्थान तक में भी शामिल नहीं किया गया है सिर्फ पंजाब विश्व विद्यालय को वरियता सूची में 226वें रैंकिंग में रखा गया है। भारत में आईआईटी दिल्ली, मुंबई, कानपुर, चेन्नई, रुड़की तथा खड़गपुर को 351 से 400 के बीच का रैंक प्राप्त हुआ है। भारत के आईआईएम एक श्रेष्ठ संस्थानों में से एक माना जाता है जबकि इसको किसी भी श्रेणी में नहीं रखा गया है। चीन, जपान, फ्रांस, फिनलैंड, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रिका, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, इस्राइल एवं ताइवान जैसे देश उच्च शिक्षा के इस अंतराष्ट्रीय बैंचमार्क से आगे निकल गये हैं।

आखिर इसका कारण क्या है और क्या हो सकता है?

उच्च शिक्षा के विकास में

TARGET-2
COACHING CENTRE
Director : B.N. Singh
Contact : 06154242011
9162864338
Bank/SSC/ Rly/ AF/Navy/ NDA/MBA/ BPSC-PT/ NET/BPS
नोट : अब तक सौ ज्यादा विद्यार्थियों ने नौकरी पाई
Near Nagrpalika Bhawan, Siwan
B.O. : Near Shekhar Cinema, Siwan

रिपोर्ट

असमानताः

यह एक सच है कि भारत में जो उच्च शिक्षा का विकास का जो आधार है उसमें बहुत बड़ी असमानता देखने को मिलती है। आज भारत के सर्वोच्च शिखर पर आईआईटी, आईआईएम, एम्स एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय जैसे 200 संस्थाएं कार्यरत हैं जिसमें बामुश्किल एक लाख छात्र ही प्रवेश पाते हैं तथा दूसरी ओर यानी निचला पायदान कहना गलत नहिं होगा लगभग 300 राज्य विश्वविद्यालय और 20000 से अधिक कॉलेज हैं जिनमें लगभग डेढ़ करोड़ छात्र विद्या अर्जन करते हैं। इसके अलावा डीम्ड विश्वविद्यालय जिसमें कुछ को छोड़ दिया जाय तो शेष औषत तथा निम्नस्तरीय श्रेणीक्रम में रखने योग्य हैं और इसमें से अधिकतर स्वपोषित संस्थाएं हैं जो उच्च शिक्षा के गुणों की परवाह किये बिना स्वयं को एक बड़े बाजार के रुप में विकसित कर लिया है। इनमें से अधिकतर कॉलेज या विश्व-विद्यालय या तो नेताओं के हैं या किसी बड़े कॉर्पोरेट सेक्टर के, जो प्रवेश की पात्रता को ध्वस्त करते हुए उच्च शिक्षा के स्तर को कमजोर कर कमाई का जरिया बनायेहुए है।

राष्ट्रीय उच्च शिक्षा मूल्यांकन परिषद का सर्वेक्षणः

भारत के इस सर्वे रिपोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत में 68 प्रतिशत विश्वविद्यालयों और 90 प्रतिशत कॉलेजों में उच्च शिक्षा की गुणवता या तो मध्यम दर्जे की है या दोष पूर्ण है। इनके 75 प्रतिशत उत्तीर्ण डीग्रीधारी छात्र बेरोजगार हैं। योजना आयोग के रिपोर्ट भी यही खुलासा करती है कि हमारे देश के 60 प्रतिशत विश्वविद्यालयों और 80 प्रतिशत कॉलेज से निकले छात्रों के पास न तो कौशल है और न भाषा दक्षता जिसके कारण ये छात्र उचित रोजगार के लायक नहीं है। आज 60 प्रतिशत ऐसे स्नातक हैं जो हिन्दी तथा अंग्रेजी में आवेदन पत्र नहीं लिख सकते। ढंग से हिन्दी नहीं बोल सकते। ये हैं हमारे उच्च शिक्षा में दोष।

शिक्षा में न्यूनतम बजटः भारत के कुल बजट का 3 से 4 प्रतिशत ही शिक्षा के लिए खर्च किया जाता है जबकि कोठारी कमिशन ने शिक्षा के लिए कम से कम 6 प्रतिशत बजट प्रदान करने की बात कही थी। एक सच यह है कि कुल बजट का 90 प्रतिशत शिक्षकों के वेतन में खर्च हो जाते हैं और इनमें जुड़ी अन्य ज्ञान कौशल, परीक्षा सिस्टम, कुछ नया कर पाने की खोज में असमर्थ तो होंगे ही। अगर यही स्थिति रही तो हम अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग सूची में कैसे आगे आयेंगे।

शिक्षा माफियाः आज भारत का 12 प्रतिशत छात्र ही उच्च शिक्षा ले पाते हैं और 3 लाख से भी अधिक छात्र उच्च शिक्षा के लिए ब्रिटेन, अमेरिका, जर्मनी और आस्ट्रेलिया चले जाते हैं। कहने का मतलब यह है कि भारत का बहुत बड़ा हिस्सा आज भी उच्च सिक्षा से वंचित है। विकसित देश भारत में उच्च शिक्षा को आज विशाल बाजार के रुप मे देख रहा है। आज हजारों शिक्षण एजेंसियाँ भारतीय बाजार में कूद पड़ी हैं तथा विश्वस्तरीय शिक्षा गुणवत्ता को बताकर विदेशी विश्वविद्यालयों में यहां के छात्रों को भेज रही है या हम सब अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं को अपने यहाँ आमंत्रित करने पर मजबूर है और इसी करण विश्वस्तर पर अमेरिका, ब्रिटेन, जपान व जर्मनी जैसे देशों के सिक्षा संस्थानो की विश्व ब्रांडिग हो रही है।

आज विश्वस्तर पर हो रही उच्च शिक्षा का न्यूनतम रैंकिंग एक प्रश्न चिह्न जरूर लगा रहा है कि आज कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों मे रिक्त 40 से 50 प्रतिशत सीट कब तक भरे जायेंगे। आज एक बड़ा नेता दो जगहों से चुनाव में खड़ा हो सकता है भले ही वो जितने के बाद में वो पद त्याग दे लेकिन एक विद्यार्थी दो डिग्री नहीं ले सकता है और दो जगहों से नहीं पढ़ सकता है। शिक्षा विभाग में शिक्षकों के रिक्त पद खाली रह सकते हैं लेकिन नेताओं कि एक कुर्सी खाली नहीं रह सकती। एक कुर्सी के लिए उप-चुनाव हो सकते हैं, आखिर क्यों? हम कब तक चुप बैठे रहेंगे। शिक्षा में सुधार कैसे होगा या शिक्षा मफियायों का ही राज रहेगा।

***

डोम के पईसा

बिपिन बहार
गीतकार व अभिनेता

हिरदया से चलल दरद के बाढ़ पियाज के छिलका नीयर पपनी पर रोकाइल बा लोर बन के। बान्ह टूटी त एकदम परलय आ जाई।

आज मन तनी जादा फरहर बा। सब दिन से अलहदा बतियो त बा फरहर होखे के। सिनेमा इंडस्ट्रीज के सबसे बड़-कोकिल कंठ गायिका आज हमरा गीत के गइहें। अइसन रची रची के मुखड़ा लिखले बानी कि सुनते संगीतकार, निर्माता-निर्देशक आ सभे हमरा कलम के कारीगरी के दीवाना हो जाई।

भोरे-भोरे नहा धोवा के मेहरारू के हाथ के महास्वादिस्ट टमाटर के चटनी आ गरमा गरम पूड़ी के नास्ता क के , ऐनक में चेहरा निहार के , झुलुफी संवार के , हाथ में डायरी आ कलम लिहले , लिफ्ट से हम निचे उतरके मेन सड़क पर आ गईल बानी।स्टेसन खातीर ऑटो रिक्शा के इंतजार में खड़ा बानी। दूर ले अबहीं रिक्शा नइखे लउकत। मन-पंछी फुर्र दे उड़ के स्टुडियो पहुँच गइल बा। खुशी में सउनाइल मन माहौल के परिकल्पना में कुलाँच मारता। गीत के मुखड़ा सुन के सभे हमरा बड़ाई के पुल बान्हता। आ ओह पुल पर खाढ़ होके हमार सीना अपने आप गुमान से फुलाइल जाता।

सीना अबहीं आउर फुलाइल रहित बाकिर बीचही में कमीज के जेब में भाईब्रेटर मोड पर राखल मोबाइल घ्रिन्न-घ्रिन्न करे लागल। मन पंछी तुरंते लवट आइल। सड़क के किनारे खड़ा बानी अबहियों दूर दूर ले कवनो रिक्शा नईखे लउकत।घ्रिन्न -घ्रिन्न , गांव से बड़का भईया के फोन ह। बड़ा शुभ मौका पर इनकर फोन आइल बा। इनहूँ के बता दिहीं कि आज स्वर कोकिला हमरा गीत के गइहन।खबर सुन के घर में माई , दीदिया आ बाबूजी सभे आज पागला जाई। 'हेलो बबुआ'- 'हं भईया परनाम, सुन ना एगो गीत त अइसन लिख देले बानी कि ओकरा के सुपरहीट होखे से केहू ना रोक पाई। भईया ...सुन तार नुं ...हेलो ...हेलो' मोबाईल के स्पीकर कान में खूबे चिपका लिहनी।

हं बबुआ, आज घरे दाल मत छेवंकिह लोग, बाबूजी गुजर गईनी। सउँसे गांव जुटल बा, बांस कटाता। डोमाई घाट ले जाए के पड़ी। तूं चिंता मत करीह, समय मिले त दसकातर ले चल अइह...

फोन बहुत पहिले कट चुकल बा। पूरा देह सुन्न बा, कठेया मार गइल बा देह आ दिमाग के। केतना रिक्शा आवता, हरन बजा के रुकता आ जाता, कवनो परवाह ना। बीस-बीस मन के गोड़ आ पचास मन के माथा भईल बा। बाबूजी गुजर गईनी?

अबहीं दुइयो बरीस त पूरा ना भईल गांव से अईला। बिदा लेत समय जब हम बाबूजी के गोड़ छुवनी त उहां के डांटत डपटत कहले रहनी- 'मउगा नीयर मुंह का लटकवले बाड़, तोहरा के केहू जबरन थोड़हीं भेजता। केतना बढ़ियां एजुगे मास्टरी करीत बाकिर सिनेमा में काम करे के जिद्द त तुहीं नु धईले बाड़।

जा चिंता मत करीह, जब सिनेमा से मन उबिया जाई त लवट अईह... आरे अबहीं तहार बाप। लल्लन पाधेया जिय तारें।'

घ्रिन्न-घ्रिन्न, घ्रिन्न-घ्रिन्न। स्टूडियो से म्यूजिक डायरेक्टर के फोन आवता। फोन रिसिब कके बतियावे के ताकत अब देह में नइखे बांचल। करेजवा आके गाला में अटक गइल बा। घरे लवट के मेहरारू के बता दिहीं का कि हईसे-हईसे हो गईल बा। आकी एजुगे बीच सड़क पे खूबे जोर-जोर से चिल्ला के हंकड़-हंकड़ के पुका फार के रोयीं-आरे बाबूजी हो बाबूजी।

हिरदया से चलल दरद के बाढ़ पियाज के छिलका नीयर पपनी पर रोकाइल बा लोर बन के। बान्ह टूटी त एकदम परलय आ जाई। का करीं हम...? फेरु फोन बाजे लागल। स्टूडियो से म्यूजिक डायरेक्टर के कॉल ह। ''सर चालीस मिनट में पहुंच रहा हूं, रस्ते में हूं गाना एकदम रेड्डी है'' अन्सोहातो बोला गईल हमरा से इ बात आ रिक्शा रुकवा के हम चल दिहनी स्टेसन। आ ठीक एक घंटा बाद हम पहुंच गईनी स्टूडियो। सभे नया-नया कपड़ा पेन्हले बा आ गमकौआ सेंट से पुरुवा मादक भईल बिया। चार-पांच गो अर्धनग्न मेनका-उर्वसी अपना उन्मत जउबन से माहौल के इन्द्रलोक बना रहल बाड़ी।

घ्रिन्न-घ्रिन्न, भईया के फोन ह गांव से-ह बबुआ हमनी के डोमाई घाट आ गइल बानी सन, जरावे के व्यवस्था हो रहल बा। कफन वोगेरा आ गईल बा खाली डोमवा लकड़ी देवे में तनी जिद्द कईले बा, कहता कि एक हजार एक रूपिया लेब तबे लकड़ी देब। हेलो...हेलो...नेटवर्क कटता बबुआ? फोन कट गईल।

मुबारक हो मल्होत्रा जी, फिल्म का टाईटल तो पहले से ही हिट है-हिलोर मारे जवानी। नमस्कार। नमस्कार, हाय। हेल्लो। आईये राईटर साहब। इनसे मिलिए अपने फिल्म का गाना इन्होंने ही लिखा है। क्या धमाल गाना है! इंडस्ट्री के बड़े वरिष्ठ गीतकार हैं-सदाबहार जी, द किंग ऑफ आईटम सौंग्स।

अचके कवनो कमसिन बाला अपना हसीन काया के बांटत-लुटावत-छिटत आ मुसकुरात आईला। घ्रिन्न-घ्रिन्न, फेरु भईया के फोन आवता घाट पर से-हेलो... हेलो... बबुआ, सभ ठीक बा इहवां, मरन-सेज तईयार हो गईल बा, मुंह में आगी हमहीं देत बानी, एही से उतरी लेहला पर हमार देह बन्हा जाई। ...तुं दसकातर ले देखिह...समय लागे त आ जईह, कवनो तरह के चिंता मत करीह। आ हं... डोमवा एक हजार एक से निचे ना मानत रहल ह त दहारी सिंह से कुछ रुपिया पईंचा लेनिह... हेलो बबुआ... हेलो.. .नेट...वर...क... फोन कट गईल। दियरा में नेटवर्क कम धरेला।

सोंचऽतानी... कि डोमवन के रेट भी एगो लास पर एक हजार एक हो गईल बा... इहो ठीके बा। आखिर सभकर बिकास होखे के चाहीं।

आरे सदाबहार जी। कहां रहतानी महाराज? हई लीं मिठाई खाई, मार्केट में त रउवा नाम के डंका बाज रहल बा। देखीं हम अबहीं नया डायरेक्टर बानी, राउर सहयोग आ आशीर्वाद के जरुरत बा। रउरा गीत के कीमत त हम ना दे सकिले बाकिर हई एगो छोटहन भेंट बा, कबूल करीं...

डायरेक्टर हमरा हाथ में एगो चेक धरवलें, नजर तुरंत राशि वाला खंधा पर गईल-लिखल बाटे एक हजार एक रुपिया मात्र। घ्रिन्न-घ्रिन्न, घ्रिन्न-घ्रिन्न... फेरु भईया के फोन ह, रिसिभ ना करेम काहे कि ओह चेक में साफ लउकत बा हमरा भईया के रोवत चेहरा आ पीछा लास के आगी आसमान छुवता... पंडी जी उचारतारें- वासांसि जीर्णानि यथा विहाय... नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि...!

***

डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव

जीवन एक रंगकर्म

'The world is stage and every men and women merely player. They play their role.'
-Willium Shakespeare

दुनिया के महान नाटककार शेक्सपीयर के कथनानुसार यह दुनिया एक रंगमंच है और प्रत्येक नर-नारी अभिनेता है। वह अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है और यही उसकी विवेकशीलता उसे पशु से अलग करता है। इसलिए प्रकृति ने मनुष्य में नाटक करने की तमाम गुण प्रदान की है। मनुष्य धरती पर जब एक शिशु के रूप में अपने जीवन की शुरूआत करता है तो वह बिना वजह के अपने माता-पिता अथवा अपने निकटतम व्यक्तियों का ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट करने हेतु नाना प्रकार की लीलाएं करता है। जैसे बिना किसी शारीरिक कष्ट के रोने लगता है तो माता-पिता का ध्यान बरबस उसकी तरफ चला ही जाता है और बच्चा इच्छित वस्तु प्राप्त करने में सफल हो जाता है तो यह नाटक नहीं तो और क्या है? गौर करने पर हम पाते हैं कि उसकी आंखों में आंसू की एक बूंद नहीं है मगर रो रहा है। अर्थात् वह पूर्णतः रोने का नाटक कर रहा होता है। अभिभावक भी वात्सत्य रस से अभिभूत हो अपने प्यारे शिशु को बहलाने के क्रम में कभी कुत्ते की तरह भौं-भौं, कभी शेर की तरफ दहाड़ने तो कभी बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं आदि अनेकों तरह की लुभावनी ध्वनियां निकाल उसके ही अनुरूप आंगिक रूप आदि द्वारा स्वांग करते हैं। फलतः अभिभावक द्वारा किये गये विभिन्न तरह के स्वांग से उत्पन्न उस रस से प्रभावित हो बच्चा कभी डरता है, कभी हंसता है और कभी-कभी तो उन्हीं भावों का हू-ब-बू नकल करने लगता है।

प्राचीन काल से शुद्रक, भवभूति, भास, कालीदास से लेकर शेक्सपीयर, ब्रेख्त, चेखण, बर्नार्ड शॉ... तक रंगमंच के मनीषियों ने समकालीन जनता का अपने-अपने ढंग से मनोरंजन करते रहते हैं तथा इस सशक्त विधा दृश्य-काव्य के माध्यम से सम्यक शिक्षा भी देने के साथ-साथ समाज में व्याप्त तमाम कुरीतियों यथा-अंधविश्वास, जाति-पात, ऊंच-नीच, गैर बराबरी, साम्प्रदायिकता, शोषण, छूआ-छूत, अशिक्षा, बेरोजगारी, हिंसा आदि के प्रति ध्यान आकृष्ठ कर उसके समाधान के लिए जनता को जागृत करते रहे हैं।

आज भी भारतीय जन-नाट्य संघ (इप्टा) अपने जन्मकाल से रचनात्मक एवं मानवीय मूल्यों के रक्षार्थ रंगकर्म काम कर रही सांस्कृतिक रंगमंच एवं इसके जैसी और सांस्कृतिक मंच जो रंगकर्म कर रही है यथा-कठपुतली, सार्थक सिनेमा इन कार्यो को गति प्रदान कर रही है। नाटकों में जुलूस, साखाराम बाइंडर, अदरक के पंजे, घासीराम कोतवाल, कबीरा खड़ा बाजार में, मशीन, चरणदास चोर, आगरा बाजार, तुगलक, पोस्टर, मातादीन, मदारी आया, हल्ला बोल, गबर घिचोर, बिदेसिया, बेटी बेचवा, मोटेराम का सत्याग्रह, आला अफसर... आदि या सिनेमा के क्षेत्र में शंभू मित्रा का 'जागते रहो', चेतन आनंद का 'नीचा नगर', इप्आ के बैनर तले बनी 'धरती के लाल', प्रकाश झा का 'दामूल' इनके अतिरिक्त तारे जमीं पे, अर्ध सत्य, मंडी, मिर्च मसाला, ओ माई गॉड, लगान... आदि फिल्मों ने मनोवैज्ञानिक समस्याओं, वर्ग भेद, बंधुआमजदूरी, शोषण-शोषित, भ्रष्टाचार, धर्मांधता, किसानों आदि की ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डालते रहे हैं। भारत की गंगा-जमुना की सांस्कृतिक विरासत को बरकरार रखते हुए एक समतामूलक, शोषणमुक्त सुन्दर समाज का निर्माण कर अखण्ड भारत के लिए अच्छा गणमान्य नागरिक तैयार करने का काम रचनात्मक रंगमंच अपने रंगकर्म द्वारा एवं सार्थक रिनेमा भी करते रहे हैं। शायद इन्हीं सारे गुणों चलते चीन, जापान, कम्बोडिया, सुमात्रा-जावा,.. .. आदि देशों में नाटक रंगमंच की विभिन्न विधाओं द्वारा जैसे-कठपुतली नाटक छाया नाटक... आदि द्वारा शिक्षा एवं चरित्र निर्माण का माध्यम बने हुए हैं। महात्मा गांधी को 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक ने इतना प्रभावित किया कि उनकी दुनिया ही बदल दी और मोहनदास से महात्मा बन राष्ट्रपिता तक की यात्रा तय की ठीक उसी तरह शेक्यपीयर को नाटक ने ही आम आदमी से विश्व विख्यात नाटककार बना दिया।

साधारण और गरीब नाई परिवार में जन्में भिखरिया को नाटक ने ही भोजपुरी के शेक्सपीयर भिखारी ठाकुर बना दिया। ऐसे सैकड़ों उदाहरण देखने को मिलते हैं।

हमारे देश में साहित्य और इतिहास में परिभाषित करने की क्षमता रखने वाले अनेकों नाटक रहे हैं। मगर अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आज बाजारवाद और उपभोक्तावादी की अंधी दौर में मानव में व्यक्तिवादी सोच, संवेदन विहिनता और वैचारिक शून्यता की स्थिति पैदा कर दी है। हमारी सांस्कृतिक विरासत को समाप्त कर डाला है। इसकी दृष्ठि में सारी चीज एक माल भर है चाहे वह हमारी पूज्यनीया नारी ही क्यों न हो। इसने प्रत्येक क्षेत्र के विधा के कुशल और लब्धप्रतिष्ठित मेधाओं को अपना माल बेचने का ब्राण्ड एम्बेस्ड के रूप में/एजेंट क2 रूप में भारी रकम अदा कर अनुबन्ध कर लिया है जो दुखद है।

सामूहिक सोच, सामाजिक सरोकार वैज्ञानिक एवं रचनात्मक विचार तथा गंगा-जमुनी की सांस्कृतिक विरासत और भाईचारे को बनाये रखने में कारगर रंगकर्म चंद मुट्ठी भर पूंजीपतियों द्वारा अपने मुनाफे के लिए बनाये गये बाजार की चपेट में है। हम अपने खासकर देश भक्त युवापीढ़ी से इसे बचाने की अपील करते हैं। क्योंकि किसी देश की पहचान वहां की कला-संस्कृति की सोंधी महक से होती है..।

(रचनाकार प्रसिद्ध रंगकर्मी व इप्टा, बिहार के सचिव हैं)

***

बदलाव की आहट

पंख कटे हैं मेरे फिर भी, मै उड़ना सीख लूंगी। मुश्किलों की आँधियों से, मैं लड़ना सीख लूंगी!!
सम्मान से जीना है मुझे, नहीं कमतर आंको। हौसलों में ताकत है बहुत, मै जीना सीख लूंगी !!

अर्जना राज

उपर्युक्त पंक्तियाँ महिलाओं के व्यक्तित्व में छुपी समान सामाजिक स्वीकार्य की छटपटाहट और उनके हौसलों को बयान करती हैं।

बावजूद इसके कि ये वही देश और वही समाज है जहां स्त्रियों की पूजा की जाती है और एक समय था जब यहाँ महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष माना जाता था और उनको समान अधिकार प्राप्त थे परन्तु कालान्तर में एक नयी तरह की व्यवस्था का निर्धारण हुआ जहा महिलाओं के कर्तव्य व अधिकार सीमाबद्ध कर दिए गए और धर्म को आधार बताकर पूरी तरह से महिलाओं को संकीर्ण दायरों में कैद कर दिया गया, महिलाओं को समाज में दोयम दर्जे का माना गया जिसके परिणामस्वरूप पैदा होने के साथ ही बच्चियों का भविष्य निर्धारण किया जाने लगा . उनका रहन-सहन व पालन-पोषण एक संकीर्ण सोच के दायरे में ही होता था , बचपन से ही उनपर कई तरह के दबाव व संस्कारों-परम्पराओं का बोझ डाल दिया जाता था जिसके फलस्वरूप उनका खुद का व्यक्तित्व धीरे-धीरे कहीं खो जाता था,उनका स्व स्वतः ही खो जाता था जिसका पता खुद उनको भी नहीं लगता था और यदि लग भी जाए तो उसका विरोध संभव नहीं था। उनकी सोच को ही बंदी बना लिया गया था और पराश्रित जीवन और उसकी जटिलताओं को महिलाओं की नियति मान लिया गया था। सबसे दुखद तो ये कि खुद महिलाओं ने भी इसे इसी तरह बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लिया। इसे ही अपनी नियति मान लिया।

परन्तु जैसा कि अक्सर होता है तमाम सहमतियों के बीच भी एक असहमति अपना असर छोड़ती है... वैसे ही वक्त बीतने के साथ-साथ महिलाओं में से ही कहीं-कहीं असहमति और विरोध के स्वर भी कमोबेश सुनाई पड़ने शुरू हुए। सबसे सुखद और सकारात्मक पहलू तो ये रहा कि पुरुषों के बीच में से भी कुछ खुले विचारों वाले व प्रबुद्ध पुरुषों ने आगे बढकर इसका खुला समर्थन किया व बढ़ावा दिया साथ ही महिलाओं का उनके अधिकारों के प्रति मार्गदर्शन भी किया। यद्यपि यह राह आसान नहीं रही। अनगिनत विरोधों, संघर्षों व लांछनों प्रताड़नाओं का एक लंबा अनवरत सिलसिला चला और आज भी चल रहा है परन्तु ये संतुष्टिप्रद है कि इससे धीरे-धीरे महिलाओं की राह अब कुछ आसान व सुविधाजनक होने लगी है। बदलाव शहरों में ही नहीं बल्कि गाँवों कस्बों में भी नजर आने लगा है। यहाँ भी संपत पाल व गौरा देवी जन्मती हैं और समाज को नयी राह दिखाती हैं ...गौरतलब है कि ये दोनों ही लगभग निरक्षर हैं लेकिन इनमे हौसलों व सही जज्बे की कोई कमी नहीं इसीलिए समाज इन्हें गर्व व सम्मान के साथ देखता है।

सामाजिक कट्टरता व संकुचित सोच धीरे-धीरे दरक रही है और उसकी जगह महिलाओं के लिए सामाज में एक खुली व सम्मानजनक सोच का पदार्पण हो रहा है परन्तु ये अभी सिर्फ आगाज है जिसे हमें समझना होगा और उसके अनुसार आगे बढ़ना भी होगा... कट्टरपंथी ताकतें अपना अधिकार छोड़ने को तैयार नहीं थीं और न हैं पर अब आधुनिकता भी इससे पीछे न हटने को कटिबद्ध है क्योंकि सोई हुयी सोच को जगाया तो जा सकता है पर जागे हुए को सुलाना अक्सर संभव नहीं होता... यद्यपि ये लड़ाई अब भी चल रही है परन्तु अब कम से कम इतनी राहत महसूस की जा सकती है कि एक आम व्यक्ति भी सच का सामना करने तैयार है ...वो भी अपनी माँ ,बहनों,बेटियों, पत्नियों को समान भाव व समान अवसर का अधिकारी मानने लगा है... हमारे देश का कानून भी इसमें बहुत हद तक सहायक सिद्ध हुआ..., ये महिलाओं के हित की बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है और इसी उपलब्धि को इसी प्रगति को सीढ़ी बनाकर महिलायें नित नयी सफलता की उंचाइयां अर्जित कर रही हैं। आज हर क्षेत्र में महिलाओं ने विपरीत परिस्थियों से मुकाबला करते हुए नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। आज समाज की सोच में भी क्रमशः बदलाव आ रहा है जो एक अच्छी खबर है। महिलाओं को निरंतर समग्र चेतना और आत्मविश्वास के साथ अपना लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ना होगा और बढ़ते ही रहना होगा।

बस एक सच को सही तरीके से समझने की जरूरत है कि हमें सिर्फ उन्हीं नियमों व कायदों का विरोध करना चाहिए जो नकारात्मक हैं और जड़ों तक सड़ चुके हैं न कि उनका जो हमारे भारतीय समाज व संस्कृति का गौरवशाली हिस्सा रहे हैं और अब भी हैं। जैसे कि भारतीय परिवारिक व्यवस्था को पूरे विश्व में सबसे प्राचीन व सफलतम व्यवस्थाओं में शुमार किया जाता है। हमारे पूरे समाज का आधार यहीं निर्मित व विकसित होता है क्योंकि परिवार ही वो इकाई होती है जो किसी भी देश या समाज का निर्धारण व संचालन करने के लिए व्यक्ति व सोच को तैयार करती है परिष्कृत करती है और परिवार की धुरी महिला ही होती है। आधुनिकता के बहाव में हमें अंधानुकरण न करके खुली दृष्टि व समझ से राह चुननी होगी... हमें अपनी जड़ों से अलग नहीं होना है बल्कि इतनी क्षमता व कुशलता अर्जित करनी है कि हमारी जड़ें निरंतर मजबूत होती रहें और बजाय इसके कि हम दूसरों की अंधी नकल करें दुसरे ही हमारी सभ्यता और संस्कृति में घुल मिल जाएँ क्योंकि यही हमारी परम्परा और उसका गौरव है। महिलाओं की बहुत बड़ी जिम्मेदारी और उनका उत्तरदायित्व है ये कि वो पुरानी सकारात्मक परम्पराओं के साथ ही आधुनिक सकारात्मक सोच को और उसके निर्धारण को मान्यता दें व अपनी कर्मठता व कुशलता से खुद को साबित करें। निसंदेह यहाँ पुरुषों को भी एक बड़ी भूमिका अदा करनी पड़ेगी... उन्हें महिलाओं के साथ-उनके लिए तैयार होना होगा और उन्होंने ये किया है। महिलाओं के पतन के लिए जितने जिम्मेदार वो थे उनके उत्थान का भी उतना श्रेय उनको जाता है और आगे भी दोनों की सहभागिता आवश्यक है क्योंकि गांधीजी ने अनेक अवसरों पर कहा है कि जब एक महिला का विकास होगा तभी एक परिवार, समाज व पूरी पीढ़ी का विकास होगा। प्रख्यात पत्रकार नलिनी सिंह ने एक बार कहा था कि आधुनिकता व्यक्ति की सोच में होती है... हमें भी अपनी सोच को सही दिशा व दशा में तराशकर आगे बढ़ना होगा।

अंत में यह कहना जरूरी है कि परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है परन्तु परिवर्तन अगर सकारात्मक है तभी उसे सामाजिक मान्यता ,स्वीकार्य व महत्त्व प्राप्त होता है। हम महिलाएं भी इसका एक सुंदर उदाहरण हैं जो संघर्षों से जूझकर किसी रत्न सी पार उतरी हैं जिसकी चमक भी हमें ही कायम रखनी होगी .!

यहाँ ये पंक्तियाँ वाजिब हो जाती हैं...

उड़ो इस कदर कि आसमां कम पड़ जाए
झुको इतना कि समन्दर से ढूंढ लो मोती भी
जिन्दगी हंसकर करती है अब स्वागत तुम्हारा
लगो कुछ यूँ कि नीची लगे हिमालय की चोटी भी !!

***

मातृ देवो भवः

-ओमप्रकाश अमृतांशु

माई के ममता के कर्ज उतारे खातिर सउंसे जिनिगी भी कम पड़ जाला। माई के दूध में जवन शक्ति होखेला, माई के आँचर में जवन छाँह होखेला ओकर वर्णन कइल असंभव बा। माई के रोवां-रोवां आपन संतान खातिर न्योछावर होखेला। माई हमेशा माई होखेली, जननी होखेली। माई शब्द में संसार के सारा प्यार होखेला। उ प्यार-दुलार जेकरा खातिर संसार के हर प्राणी भूखा रहेला। तेयाग, क्षमा आ निःस्वार्थ सेवा के देवी होखेली माई।

'मातृ देवो भवः' एह धरती के सबसे बड़हन देवी होखेली। माई के गरिमा पृथ्वी से भी भारी होखेला। माई के बगैर संसार अधूरा बा। माई उ होखेली जवन अपन बच्चा के नौ महिना गरभ में रखेली, भारी पिड़ा सहके जन्म देवेली, पालन-पोषण करेली। खुद गीला कपड़ा पे सुत के बच्चा के सुखल कपड़ा पे सुतावेली। रात में लोरी सुनावेली। अपने भुखा रहके बच्चा के पेट भर खाना खिलावेली। जवना घड़ी बच्चा के जन्म होखेला, ओहि घड़ी एगो माई के भी जन्म होखेला। माई आ बच्चा के जीनिगी एगो नया सपफर शुरू करेला। कवनो औलाद खातिर माई शब्द भगवान से बढ़ के होखेला। माई शब्द में संसार बसेला। दोसरा ओर संतान के खुशी आ ओकर सुख माई खातिर ओकर संसार होखेला। माई एगो भावनात्मक संबंध के नाम हउए। तेयाग-तपस्या के मूरत, माई बलिदान होली। माई धरोहर, माई फर्ज, माई सहनशीलता आ उदारता के देवी हई। सुखद एहसास के नाम हउए माई। दुःख में मिले वाला सुख के छाँव होली माई। रोअत संतान के मुस्कान होखेली माई।

माई के ममता के आनंद पावे खातिर भगवान लोग भी तरसेला। त्रेता युग में भगवान विष्णु माता कौशल्या के गरभ में श्री राम के रूप में जन्म लिहलें। देवों के देव महादेव हनुमान बनके माता अंजनी के गरभ में जन्म लिहलन। द्वापर में श्री विष्णु दु-दुगो माई के गोद में खेललन। कृष्ण के रूप में देवकी के गरभ से जन्म लिहलन आ यशोदा के गोदी में खेललन-कुदलन ममता आ स्नेह पवलन। माई शब्द के परिभाषित करे खातिर पूरे ब्रह्माण्ड में कवनो शब्द नइखे। माई के गुरू भी कहल गइल बा। धर्मशास्त्र में माई के सर्वोच्च स्थान दिहल गइल बा। महाभारत काल में त संतान के माई के नाम से हीं जानल जात रहे- कुंती पुत्र, गंगा पुत्र आदि।

मातृ दिवस यानी 'मदर्स डे' शुरूआत अमेरिका से भइल। कवयित्री जूलिया वार्ड 1870 में 10 मई के माई के नाम से समर्पित ढेर-सारा कविता लिखली। तबसे माई के सम्मान में मनावल जाये लागल। अमेरिका के बेयार धीरे-धीरे पूरे विश्व में बहे लागल। भारत में कुछ साल पहिले लोग जानते ना रहे कि माई के सम्मान खातिर भी कवनो दिन-तारिख होखेला। अमेरिका में एह दिन के उत्सव के रूप में मनावल जाला, साथ में एक दिन के छुट्टी भी दिहल जाला। अब त भारत में भी मातृ दिवस के महत्व बढ़ रहल बा।

माई खतिर हम अतने कहल चाहत बानी कि-

माई से बढ़ के कोई गुरू ना, ना कवनो भगवान।
मई देवी, माई दूर्गा, माई हई सबसे महान।
प्यार- दुलार फटकारेली, पल-पल देवेली जान।
आँचरा से बेनिया डोलावेली, लुटावेली ममता के खान।
(मातृ दिवस पे विशेष)

***

बिकाऊ त सभे हऽ

बिकाऊ त सभे ह, लागल दाम नईखे ।
कलाकार त हमहूं हंई, बाकिर नाम नईखे।।

नशा त हमरो होला, बाकिर हाथ में जाम नईखे।
कुकुर इंहवों बिटोरा सकेलन, बाकिर लगे चाम नईखे।।
बिकाऊ त सभे ह, लागल दाम नईखे...

पूजा रोज होत बा, मंदिर/मस्जिद में,
बाकिर कहीं रहीम-राम नईखे।।
पंडित-मुल्ला सभे बा, बाकिर हजाम नईखे।।
बिकाऊ त सभे ह, लागल दाम नईखे...

काम कुछो ना, बाकिर आराम नईखे।
सुतल बा सभे, बाकिर केहु बेराम नईखे।।
बिकाऊ त सभे ह, लागल दाम नईखे...

माघो में छुटे पसेना, बाकिर घाम नईखे।
दाबल माल लगहीं बा, बाकिर खुलेआम नईखे।।
बिकाऊ त सभे ह, लागल दाम नईखे।
कलाकार त हमु हंई, बाकिर नाम नईखे।।

राजेश प्रसाद
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय लहलादपुर, सारण

जवानी पाकल मोछिया पे आइल कुँवर के...

-ओमप्रकाश अमृतांशु

अंग्रेज अफसर टेलर के अनुसार-बाबू कुँवर सिंह स्थानीय आ मूल निवासी लोगन के साथ-साथ अंग्रेजन में भी लोकप्रिय रहन। जगदीशपुर के समृद्ध परिवार में जन्म भइल रहे। इतिहास के किताब के कवनो पन्ना में अइसन कवनो उदाहरण ना मिलल कि 80 बरिस के एगो वृद्ध योद्धा के तलवार दुश्मन के पानी पिअवले होई।

कुँवर सिंह 1857 के महासंग्राम मे महान योद्धा हीं ना, बलुक उ एह संग्राम के एगो वयोवृद्ध योद्धा भी रहन। कुँवर सिंह के जन्म आरा के नजदिक जगदीशपुर सियासत में 1777 में भइल रहे। मुगल सम्राट शाहजहां के काल में ओह सियासत के मालिक के राजा के उपाधि मिलल रहे। कुँवर सिंह के पिता के नाम साहेबजादा सिंह आ माई के नाम पंचरत्न कुंवरी देवी रहे। कुँवर सिंह के सियासत डलहौजी के हड़पनीति के शिकार बन गइल रहे।

10 मई 1857 से महासंग्राम के शुरूआत के थोड़े दिन बाद हीं दिल्ली पे अंग्रेजन के फिर से अधिकार हो गइल। अवध आ पूरे बिहार अंग्रेजन के जुलुम से धधके लागल। दानापुर के क्रांतिकारी सेना के जगदीशपुर पहुँचते 80बरिस के स्वतंत्रता प्रेमी योद्धा कुँवर सिंह शस्त्र उठाके एह सेना के स्वागत कइलन आ सेना के नेतृत्व संभाल लेहलन। कुँवर सिंह के नेतृत्व में एह सेना के सबसे पहिला हमला आरा में भइल। क्रांतिकारी सेना आरा के अंग्रेज खजाना पे कब्जा कर लिहलस। जेल से केतना कैदी के रिहा कइल गइल। अंग्रेज दफतरन के ढाह के किला के घेर लिहल गइल। किला के अन्दर सिख आ अंग्रेजी सिपाही लोग घेरा गइल। तीन दिन तकले किला के घेराबंदी के साथ दानापुर से किला के रक्षा करे खातिर कैप्टन डनवर आ उनकर चार सौ सिपाही साथे लोहा लिआइल। डनवर युद्ध में मारल गइल। बचल-खुचल सिपाही दानापुर वापस भाग गइलें। किला आ आरा नगर पे कुँवर सिंह के क्रांतिकारी सेना के कब्जा हो गइल, लेकिन थोड़े दिन बाद मेजर आयर एगो बड़हन सेना लेके आरा पे चढ़ गइल। आरा के किला पे अंग्रेजन के फिर से कब्जा हो गइल।

कुँवर सिंह आपन सेना साथे जगदीशपुर लवट गइलें। मेजर आयर उनकर पीछा कइलस आ जगदीशपुर के किला हड़प लिहलस। कुँवर सिंह के आपन 122 सैनिक आ लड़िका-बच्चन आ मेहरारूअन के साथे जगदीशपुर छोड़े के आजमगढ़ जाये के पड़ल। 28 मार्च 1858 के आजमगढ़ से कुछ दूर कर्नल डेम्स आ कुँवर सिंह में युद्ध भइल। कुँवर सिंह के फिर से पताका फहरे लागल।

कर्नल डेम्स भागके आजमगढ़ के किला में जान बवचलस। कुँवर सिंह बनारस आ गइलें। बनारस में विद्रोही सिपहियन के साथ मिलल। 6अप्रैल के दिन मार्क्कर के सेना कुँवर सिंह के रास्ता रोक दिहलस। युद्ध में मार्क्कर पराजित होके आजमगढ़ के ओर भागल। कुँवर सिंह पिछा कइलन आ किला में पनाह लेत मार्क्कर के घेरा बंदी कइलन। सूचना मिलते पश्चिम से कमांडर लेबर्ड के सेना आजमगढ़ के ओर कूच कइलस। कुँवर सिंह आजमगढ़ छोड़के गाजीपुर आ फिर आपन पैतृक रियासत जगदीशपुर जाये के ठान लिहलें। गंगा नदी पार करे खातिर कुँवर सिंह के डगलस से लोहा लेवे के पड़ल। 22 अप्रैल के एह युद्ध में कुँवर सिंह के बाँह में गोली लाग गइल। आपन बेजान भइल बाँह के अपने तलवार से काट के गंगा में प्रवाह कर देहलन। घाव पे कपड़ा लपेट के गंगा पार करे में सफल भइलन। एही दिन कप्तान ली ग्रेण्ड पराजित होके मारल गइल। 23 अप्रैल 1858 के स्वतंत्रता के घोषणा कुँवर सिंह कइलन। पूरे जगदीशपुर में विजयी पताका फहराये लागल।

इतिहासकार लोग मनले बा कि कुँवर सिंह के सेना में मुसलमान लोगन के अधिक संख्या रहे। संत बैसुरिया बाबा से उनका देशभक्ति के प्रेरणा मिलल। आरा जिला स्कूल के निमार्ण करवइलन। गरीब उनकरा दुआर से कबहीं खाली ना लवटल। भोजपुरी लोक गीतन में उनकर गाथा तेगवा बहादुर के रूप में रचल गइल बा।

26 अप्रैल 1858 के अमर सेनानी अमरत्व के प्राप्त कइलन। ब्रिटिश इतिहासकार सर होम्स के कलम से-फिरंगी लोग बहुत सौभाग्य शाली रहे कि क्रांति के समय कुँवर सिंह 80 साल के वृद्ध राजपूत अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ आन से लड़ल, शान से मरल। 1857 में कुँवर सिंह जवान रहतन त, एतना दिन भारत के गुलामी के मुंह ना देखेके के पड़ित।

आज कुँवर सिंह के किला आपन बेहाली पे पल-पल रो रहल बा। किला के बूढ़ आ बेजान देवाल सरकारी संरक्षण मिले के इंतजार करत बा। ढहल-ढिमलाइल किला आज भी कुँवर सिंह के वीरता के गाथा गावेला। सुनेवाला के कान होखे के चाहीं। करिब बीस साल पहिले जगदीशपुर में 26 अप्रैल के दिने मेला लागत रहे। दूर-दूर से लोग किला देखे खातिर आवत रहे। दुःख के बात बा कि सरकार कुँवर सिंह के जन्म स्थली खातिर कवनो ठोस काम ना कइलस। आज तकले किला के मरम्मत ना भइल। कुँवर सिंह के याद खाली इतिहास के कागज के करिया स्याही में बा।

***

A.R. Films
&
Entertainment India
Arif Ansari
(Producer)
नये गायक कलाकार फिल्म व एलबम
बनवाने के लिए सम्पर्क करें
Regd. Off. : F-6 H.No. 49, Sultanpuri, New Delhi
E-mail : arfilms786@gmail.com Mob. : 09871529901, 09161426366

M S INSTITUTE &
COUNSELING CENTER
(A Name of Confidence)
1 वर्ष में Graduatin* करें
UGC. AICTE, DEC & GOVT. APPROVED
COURSES
B.A., B.Com, B.Sc.,
BBA, BCA, B.Tech.,
LLB, LLM, M.A.,
M.Com, M.Sc., MBA,
MCA, M.Tech, M.Phill
Ph.D., JBT, B.Ed., &
Diploma, ETC.
10वीं, 12वीं, CBSE/OPEN से करें
C-83, PREM VIHAR, NANGLI DAIRY, NAJAFGARH,
NEW DELHI-43, 9540908200, 8010603484

श्री लक्ष्मी आर्ट
डिजिटल स्टूडियो
सुंदर व आकर्षक
फोटो के लिए
सम्पर्क करें।
प्रो. सुरेश पंडितः 09470656697
मिडिल स्कूल मोड़ से उत्तर
जनता बाजार सारण (बिहार)-841224
फोन : 06155-261456, 09931740532
ई-मेल : shrilaxmiart7@gmail.com

कहां गइल भोजपुरी के लिपि 'कैथी'

प्रिंस रितुराज

कैथी एगो ऐतिहासिक लिपि ह। जेकरा के मध्यकालीन भारत में प्रमुख रूप से उत्तर-पूर्व आ उत्तर भारत में काफी बृहत रूप से प्रयोग कईल जात रहे। विकिपीडिया के अनुसार खासकर आज के उत्तर प्रदेश आ बिहार के क्षेत्रन में इ लिपि में वैधानिक एवं प्रशासनिक काम करे जाये के प्रमाण मिलल बा। एकरा के भोजपुरी में 'कयथी' या 'कायस्थी', के नांव से जानल जाला। पूर्ववर्ती उत्तर-पश्चिम प्रांत, मिथिला, बंगाल, उड़ीसा आ अवध में एकर प्रयोग खासकर न्यायिक, प्रशासनिक अऊर निजी आँकड़न के संग्रहण में कईल जात रहे। 'कैथी' के उत्पत्ति 'कायस्थ' शब्द से भईल जवन कि उत्तर भारत के एगो सामाजिक समूह ह। इ लिपि के उपयोग सबसे पाहिले व्यपार सम्बंधित आकड़ा के सम्हाल के रखे खातिर कईल गईल रहे। कायस्थ समुदाय के पुरान रजवाड़न आ ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकन से काफी नजदीक वाला नाता रहे। इ उन कर इहाँ विभिन्न प्रकार के आँकड़न क प्रबंधन आ भंडारण करे के खातिर नियुक्त कईल जात रहे लोग। कायथन द्वारा प्रयुक्त इ लिपि के बाद में कैथी के नाव से जानल जाये लागल। कईथी एगो पुरान लिपि ह जेकर प्रयोग कम से कम 16वीं सदी मे धड़ल्ले से होत रहे। मुगल सल्तनत के दउरान एकर प्रयोग बहुत व्यापक रहे। 1880 के दशक में ब्रिटिश राज के दउरान एकर पुरान बिहार के न्यायलयन में आधिकारिक भासा के दर्जा दिहल गईल रहे। एकरा के खगड़िया जिले के न्यायालय में वैधानिक लिपि के दर्जा दिहल गईल रहे। अजहूं बिहार समेत देश के उत्तर पूर्वी राज्यन में इ लिपि में लिखल हजारन अभिलेख बा। समस्या तब होला जब इ अभिलेखन से संबंधित कानूनी अड़चन आवेला। दैनिक जागरण के पटना संस्करण में 9 सितंबर 2009 के पेज बीस पर बक्सर से छपल कंचन किशोर क एगो खबर के संदर्भ लिहल जाव त इ लिपि के जानकार अब ओह जिले में खाली दुगो लोग बचल बाड़े। दुनो लोग बहुत उमिर वाला बाड़े। ऐसे में निकट भविष्य में इ लिपि के जाने वाला शायद केहू ना बाच पाई अऊर तब इ लिपि में लिखल भू-अभिलेखन के अनुवाद आज के प्रचलित लिपियन में कईल केतना मुस्किल होई एकर सहज अंदाजा लगावल जा सकेला। अईसे में जरूरत बा इ लिपि क संरक्षण के। सबसे पाहिले जरुरी इ बा की खास करके झारखण्ड, यूपी, बिहार के लोगन क इ लिपि के लेके जागे के पड़ी। जईसे बंगला, पंजाबी, गुजराती, चाहे दक्षिण भारत के द्रविड़ लिपि अलग-अलग बा, ओही तरे भोजपुरी या अर्ध भोजपुरी भासा लिखे खातिर कईथी लिपि के उपयोग करे के होई। अफसोस के बात इ बा की एतना बड़ संख्या में भोजपुरी भासा भासी क्षेत्र के भारत के अच्छा राजनीति पद पर रहे लो बाकिर एकरा बावजूदो भोजपुरी (कैथी) के ओकर सम्मान ना मिल पावल।

***

विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य पं. रतन वशिष्ठ जी महाराज के पत्रिका भेंट करत राज कुमार 'अनुरागी'

कबीर के काव्यगत विशेषता के विश्लेषण

अभिषेक भोजपुरिया

कबीर दास जी तत्व के बात कहे वाला कवि मानल जाइले। कबीर के समय एगो लमहर संघर्ष आ परिवर्तन के समय रहे। कबीर निरगुन निराकार के उपासक रहीं। उहाँ के वाणी में सब आव भाव उपलब्ण रहे, जवन निरगुन मार्गीय भक्ति खातिर जरूरी ह। कबीर दास जी अपना विषय में बहुत कम लिखले बानी। उहाँ के काव्य में जहाँ तहाँ कुछ कथन मिल जाला, जवना के आधार पर हमनी के उहाँ के परिवार, उहाँ के गुरू, उहाँ के जन्म स्थान आ मउवत का बारे में संकेत मिल जाला। कबीर दास जी अनेक बिन्दुअन के अपना काव्य में उरेहले बानीं।

कबीर काव्य के भाव पक्ष

कबीर अपना अनुभूति के शोभा जाहिर कइनीं एही से ओह में कलात्मकता के अभाव देखाई देत बा। कबीर दास जी के काव्य के मुख्य विषय खाली भक्ति बा, जवन खाली अनुभूतित्रम्य बा। कबीर आत्मा आ प्रमात्मा सदृश्य अगोचर पदार्थन के प्रतीक आ उपयुक्त उपमानन के जरिए गोचर रूप प्रस्तुत कइले बानीं।

दुलहिनि गावहूँ मंगलचार,
आजु घर आए हो राजा राम भरतार।
तन रति करूँ मैं मन रति करहूँ पंचतत बराती,
राम देव मोही व्याहन आये में जोबन मैं भाती।

कबीर के भाव पक्ष अपार बा। उनकर हर पंक्ति अनुभूति से जुड़ल बा। तथ्य के हृदय ग्राही रूप देवे के क्षमता शायदे कवनो कवि में होई। साँचो–

नैना अन्तर आव तू नैन झापि तोहि लेउँ।
ना मैं देखुँ और को ना तोही देखन देउँ।।

कबीर दास जी अपना काव्य में दार्शनिक विचार भी दहले बानीं, जवन काव्य के विशषता ह।

दार्शनिक विचार

कबीर दास जी कवनो शिक्षित ना रहीं। उहाँ के सत्संग के जरिए दार्शनिक सिद्धान्त सम्बंधि ज्ञान पवले रहीं। कबीर दास जी के धरना रहे कि ग्रंथन के जरिए अक्षरे ज्ञान हो पावेला, वास्तविक ज्ञान के प्राप्ति असंभव बा। कबीर के कथानुसार ज्ञानी उहे ह जे अपने आप विचार करे। कबीर दास जी दार्शनिक विचारण के समझो खातिर ब्रह्मए जीन, मोक्ष, आदि के बतवले बानीं।

कबीर दास जी ब्रह्म के ज्ञान शास्त्रध्यान के

जरिए ना बलूक धीरे-धीरे चिन्तन के जरए पवले रहीं। कबीर ब्रह्म खातिर राम, शंकर, ब्रह्मा आदि कईगो नाम के प्रयोग कइले बानीं। कबीर के काव्य में कहीं निरूपाधि नरगुन ब्रह्म का सत्ता का संकेत मिलत बा-

''पंडित मिथ्या करहूँ विचारा।
न वह सृष्टि न सिरजन हारा॥''
''जोति सरूप काल नहिं उहँवा,
वचन न आदि सरीरा।
भूल अभूल पवन नाहिं पावक,
रवि शशि धरनी न नीरा॥''

कबीर दास जी कई जगह पर निरगुन ब्रह्म (राम) के गुण के आरोप कइले बानीं-

''राम गुन न्यारो न्यारो।
अबुझ लोग कहाँ तक बूझैए
बुझनहार विचारो॥''

कबीर जी के ब्रह्म निदांत निरगुन नष्क्रिय ब्रह्म ना हईं, ई उ कर्ता हवन आ संसार के स्थिति आ प्रलय ओही के काम ह।

प्रेम भावना

कबीर दास जी के काव्य में प्रेम-भाव के चर्चा कइल गइल बा। कबीर जी के प्रेम 'नारदीय प्रेम' ह, जवना में प्रेम आ प्रेम करे वालादूनू डूब जाला। डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानीं कि 'कबीर दास के प्रेम के आदर्श सति आ शुरमा ह। कबीर के प्रेम भगवान के नाम पर मरे के ना, बलूक जिवित रखे के प्रेरणा देवेला।'

साधु सति और शुरमा,
इन पटतर कोउ नाहिं।
अगम पंथ कौ पग धरै,
डिगे तो कहाँ समाहिं॥
साधु सति और शुरमाा,
कबहूँ न फेरै पीठ।
तीनो निकति जो बहुरै,
ताकि मूँह मति दिठ॥

कबीर दास जी प्रेम पंथ के विघ्नन आ साधनन के भी वर्णण कइले बानीं। प्रेम-पंथ के साधना के अन्तर्गत कबीर सतगुरू, साधुजन, कुल-मर्यादा, प्रभु के गुणगान आ आत्मा समर्पन के बार-बार चर्चा कइले बानीं। कबीर जी के मतानुसार प्रेम अभेद बुद्ध के जनम ह-

''प्रेम हरि को रूप है, त्यों हरि प्रेम स्वरूप।
एक ही ह्वै द्वै में बसै, ज्यों सुरज अस धूप॥''

प्रेम के फल प्रेम ह, प्रेम के लक्ष्य प्रीय मिलन ह आ प्रीय-मिलन के लक्ष्य प्रेम ह। जइसे-

''पूरे सूँ परचा भया, सब दूःख भेल्या दूरी।
निर्मल किन्ही आत्मा, ताकै सवा हजूरी॥
पिंजर प्रेम प्रकासिया, जाग्य जोग अनंत।
संसा खूटा सुख भया, मिल्या पियारा कंत॥''

हरि प्रेम के बिना मानव जीवन बेकार बा-

''जिहि धरि प्रीति न प्रेम रस,
पुनि रसना नही राम।
ते नर इस संसार में,
उपजि भये बेकाम॥''

विरह भावना

कबीर विरह के अनुभूतियन के जरिए अपना प्रेम के आदर्श व्यक्त कइले बानी। ''विरह कौ अंग'' अइसन अभिव्यक्त से भरल बा। कबीर के वाणी मे जवन विरह रस हमनी के मिल बा ओकर रंगोपकरण त जरूर भारतीय बा चाहें ओकर मात्रा आ प्रकार का करते मिश्रण भले सुफी ढंग के होखे। गुरू के शब्द रूपी बाण से विरह चिनगारी लउकत बा-

''जबहूँ मारया खिचकर, तब मैं पाई जाणि।
लगी चोट मरम्य की, गई कलेजा छाणि॥''

कबीर दास जी विरह के आदर्श चकवा-चकवी के मनले बानीं, जे प्रियतम के वियोग में रात भर चिल्लात रहेले। ''मैं राम की बहुरिया'' में उनुकर आरोप भावना बा। एह 'आरोप' भावना के जरिए कबीर दास जी जवन विरह के वर्णन कइले बानीं, एमें आसक्ति आ तेव्रता दूनु बा-

''बहुत दिनन की जोवति,
बाट तुम्हारी राम।
जीव तरसै तुझ मिलन कूँ,
माने नाहीं विश्राम॥''

विरहिनि के ई उत्कण्ठा देखले बनत बा-
विरहिनि रूठै भा पड़ै, दरसन कारणि राम।
मूँवा पीछे देहुगे सो, दरसन किहिं काम॥''

कबीर के विरहस शक्ति में विरह के अनेकन दशा के अपने आप समावेश हो गइल बा। विरहिनि के चिन्ता उद्वेग आ व्याधि दशा के निमन समन्वय बा-

'' बालम आवो हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया गेह रे॥ ''
अन्न न भावै, नींद न आवै,
गह बन धरै न धीर रे।
कामीनि को है बालम प्यारा,
ज्यों प्यासे को नीर रे॥
है कोई ऐसा पर उपकारी,
पिव सो कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भयो है,
बिन देखे जिव जाय रे॥

कबीर दास जी अविभाज्य आ अविकत प्रेम के समर्थक हईं, जे व्यापक आ असीम बा। एह प्रेम के सिद्धि कबीर के विरह क्षेत्र में होत बा-

''वासुरी सुख ना रैणि सुख,
ना सुख सुपिनै मांह।
कबीर बिछुट्टया राम सूँ,
ना सुख धूपन ना छांह॥''

नित्य दर्शन के कामना कबीर दास ज के विरह से ही प्राप्त होत बा-

नैना अंतरि आचरूँ,
निस दिन निरसौ तोहि।
कब हरि दर्शन देहुगे,
सो दिन आवै मोहि॥''

विरह के अनुभूति कबीर दास जी खाली माधुर्य भाव से ना कइलीं, बलूक सम्बंध भावना भी उहाँ के प्रस्तुत कइलीं। बेटा बा दास के रूप में अपना के राख के अपना स्थिति के अनुभूति उहां के करत बानीं-

''पूत पियारौ पिता कौ,
गौहनि लागा धाई।
लोभ मिठाई हाथि दे,
आपण गया भूलाई॥''

कबीर दास जी अपना प्रभू के वियोग में हरदम दूःखी बानीं-

''सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरू रोवै॥''

भक्ति के स्वरूप

भक्ति के स्वरूप पर भी विचार कइल बा जवन कबीर काव्य के विशेषता ह। हमनी के कर्तव्य पालन आ प्रेम के क्षेत्र जेतने विशाल होई, हमनी के भक्ति भावना ओतने उदात्ता बा उच्च कोटी के होई। तुलसी आ कबीर सदृश भक्तन के भक्ति भावना के प्रधानता बा आ ज्ञान ओकर जरूरी अंग। तुलसिए अइसन कबीर भी बहुत पदन में ज्ञान आ भक्ति के समान्तर वर्णन कइले बाड़न। कबीर भी भक्ति भावना खातिर चित के सरलता पर जोर दिहलन। सरलता भक्ति के पहिलका शर्त ह जइसे- मन के सरलता, वचन के सरलता आ कर्म के सरलता।

जब मन छाड़ै कुटिलाई।
तब आई मिलै राम राई॥

कबीर दास जीवन के लक्ष्य राम के भक्ति मानत बाड़न।

''जो नाहि राम भगति अन साधो।
से जन मन काहे न भूवौ अपराणी॥''

कबीर के भक्ति पद्धति निरगुनोपासना के बा। यानी कबीर ज्ञानी भक्त बाड़न। कबीर के भक्ति में

निरगुन ब्रह्म आ सगुन सोपाधी ब्रह्म दूनो के चर्चा मिलेला।। कबीर के राम धनुर्धर सकार राम ना हो के ब्रह्म के पर्याय बाड़न–

''दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।।''

निरगुन ब्रह्म जिज्ञासा खातिर कबीर सगुन ब्रह्म के चिन्तने ना कइलें, बलुक उनका वाणी में हमनी का सगुणेपासक भक्तन के भाव बिछल हृदय के पुकार भी सुनई देत बा–

''हौ बलि कब देखौंगी तोहि।
अहनिस आतुर दरसन–कारनि
एसी ब्यापी मोहि।।''

''बहुत दिनन के बिछुरै माधो,
मन नाहि बाँधे धीर।
छेह छता तुम गिलह कृपा करि,
आरती बंत कबीर।।''

आ

''नैना निझर लइया, रहट बैठ दिन जाम।
पपीहा जीव पीव-पीव करौ,
कबरू मिलहगे राम।।''

अन्तर इहे बा कि कबीर के राम (ब्रह्म) खम्भा फार के प्रगट होखे वाला भा पृथ्वी के भार उतारे खातिर जनम लेवे वाला राम ना हो के हृदय के भितर निवास करे वाला राम बाड़न–

''कस्तुरी कुण्डल बसै, मृग ढुढ़ै मन माँहि।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखै नाहिं।।''

व्यक्त रूप अव्यक्त तक पहूँचे के सिढ़ी ह। कबीर भगवन के गुणातित निरंकार भाव के ही भगति के आलंबन मंजुर कइले बाड़न। निरगुन निराकार ब्रह्म उनुकर उपास्य दव बाड़न–

'' पूजा करूँ न निमाज गुजारूँ।
एक निराकार हिरदै नमस्कारूँ।।''

कबीर के राम शुरूआत में सगुण रहस आ उ वैष्णव के राम से अभिन्न रहस। अपना निरगुन भक्ति के कबीर 'भाव-भक्ति' नाम दिहले बाड़न। एह भक्ति के आधार पर निरगुन राम बाड़न।

रहस्यवाद

रहस्यवाद दर्शन आ काव्य दूनु के विषय ह। काव्य दर्शन के रहस्यवाद के प्राण ज्ञान ह, आ उद्गम श्रोत 'मस्तिष्क' ह। काव्य के रहस्यवाद के प्राण भाव ह आ उद्गम श्रोत 'मस्तिष्क' ह।

कबीर के काव्य में साधनात्मक रहस्यवाद के काफी कलापूर्ण प्रतिष्ठा मिलल बा। एह रहस्यवाद के व्यक्त करे खातिर कबीर तथ्यन के व्यक्त करे खातिर बहुत प्रतीकन के प्रयोग कइले बाड़नकबीर साधनात्मक रहस्यवाद में जाके फंसल नइखन, एकरा के सुलझा के एगो झिन्नी चदर के रूप दे दिहलें। कबीर परम्परा से पावल साधनात्मक रहस्यवाद के समन्वित क के युगानूरूप बनवले बाड़न। इनका वर्णन में रत्ति, भक्ति, विस्मय आदि कोमल भावना के सरस अनुभूति होत बा। जइसे–

''अवधु मोरा मन मतिवारा।
उन्मनि चढ़वा गगन रस पीवै,
त्रिभुवन भया उजियारा।
गुड़ करि ग्यान ध्यान करि
महुवा भव भाड़ी कर भारा।।
सुषमन नारी सहज समानी,
पीवै पीवनहारा।''

कबीर जी भवात्मक रहस्यवाद के भी अछुता नइखन छोड़ले। कबीर अपना रहस्यवाद के प्रतिष्ठा आत्मा-परमात्मा के मिलन के रूप में कइले बाड़न। एहमें संयोग आ वियोग दुनु खातिर अवकाश बा। कबीर के रहस्यवाद के संयोग पक्ष काफी स्वाभाविक, सरल आ रसात्मक बा।

नायिका के प्रेम के उत्तम व्यंजना देखे के मिलत बा–

''अब तोहि जाने ना देहूँ राम पियारे।
ज्यों भावै त्यूँ हो हूँ हमारे।।''

वियोगावस्था के भी निमन झांकि देखे के मिलत बा–

''बाल्हा आव हमारे गेह रे,
तुम बिन दुखिया देह रे।
सबको कहै तुम्हारौ नारी,
मोको इहै अंदेश रे।।''

कबीर के वाणी में कई जगह उपनिषद् के रहस्यवादी विचार-धारा लउकत बा। उपनिषद् चित्र सत्ता के निरूपण नेति-नेति कह देवल बा आ विरोधि धर्मात्रय बतावल गइल बा। कबीर कहत बाड़न–

''सन्तो धोंका कांसू करिये।
गुण में निरगुण, निरगुण में गुण बाँट छांड़ी क्यूं बहिये।।''

रहस्यवाद के विश्लेषण करत अचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी लिखले बाड़न कि कबीर दास में जवन रहस्यवाद पावल जात बा उ जादे सुफी प्रभाव के कारण।

धार्मिक आ समाजिक सम्बंधी सुधार

कबीर काव्य के ई विशषता ह जवना में धार्मिक आ समाजिक सुधार के चर्चा कइल गइल बा।

कबीर के समाज में दुगो तत्व लउकल 'अच्छा आ बुरा'। उ अच्छा तत्व के बड़ाई करत बुरा तत्व से बचे के उपदेस देस। उनकर प्रेरणा कवनो आदमी के सुधारे खातिर ना, बलूक समाज के पतन से बचावे खातिर बा। उनका विचार से 'अहंकार' से समाज विश्रृंखल होला। एही में उ लोग के समझावत कहत बाड़न–

''दुर्बल को ना सताइये
जाकि मोटी हाय।
भूई खाल कि सांस सो,
सार भसम होवे जाय।।''

कबीर के विचार से नैतिक बल जीवन के असली अवलम्बन ह–

''सीलवन्त सबसे बड़ा,
सर्व रतन कि खानि।
तीन लोक की सम्पदा,
रही सील कि आनी।।''

कबीर दास सम्प्रदाय भावना, जाति भावना, छुआ-छूत, उँच्च-नीच के भावना आदि के डट के विरोध कइलन। जइसे–

''पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ,
पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होय।।''

आ

''रोजा किया निमाज गुजारी,
बाँग दे लोग बुलावा।
हिरदै कपट मिलै क्यूँ सांई,
क्या हज कावे जावा।।''

कबीर अपना समय के रूढ़ियन के तुरे के प्रेरणा देत बाड़न। कबीर संघर्ष के कारण धर्म विविधता के मुख्य मनले बाड़न। एही से उ एगो 'प्रगतिमय पंथ' के सुझाव दिहलन–

''कहै कबीर दास फकीरा,
अपनि राह चलि भाई।
हिन्दु तुरक का करता एकै,
ता गति लखि न जाई।।''

कबीर के अनुभव एगो सच्चा समाज सुधार के अनुभव रहे।

उलटबाँसी के प्रयोग

उलटबाँसी के समान्य अभप्राय ई बा कि एकर अरथ प्रकट अर्थ से उल्टा होला। उलटबाँसी के प्रयोग वेद, ब्राह्मण बा बौद्ध ग्रन्थन में लगातार होत आइल बा। उहाँ से ई परम्परा सिद्धन आ नाथ से होत कबीर तक आ गइल बा। उहाँ के अपना रहस्यानुभूमि के अभिव्यक्ति एही से कइले बानीं।

कबीर काव्य के इहो एगो विशेषता बा कि उहाँ के 'साखी' के भी रचना कइनीं आ एह माध्याम से सभे के कुछ ना कुछ समुझवनीं। कबीर के वाणी के तीन भाग में कइल बा– साखी, रमैनी आ सबद। वेदान्त तत्व हिन्दु, मुसलमान के फटकार हृदय के शुद्धि, हज, नमाज, ब्रत आदि जइसन बहुत प्रसंग कबीर के वाणी के वार्ण्य विषय बा।

***

एकमा-परसागढ़ की स्मृति में राहुल

प्रो. राजगृह सिंह

पाण्डुलिपियों के संग्रह में, अध्यायपन कार्य में, शिक्षा ग्रहण करने में, जो समय बिताया उस में एकमा परसा गढ़ की याद उन्हे बराबर रही थी।

महान यायावर संत राहुल सांस्कृत्यायन का संबंध परसा गढ़ मठ से बहुत ही गहरा रहा है। कह सकते हैं कि राहुल जी को राहुल बनाने में परसा गढ़ मठ का विशेष स्थान रहा है। राहुल जी का जन्म आजमगढ़ के पनदहा गांव में 9 अप्रैल 1893 को हुआ था। इनके पिता रामशरण पांडेय माता कुलवंती देवी थीं।

इन्हें एकमा परसागढ़ में चार-चार रूपों में देखा जा सकता है।

1. रामोदार दास साधु के रूप में
2. असहयोग आन्दोलन में एक सच्चे सिपाही की तरह पक्के काँग्रेसी के रूप में
3. किसान मजदुरों के प्रति सच्ची सहानुभूति व्यक्त करने वाले राहुल
4. यायावर राहुल.

आजम गढ़ (कनौल) क्षत्रिय ब्राहण केदार पाण्डेय वाराणसी से बाबा लक्ष्मण दास के साथ चलकर परसागढ़ में

आये। 1921 में जब वे मठ में साधु बने तो उनका नाम रामोदार दास रख दिया गया और परम्परा के अनुसार उनको लबादा (झूल) पहना

राहुल सांस्कृत्यायन

दिया गया। रामोदार दास (मृत साधु) जिनके नाम पर मठ की बहुत सारी जायदाद थी, इनका नाम भी वही दे दिया गया। बड़ी ईमानदारी से रामोदार दास ने गुरूलक्ष्मण दास की सेवा एवं भक्ति कबूल की। लक्ष्मण बाबा इन्हें काफी मानते थे। मठ की फैली हुई विरासत और जमीन-जायदाद की देखभाल ये करने लगे। इस बीच इनकी प्राचीन ढंग से संस्कृत शिक्षा (गुरूकुल पद्धति) से की गई। ये पढ़ते थे और गुरू की सेवा भी करते थे। यहाँ तक गुरूलक्ष्मण दास चुकि पुराने हो गये थे अतः खड़खडिया में बिठा कर कही ले आने-ले जाने में कहारों को सहयोग भी करते थे। तीन-चार साल में रामोदार बाबा की बड़ी ख्याल बढ़ गई परन्तु उनका मन मठ के कार्यों में कम लगता था और स्वभाव से वे कही बंध कर रहने वाले नहीं थे। अतः वे भाग कर आगरा चले गये और वहाँ आर्य समाजी हो गये। बहुत चिट्ठी-पत्री गुरू के द्वारा लिखे जाने पर वे फिर परसागढ़ मठ में आये। दो-तीन साल मठ का फिर काम देखा परंतु गुरू की अस्वस्थता एवं मठ की रीति-नीति जानकर वे फिर दक्षिण चले गये। इस अंतराल में गुरु लक्ष्मण दास की मौत हो गयी। राहुल ने दक्षिण में बहुत जगहें देखीं और घूमी। एक तरह से मठ की आशक्ति ने उन्हें फिर किसी तरह नहीं बाँधा। इसका कारण मठ की व्यवस्था के प्रति उनकी निराशा ही कही जाएगी।

1920-21 में इस देश में गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चलाया गया। प्रसहयोग का अर्थ विदेशी सामान एवं शिक्षा का बहिष्कार करना था। देशी शिक्षा को अंगीकार करना और विदेशी वस्तुओं की होली जलाना कांग्रेसी सिपाहीयों का मुख्य काम हो गया था। 1920-21 में घुमते हुए रामोदार दास छपरा मथुरा बाबू के पास जो छपरा (छपरा, सिवान, गोपालगंज) में असयोग आन्दोलन के अधिस्ठतर थे के पास आये और उनसे आग्रह किया कि वे भी इस आन्दोलन में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम करना चाहते हैं। मथुरा बाबू ने उन्हें एकमा का प्रभार सौंपा। वहां से वे वर्तमान तीनों जिलों में घुम-घुम कर काम करने लगे। उन्होंने गाँधी विद्यालय एकमा में खोला। उसके छात्र अनेक हो गये। सहयोगियों के रूप में लक्ष्मीबाबू, पं. गिरीश तिवारी, पं० नगनारायण तिवारी, सभापति बाबू, फुलनदेव गिरि आदि आ गये। कटया, चैनपूर, सिसवन, भोरे, छपरा आदि स्थानों में इनकी सभायें होने लगी। डाँ० राजेन्द्र प्रसाद, मजरूल हक साहब जैसे- लोगों का भी सहयोग मिला। उनके सहयोग में अनेक साधू गृहस्थ और चिंतक भी थे। रामोदार दास का नाम विख्यात हो गया। अँग्रेज पीछे पड़ गये। छः महिने के लिए पकड़ कर इनको फुलवारी शरिफ जेल भेज दिया गया। छः महिने बाद लौटने पर फिर वे बड़े तेवर के साथ आन्दोलन का काम करने लगे। पूनः अंग्रेजों ने दो वर्षों के लिए (1924-26) हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में भेज दिया। जब 1926 में छुट कर जेल से आये तब तक महात्मागाँधी ने कुछ हिंसक कारनामों के चलते आन्दोलन वापिस ले लिया। रामोदार दास बड़े निराश हुये क्योंकि वे अग्रेजों की गुलामी से देश को मुक्त देखना चाहते थे। अतः 1926 में

एकमा परसागढ़ छोड़ कर चले गये।

केदार पाण्डेय जब परसागढ़ मठ में आये तो यहाँ के दारिंदो किसानो एवं मजदूरों की दशा अच्छी नही पायी। उन्होंने महंत, साधुओं से कई बार इसकी शिकायत की परंतु वे शिकायत सुनने वाले कहाँ थे। इसलिए उनका मन भीतर से खिन्न रहता था। वे महंथ या जमिंदार और असामियों के बीच अन्तर करने वाले लौगों को पंसद नहीं करते थे। गुरू-भक्ति में भले ही वे मठ के काम देखते थे। लेकिन नौकर-चाकरों को उचित हक दिलाना चाहते थे। इसके लिए भी उन्हें मठ से निराशा थी। एकमा से संबद्ध आमवारी की जमींदार चंदेश्वर बाबू के खिलाफ सहजानंद सरस्वती के किसान आन्दोलन में शरीक होकर उन्होंने आन्दोलन किया। वे हाथी और जमींदार के सिपाहियों के द्वारा खदेड़े गये और उन्हें चोटें भी आयी किन्तु उनकी सोच में अंतर नहीं हुआ। वे सच्चे रूप से मजदूरों, किसानों और कामगारों के हिमायती थे। राहुल सांकृत्यायन एकमा परसागढ़ छोड़ने के बाद पूरे यूरोप, एशिया के अनेक देश जैसे-रूस, चीन, तिब्बत आदि का भ्रमण किया। पाण्डुलिपियों के संग्रह में, अध्यायपन कार्य में, शिक्षा ग्रहण करने में, जो समय बिताया उस में एकमा परसा गढ़ की याद उन्हे बराबर रही थी। देशाटन में अनेक साधुओं को लेकर वे एकमा आये। अपने देशाटन का विवरण लोगों को सुनाया। उनकी एक भीष्म प्रतिज्ञा 1956 में पूरी हुई और जमींदारी समाप्त होने की घोषणा हो गयी। वे उसी सड़क एकमा परसागढ़ आये। अनेक स्कूलों, चौपालों और लोगों के बीच इन बातों को और पूरे विश्व के विवरण को बड़ी तन्मयता से सुनाया। 1956 में ही एक पुस्तक एकमा परसागढ़ को भेंट करते हुये लिखी जिसका नाम है 'मेरे असहयोग के साथी।' इसमें बड़े-बड़े कांग्रेसियों, आन्दोलन के साथियों के नाम, पता और उनके कार्यों का विवरण है। जब राहुल इस संसार से जाने की तैयारी करने लगे तो इसी क्रम में दो साल विक्षिप्त रहे। कमला जी (उनकी धमपत्नी) से वो बार-बार एकमा परसा याद में रो पड़ते थे। इनकी स्मृति में एकमा-परसागढ़ की याद बराबर जली रहती थी।

***

सिवान महिमा

सुघर सलोना माटी, खांटी बा देहात वाला
जिनिगी जिहिं जा बाकि नित आन-शान के।
भूंजा-भरी, सतुआ, सोहारी आपन पेट भरीं
होला कबो कमी नाही खरची पिसान के।।
आवे जे अतिथि , माथ सेवा में झुकाइ दिले
होखेलें अतिथि सांचो रूप भगवान के।
सरल सुभाव ह, सहज भाषा भोजपुरी
लैनू से नरम होलें मनई सिवान के।।

घाघरा घहरे, मही, सोना नदी दाहा जहां।
झरही, झझकी, झझकारे ले उफान के।।
इहवें दरौली बा द्रोण के मठ जहां।
जरेला चिराग मठ, मंदिर, मसान के।।
वास बा अनेक साधु संत साधकन के।
संत जगनाथ साधु गति सा सुजान के।।
साधु, संत साधक के सुघर समाधि इहां।
सिद्धि, साध्य, साधक के धरती सिवान के।।

आन, बान, शान, सनमान पर गुमान बाटे।
बोयी गेहूं, धान, उंख अलुई आराम से।
दूध, दही, घीव सभ घरही भेटाला रोज।
गाय, बैल, भइंस शोभा घर आवधान के।।
बड़ या बाजार छोट शहर अनेक बाटे।
मिले चीज बतुसो त खानि आ बिरबान के।।
देश, परदेश आ विदेश में अकुत लोग।
दुनिया में नांव बाटे जिला ए सिवान के।।

चानी, सोना, हीरा-मोती, रतन अनेक होले।
देश के रतन एगो, जिला से सिवान के।।
मांटी के उपज त महेन्द्र मजरूल हक।
बरि उ फुलेना गोली खाले सीना तान के।।
आंख से बिसरिहें ना उमाकांत धीरवीर।
सात गो शहीद में बा नांव इहो शान के।।
प्रभा, ब्रजकिशोर धाती, नांव बा आजादी बदे।
देश के आजादी में बाती ई सिवान के।।

भाई, भयवधि, भाईचारा बा मिसाल इहां।
नाहीं भेद-भाव कहीं हिन्दू, मुसलमान के।।
खान-पान, पूजा-पाठ रित आ रिवाज आपन।
पुआ-पुड़ी खाले पीये सेवई सम्मान के।।
उठे जो अखाड़ा हनुमान भा हुसेन क ता।
करें खेलवाड़ मिलीजुली फानिफान के।।
गीता आ कुरान के समान इहां आदरो बा।
रहन-सहन संस्कार बा सिवान के।।

हाथ जो मिलावे केहू दुमची बघारे रोब।
गटई पकड़ी लेला तुरते त फान के।।
घई के घसोंरी माई धरती पर धांय-धांय।
तुगरी बनाई देला लाते मूके खान के।।
उठे के हियाब कहां फेरू ओहू बछडु के।
नाक देला नाथ अरू गोर दूनो छान के।।
छठी के इयाद दूध ओहू के कराई देला।
अस करकस होला मनई सिवान के।।

राज्य ए बिहार के करेज पूरा सारणे ह।
सारणों में शोभा अजगुत चली मान के।।
अख्खर अनूठा, नांव, गांव बा अनेक इहां।
नाई मांथ धरती ह वीर-विद्वान के।
गाथा बा अनेक, दंतकथा बा विशेष के।
लिखे में भुलाई जाला डर बा इमान के।।
दीहि परतोष कइसे-सब तनि छोटे लागे।
महिमा लिखे ना पाई जिला ए सिवान के।।

विरेन्द्र कुमार मिश्र 'अभय',
ग्राम.: ससना, पो.: सिसई (सहाजितपुर),
सारण, बिहार

लवकांत सिंह

सारण के शान

अम्बिका भवानी

एतना प्रसिद्ध भइला के बादो सरकार के अनदेखी के कारण आज एकर पुछनिहार केहू नईखे। बाकि अब हाल फिलहाल में मंदिर प्रशासन के तरफ से सरकार से एह मंदिर के मरम्मत आ रख रखाव खातिर अर्जी दिआइल बा।

पटना के गोलघर, नालन्दा के विश्वविद्यालय के खण्डहर आ राजगीर के गर्मकुण्ड त सभे जानत होई बाकि बिहार के पर्यटन धरोहर के अबकि के अंक में आईं जानल जाव छपरा जिला के ओह शक्तिपीठ के बारे में जवन सनातन धर्म के लिहाज से बहुत महत्वपूर्ण बा। बाकि विडम्बना ई बाकि एह धाम के नाम ओतना ना भईल जेतना होखे के चाहत रहे। ऊ धाम ह देवो के देवमहादेव के ससुरार माने की आमी जेकरा के अम्बिका भवानी कहल जाला। छपरा से 37 किमी पुरब आ दिघवारा से 4 किमी पच्छिम में स्थित ई मंदिर राष्ट्रीय राजमार्ग 19 के किनारे बा। प्राचीन समय में दिघवारा रेलवे स्टेशन के जगह पर एगो दीर्घ द्वार होखत रहे ओही द्वार के नाम पर ई जगह के नाम दिघवारा पड़ल। भारत के ईहे एगो स्थान बा जौन दुर्गासप्तसती में वर्णित स्थान से मेल खाला। आमी स्थान के वर्णन मारकण्डे पुराण आ शिव पुराण में भी बा। एह पुराण के अनुसार विश्व में इहे ऊ जगह बा जहाँ भगवान शिव भयंकर तांडव नृत्य कइले रहस।

एह मंदिर के बारे में सबसे आश्चर्य जनक तथ्य ई बाकि आमी मंदिर अइसन जगह पर स्थित बा जहवाँ से भगवान शिव के काठमांडु (नेपाल) स्थित पशुपतिनाथ मंदिर, बनारस के विश्वनाथ मंदिर आ देवघर के बैद्यनाथ धाम मंदिर के दूरी एक बरोबर बा।

गंगा किनारे स्थित आमी मंदिर के निर्माण किला नुमा भइल बा। इहां के लोग के कहनाम बा कि बाढ़ आ गईला के बाद भी नदी के पानी मंदिर के देवार से दूर ही रहेला आ अगर कभी पानी बढ़िया के मंदिर से सट भी जाला त ओतना दूर के पानी लाल हो जाला। शिवपुराण के अनुसार राजा दक्ष प्रजापति के बेटी सती उनका मर्जी के खिलाफ भगवान शिव से बिआह कर लेले रहली। ओही बात सेना राज राजा दक्ष अपना जज्ञ में सभे के नेवतले बाकि सती-शिव के ना नेवतले। शिवजी के माना कईला के बादो सती नइहर चलगईली बाकि ओहजा के बेवहार से उनका एहसास भईल की उनका पति के अपमान भईल बा। ओही अपमान से दुखी होके जज्ञ के अग्नि कुंड में कूद के भस्म हो गईली। जब भगवान भोलेनाथ के ई खबरमिलल त खीस के मारे रूद्र अवस्था में आगईले आ सती के लाश उठाके लगले तांडव करे। उनका तांडव के कारण सृष्टि

में भूचाल आगईल। ई सब देख के देवता लोग डेरा गईल कि इहे हाल रही त सृश्टि के नाश हो जाई। तब विश्णुजी अपना चक्र से सती के शरीर काट दिहले। जहां जहं उनकर अंग गिरल तहां तहां शक्तिपीठ बनल। आमी भी ओही शक्तिपीठन में से एगो बा, अइसन मानल जाला कि आमी में सती के शरीर के मध्य भाग गिरल रहे। एहीसे ई स्थान के बहुते महत्व बा। ई मंदिर आपना सांस्कृतिक आ अध्यात्मिक धरोहर खातिर प्रसिद्ध बा। आज भी ओहिजा एगो विशाल जगकुण्ड के अवशेश बा अइसन मानल जाला कि ई उहे कुण्ड के अवशेश बा जवना में सती कूद के आपन प्राण त्यगले रहली।

एतना प्रसिद्ध भइला के बादो सरकार के अनदेखी के कारण आज एकर पुछनिहार केहू नईखे। बाकि अब हाल फिलहाल में मंदिर प्रशासन के तरफ से सरकार से एह मंदिर के मरम्मत आ रख रखाव खातिर अर्जी दिआइल बा। सबकुछ ठीकठाक रहल त जल्दी ही मां अंबिका भवानी क्षेत्र एगो पर्यटन क्षेत्र के रूप में उभरके सबका सामने आई। एह क्षेत्र के भी राजगीर आ नालंदा के तरह विकसित करे के योजना बन रहल बा। करीब 21 करोड़ के लागत से प्रस्तावित योजना जल्दी ही सरकार के भेजल जाई। मां अंबिका भवानी राजयोग सेवा संस्थानम के आम सभा में उक्त प्रस्ताव पारित कईल गईल। पं. सीएस संजय कुमार झा के अध्यक्षता में आयोजित आमसभा में संस्थान के सचिव आ मंदिर के पुजारी जितेन्द्र तिवारी ऊर्फ भीखमबाबा के कहनाम बा कि 21 करोड़ के परियोजना के सरकार के पास भेजल जाई। उन्हां के बताईनी कि कार्यकारिणी आ प्रबंधन समिति सदस्यन के उपस्थिति में उक्त प्रस्ताव पारित भईल। परियोजना में गंगा महाआरती खातिर प्लेटफार्म निर्माण, अतिथिशाला, मेडीटेशन सेंटर आ अन्य निर्माण शामिल बा।

सती शक्ति के अवतार मानल जाली ओही से दशहारा में नवरात्र के परब इहां बहुत धूमधाम से मनावल जाला। दूर दूर से लोग पूजा करे खातिर इहां आवेला, पुरा 9 दिन तक ईहां मेला लागले रहेला। ओही तरह महाशिव रात्रि के परब भी बहुते धूमधाम से मनावल जाला। शिवविवाह के पाट खेलल जाला जेकरा के देखे खातिर कई गांव के लोग जुटेला। खुब सुन्दर बारात निकालल जाला आ शिवजी के सती के संगे बियाह करावल जाला।

आमी पहुंचे खातिर यातायात के उचित सुविधा बा। सड़क मार्ग सबसे आसान बा काहे कि मुख्य मंदिर राजमार्ग पर ही बा। अगर रउआ रेल से आवत बानी त दिघवारा रेलवे स्टेशन से मंदिर के कुल दूरी 3 किमी बा। हवाई मार्ग खातिर नजदीकी हवाई अड्डा बा पटना के जयप्रकाश नारायण हवाई अड्डा जहां से मंदिर के दूरी 57 किमी बा।

***

सोना के हिन्दुस्तान रे

कोइली पपीहा बाग में गावे, खेत में जहाँ किसान रे,
कहाँ गइल उ देश हमार, सोना के हिन्दुस्तान रे।
महावीर, गौतम, गुरुनानक, तुलसीदास, कबीर,
लक्ष्मीबाई, बाबू कुअँर, परताप, शिवाजी, अस वीर,
सीता उर्मिला, सती अनुसुइया, सावित्री, सत्यवान रे।
कहाँ गइल उ देश हमार, सोना के हिन्दुस्तान रे।
रामचन्द्र, हरिश्चन्द्र, कन्हैया पाँचों पाण्डव भाई,
कुन्ती, सुमित्रा आउर शकुन्तला, कौशल्या अस माई,
करणावती, पद्मीनी, दुर्गा, लेहली तेगा म्यान रे।
कहाँ गइल उ देश हमार, सोना के हिन्दुस्तान रे।
विक्रमादित्य, बलि, दधिचि, राजा शिवि अस दानी,
लव-कुश, वीर, अभिमन्यु, भरत, शेर से जे कइल छेड.खानी,
ध्रुप, प्रहलाद आ रहसु भगत, फेरू भगतन में हनुमान रे।
कहाँ गइल उ देश हमार, सोना के हिन्दुस्तान रे।
कहाँ भुलइले श्रवण बेटा, माई बाबू के रखवाला,
कहाँ गइली राधिका रूकमीनी, वृदावन के बाला,
कहाँ गइले उ मीत सुदामा, संदीपनी के ज्ञान रे
कहाँ गइल उ देश हमार, सोना के हिन्दुस्तान रे।
दुनिया के अचरज ताजमहल, यमुना के निर्मल पानी,
चारों धाम उ शंकराचार्य, जे जगत गुरू के निशानी,
बाघ- बकरिया एक घाट पर, करे गंगाजल पान रे।
कहाँ गइल उ देश हमार, सोना के हिन्दुस्तान रे।

नवल किशोर सिंह 'निशांत'
हिन्दी, भोजपुरी साहित्यकार (दिल्ली)

हेलो सामान्य ज्ञान

लाल बिहारी लाल

1. **वर्ष 2010 का इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार किसे दिया गया है-**
(क)लूला डी.सूल्वा, (ख)एम एस धोनी, (ग)सचिन तेंदुलकर, (घ)बी.महाराज
2. **बी.एस. सम्पत किस देश के मुख्य चुनाव आयुक्त हैं -**
(क) नेपाल, (ख) भारत , (ग) कनाडा , (घ) फ्रांस
3 **लोक सभा के सांसद सदस्यों की अधिकतम संख्या है -**
(क) 513 ,(ख) 550 ,(ग) 555,(घ) 545
4. **भारत रत्न सम्मान में दिये जानेवाला मोमेंटो(पदक) की आकृति किसके पते के समान होती है -**
(क) केला,(ख) पीपल ,(ग) आम (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. **निम्नलिखित में किसे डायनासोर का कब्रिस्तान कहा जाता है:**
(क) मोनटाना,(ख)चीन ,(ग) फिनलैंड,(घ) ब्राजील
6. **बैदेही बनवास किसकी कृति है -**
(क)गुरु नानक, (ख)गुरु रामदास, (ग)अयोध्या सिंह हरिऔध, (घ)बीरबल
7. **बच्चों की अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा का अधिकार(राइट टू एजुकेशन) अधिनियम कब से प्रभावी है -**
(क)1 अप्रैल 2008,(ख)1 जनवरी 2009,
(ग) 1 अप्रैल 2010 (घ) 1 जुलाई 2012
8. **भारत में समुंद्री तट कितने राज्यों को छूती है-**
(क)5 राज्यों को, (ख)7 राज्यों को, (ग)9 राज्यों को (घ)इनमें से कोई नहीं।
9. **भारत में कौन मुद्रा की पूर्ति करता है -**
(क)भा. रिजर्व बैंक , (ख)भा. स्टेट बैंक , (ग) नाबार्ड , (घ)इंडियन बैंक
10. **यूनीसेफ का मुख्यालय कहा पर है-**
(क) शिकागो, (ख) जकार्ता, (ग)लंदन, (घ) न्यूयार्क।
11. **वर्ष 2012 का फीफा के सर्वश्रेष्ठ खिलाडी किसे चुना गया था-**
(क) लियोनिस मैसी(ख) एम एस धोनी, (ग) तेंदुलकर, (घ) बीरजू महाराज
12. **बराक ओबामा किस देश के राष्ट्रपति हैं -**
(क) नेपाल, (ख) अमेरिका, (ग) कनाडा, (घ) फ्रांस
13. **लोक सभा के आम चुनाव बर्ष 2014 में होने वाले इसकी कौन-सी संख्या है-**
(क) 13 वीं, (ख) 16 वीं, (ग) 15वीं, (घ) 17 वीं
14. **सन् 2012-13 के लिए यू.एन.ओ. (संयुक्त राष्ट्र संघ) का कितना प्रतिशत बजट बढाया गया है-**
(क)12, (ख) 5, (ग) 10, (घ) इनमें से कोई नहीं।
15. **दूध है:**
(क) पायस, (ख)निलंबन, (ग) फेन, (घ)जेल
16. **आकाल तख्त का निर्माण किसनें किया था-**
(क)गुरु नानक (ख)गुरु रामदास (ग)गुरु हरगोविन्द (घ)इनमें से कोई नहीं
17. **भारत में रॉकेट छोड़ने का स्थान श्रीहरिकोटा किस राज्य में है-**
(क) ओडीसा (ख) आन्ध्र प्रदेश (ग) बिहार (घ) पंजाब।
18. **1937 में कांग्रेस ने कितने राज्यों में मंत्रिमंडल बनाए थे-**
(क) 5 राज्यों में,(ख) 7 राज्यों में ,(ग) 9 राज्यों में (घ) इनमें से कोई नहीं
19. **दिल्ली में लाल किला का निर्माण किसनें किया था-**
(क)गुरु नानक (ख) गुरु रामदास (ग) शाहजहाँ (घ)इनमें से कोई नहीं
20. **अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का मुख्यालय कहा पर है-**
(क) शिकागो (ख) जकार्ता (ग)लंदन (घ) वासिंगटन डी.सी.

उत्तरः1.(क), 2.(ख). 3.(ख), 4.(ख), 5(ख), 6.(ग), 7.(ग), 8.(ग), 9.(क), 10.(घ), 11.(क), 12.(ख), 13.(ख), 14.(ख), 15(ख), 16.(ग), 17.(ख), 18.(ख), 19.(ग), 20.(घ)।

आपका राशिफल

चारू श्रीवास्तव
मो.: 09229103745

मेषः सार्थक स्थितियां बनेंगी। कामकाज, स्थिति पक्षधर बनेगी, सोच-विचार-धारणा में परिवर्तन दिखेगा।

वृषः आशा-निराशा से बचेंगे। हिम्मत, साहस बढ़ा पाएंगे। संभावनाएं बढ़ेंगी।

मिथुनः सही गलत का निर्णय समय पर लेना होगा। आपसी मामलों में खींचतान होगी।

कर्कः सभी दृष्टि से माह श्रेष्ठ। स्वयं का निर्णय, कार्यकुशलता के सुखद परिणाम आएंगे। योग्यता का आभास होगा। व्यक्तिगत संबंधों पर ध्यान दें।

सिंहः पुरानी समस्याएं उभरेंगी। शांति, संयम, अपनी तैयारी रखें। वास्तविकता को महत्व दें। आपसी मनमुटाव रहेगा। स्वयं की हिम्मत-साहस ही उपयोगी रहेगा।

कन्याः स्थितियां पक्षधर रहेंगी। नया वातावरण, सहयोग, मार्गदर्शन का उपयोग करें। व्यावहारिक मामले सुधरेंगे। आर्थिक मामलों का क्रियान्वयन होगा।

तुलाः कामकाज में मन लगेगा। उत्साह, आत्मविश्वास बना रहेगा।

वृश्चिकः व्यवहार, बातचीत में उलझनें बढ़ेंगी। गलत फहमियां बनी रहेंगी। आर्थिक योजनाएं पेडिंग रहेंगी। तात्कालिक सुधार दिखेगा।

धनुः माह में अब काफी राहत मिलेगी। अनायास होने वाले कार्य, परिवर्तन से आश्चर्य होगा।

मकरः इस माह संघर्ष, विवादों में ही रहना होगा। सफलता, यश, लाभ अपनी जगह रहेंगे।

कुंभः नया विचार, योजना सार्थक रहेगी। गंभीरता से कार्य करना होंगे।

मीन : योग्यता-अनुभवों का लाभ लें। पारिवारिक मामले में सुलझेंगे। संतान पक्ष के लिए ठीक। इस माह में कामकाज की अधिकता रहेगी। पूछपरख बढ़ेगी।

करइला के भरुआ

भोजपुरिया पकवान के एह अंक में आई जानल जाव करइला के भरूआ बनावे के विधि

रिंकू राज

सामग्री

करइला- आधा किलो

पियाज- 250 ग्राम

चना- पानी में फूलावल -100 ग्राम

आम के चूरन - आधा चम्मच

मसाला- जीरा मरीच-एक चम्मच, मरीचा-दू चम्मच, हल्दी पाउडर -एक चम्मच

नीमक- स्वाद अनुसार

सरसों तेल -100 ग्राम

बनावे के विधिः

करइला के बढ़ियां से धो के छुरी से तनी-तनी छिलका उतार दिहीं दू टुकड़ा काट लिहीं, चम्मच आ चाहे कवनो नोखदार चीज से करइला के बिया निकाल लिहीं। पियाज के बारीक काट लिहीं।

अब हल्का आंच पर करइला के उबाल लिहीं तनी सा नीमक डाल के।

करइला में से जवन बिया निकलले रनीह ओकरा के सिलवट पर हल्का कुंच लीं।

अब आंच पर कढ़ाई चढ़ाके तेल में हल्का-हल्का पियाज भूंज लिहीं, ओकरे संगे करइला के बिया आ चना के भी भूंज लिहीं।

अब सभ मसाला मिलाके ओही संगे भूंज लिहीं। हल्का लाल हो गईला के बाद नीचे उतार लिहीं।

अब उबलल करइला में चना, प्याज, मसाला इत्यादि के मिश्रण के चमच से भर दिहीं।

अब दुबारा कढ़ाई में तेल डाल के गरम करीं आ ओहिमे भरल करइला के डाल दिहीं आ हल्का आंच पर पलट-पलट के तार लिहीं, हल्का लाल हो गईला पर नीचे उतार लिहीं, अब रउरा करइला के भरुआ तइयार बा।

अब रोटी चाहे दाल-भात के संगे करईला के भरुआ के आनंद लिहीं।

***

भोजपुरी के पारम्परिक बाल-गीत

रामेश्वर गोप

'जन-जीवन में रमल भोजपुरी भाषा का सब क्षेत्र में कमाल हांसिल बा। पूज्य स्वामी आत्मानंद लड़िकन का खेल का कहावत में आध्यात्मिक तत्व के खोज कइले बानी।'

खेल-खेल में लड़िका सब केतना गंभीर ज्ञानों के बात कहि जालें। बाकि केहू बूझो तब नू महत्व देव। हम खेल का जवना कहावत के चर्चा करे जात बानी तवन भोजपुरी अंचल के प्रसिद्ध कहावत हवे-

ओका बोका तीन तड़ोका
लाउआ लाठी, चनन काठी
चनना के नाव का?
इजई विजई, पानी दे पुचक।

अध्यात्म से भरल एह कहावत के मानी बहुत सुन्दर बाटे। ओका माने ओंकार, बोका माने बोलल, ओका बोका माने ॐ बोलल। ओंकार के जप कइल। तीन तड़ोक्का मतलब बा तीनूं गुण

टूटल। तीन माने तीनूं गुण (सत्व, रज, तम), तड़ोक्का माने टूटल। अर्थात् माया का तीनूं गुण के रसरी टूट जाला। तीनू गुनवे नू जीव के बन्हले बा, इहे टूट जाई त जिउआ सहजे में मुक्ति पा ली।

लउआ लाठी चनन काठी माने खराब से खराब आदमी अच्छा से अच्छा रूप पा लेला। लउआ माने साधारण लकड़ी, चनन काठी माने चन्दन (उत्तम) लकड़ी। चनना के नाव का?

इजई, विजई के माने ई भइल जे अच्छा बनके ऊ जय-विजय का पद पर पहुँच जाला। पानी दे पुचुक माने ई भइल जे जइसे पानी के बुलबुला फुट के पानीए में मिल जाला ओइसहीं ऊ आदमी आपन सब कुछ मिटा के भगवान में मिल जाला। अर्थात् ओंकार के जाप करे वाला आदमी का माया के तीनू फंसरी (सत्व, रज, तम) टूट जाला आ ऊ आदमी मुक्ति पा जाला।

जवन भोजपुरी भाषा के एगो मामूली कहावत में अइसन भाव भरल बा ओह भाषा के गहराई के आसानी से अंदाजा लगावल जा सकत बा।

(साभारः अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मलेन का विसरका अधिवेशन (सिवान) के स्मारिका, 1977)

दिल्ली से अपहृत बालक का डीएनए टेस्ट

सात वर्ष बाद दुबारा खुली फाईल

प्रो जय प्रकाश गुप्ता। सात वर्ष पूर्व छपरा जिला के रसूलपुर थान क्षेत्र के बंशी छपरा गांव के एक ब्व्सायी बबन राम का चार वर्षीय एकलौता पुत्र जिसका अपहरण दिल्ली से किया गया वह अपने गांव के ही बगल के एक गांव माधोपुर में पुलिस के द्वारा होली के दिन बरामद कर लिया गया। इस मामले की फाइल बंद कर चुकी दिल्ली पुलिस उच्च न्यायलय दिल्ली के निर्देश के बाद एक बार पुनः हरकत में आई और सन्नी से विवेक बन चुके 13 वर्षीय बालक को बरामद कर लिया। मालूम हो की सात वर्ष पूर्व साढ़े चार वर्षीय एक बालक सिवान स्टेशन के बहार लावारिस अवस्था में रोते हुए भटक रहा था जिस पर माधोपुर गांव के ओम प्रकाश उपाध्याय की नजर पड़ी और वह उस बालक को अपने साथ अपने गांव लेकर आया और उस बालक को गांव के ही जतन कुर्मी को उसे पालन पोषण के लिए सौंप दिया। सात वर्षों तक उस बच्चे का कही से किसी ने कोई खोज खबर नहीं लिया। लेकिन सात वर्ष बीतने के बाद दिल्ली के एक व्यवसायी व बंशी छपरा गांव निवासी बबन राम को यह पता चला की सात वर्ष पूर्व दिल्ली से अपहरण किया गया उसका एकलौता पुत्र सन्नी जिन्दा व सही सलामत माधोपुर गांव में एक किसान के घर पल रहा है। खबर मिलते ही बबन राम भागते हुए माधोपुर गांव में जतन कुर्मी के घर पहुचे। और उस बालक की सिनाख्त अपने पुत्र सन्नी के रूप में की और उसे लौटने के लिए कहा लेकिन जातां कुर्मी उस बच्चे को अपना बच्चा बता सन्नी को लौटाने से इंकार कर दिया उसके बाद किसान ने गांव में पंचायत बुलाई गई जहाँ बबन राम ने पंचायत से अपना बच्चा वापस लौटाने की बात कही लेकिन बच्चो को पल पोष रहे उसके परिजनों ने बच्चे पर अपना हक जताते हुए बच्चे को ब्याव्सयी को लौटाने से इंकार कर दिया। उसके बाद पंचायत ने जब बच्चे से यह जानने का प्रयास किया की वह किसके साथ रहना चाहता है तो बच्चे ने किसान के साथ रहने की बात कही।उसके बाद गांव से खाली हाँथ ब्याव्सयी को वापस दिल्ली लौटना पड़ा। वह दिल्ली पहुंचकर एकबार फिर पुलिस को आपबीती सुनाई लेकिन पुलिस ने मामले को गम्भीरता से नहीं लिया। उसके बाद ब्याव्सयी ने उच्च न्यायलय से अपने पुत्र की बरामदगी की गुहार लगाई। कोर्ट के निर्देश के बाद दिल्ली पुलिस हरकत में आई और स्थानीय थाना क्षेत्र के माधोपुर गांव से जतन कुर्मी के घर से सन्नी को होली के दिन बरामद कर लिया। उधर उच्च न्यायलय दिल्ली में भी सुनवाई के दौरान बच्चे ने कथित माता पिता बबन राम को पहचानने से इंकार कर दिया इसपर जज ने डी एन ए जाँच का आदेश दे दिया। अब सबकी नजरें डीएनए जाँच पर टिकी है।

***

सात वर्ष पूर्व दर्ज कराई गई थी प्राथमिकी फिरौती में मांगी गई थी बीस लाख रूपये

सात वर्षों पूर्व दिल्ली के डाबरी थाना में सन्नी के अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी जिसका कांड संख्या 964/2006 बताया जाता है। अपहरण के प्राथमिकी दर्ज होने के बाद पुलिस ने बालक को तो नहीं बरामद कर सकी लेकिन इस अपहरण की घटना में शामिल कुछ लोगों को संदेह के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। पूछ-ताछ के दौरान अभियुक्त पुलिस को सही बात बताने से कतराते रहे और पुलिस को गलत जानकारिया देते रहे। कभी पुलिस को बताया की बालक फरार हो गया है तो कभी बताया की उसे किसी ट्रेन पर चढ़ा दिया गया है। लेकिन पुलिसिया जाँच में यह बात सामने आई की अपहरण कर्तायो ने दिल्ली के व्यवसायी से फिरौती के रूप में बीस लाख रूपये की मांग की थी और बढती पुलिस दबिस को देख अपहरण कर्तायो ने बालक को किसी ट्रेन में चढ़ा दिया था। आखिरकार वह बालक भटकते-भटकते सिवान स्टेशन पर पहुँच गया।

देश के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी
को
हार्दिक बधाई

Ashok Mishra
09313575520

A.S. Transporting & Cargo System
• Custom Clearance
• Air Cargo • Freight Forwarding

Add. : A-71, 1st Floor, Street No. 6, Sewak Park, Dwarka More Metro Station, New Delhi-110059 (India) Tel. : +91-11-25332545
E-mail : astcarto@yahoo.com; astcargosystem@gmail.com

जगमगात रही निर्भया के ज्योति

हेलो भोजपुरी। वसंत विहार सामूहिक दुष्कर्म के शिकार निर्भया(ज्योति) के 26वें जन्मदिवस पर दिल्ली के मावलंकर हॉल में पुष्पांजली सभा के आयोजन कईल गईल। एह अवसर पर निर्भया ज्योति ट्रस्ट के वेबसाईट www.nirbhayajyoti.com के लांचिंग तेजाब हमला के शिकार लक्ष्मी के हाथो भईल।

कार्यक्रम के शुभारम्भ पूर्व विदेश मंत्री डॉ. सलमान खुर्शीद के हाथों दीप प्रज्वलित के बाद राष्ट्रगान जन-गन-मन से भईल।

एह अवसर पर निर्भया के आपन पुष्पांजली देत डॉ. खुर्शीद कहलन की निर्भया के कुरबानी के बेकार ना जाये दिहल जाई।

रउरा मालूम होई की पिछला 16 दिसंबर 1012 के एह घटना के बाद देश भर में महिला शुरक्षा के लेके एगो मशाल जरल जवन आजो कायम बा। अपना बहादुर बेटी के खो के जवन पीड़ा ओह महतारी के सहे के पड़ल तवन कवनो और महतारी के ना सहे के पड़े एही से निर्भया ज्योति ट्रस्ट के गठन कईल गईल। 10 मई के पीड़ित फिजियोथरेपिस्ट के 26वां जन्मदिन रहे। पीड़ित के माता-पिता महिला आ विशेषकर लाचार असहाय बच्चियन के इंसाफ दिलावे के मकसद से निर्भया ज्योति ट्रस्ट के निर्माण कईले बाड़न। इ ट्रस्ट बेटियन आ महिलाअन के सुरक्षा व पीड़ित बच्चियन के न्याय दिलावे खातीर संघर्ष करी। पीड़ित के जन्मदिन पर ट्रस्ट के घोषणा करत दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में एकर वेबसाइट भी लांच भईल। तेजाब हमले की शिकार लक्ष्मी वेबसाइट के लांच करत कहली की हमनी के एकजुट होके एह लड़ाई के लड़े के पड़ी। लक्ष्मी के हाल ही में में अमेरिका

अम्बेडकर जयंती मनाई गई

पिछले दिनों भारत रत्न एवं f”ाल्पकार बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर की 123वीं जयन्ती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन संस्था के प्राधान कार्यालय :- बी-70, मधु विहार, द्वारका के मनोरंजन केन्द्र सह ओल्डएज होम जो समाज कल्याण विभाग, दिल्ली सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्था के संस्थापक महासचिव भाई भरत कुमार सिंह ने अपने विचार रखते हुए बताया कि आज समाज अपने मुख्यधारा से भटक गया है और बाबा साहब के नाम पर लुट खसोट जारी है। आगे सिंह ने बताया कि गरीबों के दर्द को वही समझ सकतौ जिसने गरीबी देखी हो। जो खुद गरीबों के बीच में रह रहा हों वे ही गरीबों की समस्या को सहीं ढंग से समझ सकता है एक इंसान किस तरह दे”ा की तकदीर को सवारता है पिछड़े को बराबरी का हक दिलाता है और दिल्ली जैसे महांनगरों में रह कर समाजिक सोच पैदा कर अनुसचित जाति, जनजाति अल्पसंख्यक एवं ओ.बी.सी. के कमजोर वर्ग के लोगों को साथ लेकर चलना फिर भी सही दि”ाा और ज्ञान नहीं मिलता। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ ओ.पी. ठाकुर ने बी.आर. अम्बेडकर जी की जीवनी के बारे में विस्तापूर्वक अपने विचारों को प्रकट किया और उन्होंने कहा कि दे”ा के नेता अपने स्वार्थ के लिए राजनीतिक करते है वंचित समाज लिए नहीं क्योंकि आज भी दे”ा के दलित समाज हा”िाए पर है। संस्था के सचिव दिने”ा प्रसाद कु”ावाहा ने कहा कि बाबा साहब के सिद्धातों पर बहुत ही कम लोग चलते है कार्यक्रम में उपस्थित वरिश्ठ नागरिक श्री सी.पी.श्रीवास्तव, भगवान दास गुप्ता, हरवं”ा कुमारी, अध्यापक विवेकानन्द वर्मा, डॉ. अमरेन्द्र कुमार, ललीत पटेल, मालती गिरी, माधुरी गौतम, रामधनी गौतम ने बिते दिनों को याद करते हुए कहा कि बाबा साहब का सोच था कि मेरे भारत में हर वर्ग एवं हर समाज के लोगों को बराबरी का हक मिलें जिससे की वंचित समाज पढ़-लिखकर भारत निमार्ण में अपना योगदान कर सके। कार्यक्रम में भारी संख्या उपस्थित महिलाओं, बच्चों ने बढ-चढ कर भाग लिया। इस अवसर पर संस्था की मानद् महासचिव रानी सिंह, कोशाघ्यक्ष रितु सिंह, लोक सभा में हिन्दी अधिकारी उपेन्द्र नाथ एवं भोजपुरी जीनगी के संपादक एवं भोजपुरी भाशा के आंदोलनकारी संतोश पटेल बताया कि अपने विवादास्पद विचारों, गांधी और कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद अम्बेडकर की प्रतिश्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेता की थी जिसके कारण 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस की नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तिव में आई। इस कार्यक्रम का आयोजन श्री ज्ञान गंगोत्री विकास संस्था जो एक राश्ट्रीय स्वय सेवी संगठन ने आयोजित किया था।

***

द्वारा इंटरनेशनल वुमेन ऑफ करेज अवार्ड से सम्मानित कईल गईल बा। एह अवसर पर निर्भया ज्योति ट्रस्ट के संस्थापक आ निर्भया के माई आशा देवी कहली की निर्भया ज्योति ट्रस्ट देश में एगो विश्वस्तरीय अस्पताल के निर्माण करी जवना में स्तरीय स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध होखे, ताकि इलाज खातीर देश के बाहर ना जाए के पड़े। एकरा खातीर देश भर में एगो मुहीम चलावल जाई ताकि एह सपना के पूरा कईल जा सके। ट्रस्ट के माध्यम से ओह बेटियन के मदद कईल जाई जे एह तरह के घटना के शिकार होई। समाज में अईसन घटना ना होखे एकरा खातीर जगह-जगह सेमिनार आ काउंसलिंग ट्रस्ट के माध्यम से कईल जाई।

पुष्पांजली सभा के संबोधित करत देश के पहिली महिला आईपीएस डॉ. किरण बेदी कहली की पीड़िता के नाम पर गरीब छात्राअन के मदद खातीर छात्रवृति योजना शुरू कईल जाई। एकरा खातीर ट्रस्ट एगो प्रस्ताव तईयार करके सरकार के लगे भेजी।

एह अवसर पर ट्रस्ट के तरफ से सरकार से मांग कईल गईल की नाबालिक के जुर्म के हिसाब से सजा के प्रावधान पर विचार कईल जाव। एह अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. खुर्शीद, दिल्ली के पूर्व मंत्री किरण वालिया, डॉ. किरण बेदी, निर्भया केश के वकील प्रिया हिन्गुरानी, शोभा विजेंद्र गुप्ता, सांसद महाबल मिश्रा के पुत्र व पूर्व विधानसभा प्रत्याशी विनय मिश्रा, पूर्वांचल एकता मंच के संयोजक मुकेश सिंह, निर्मल सिंह, इत्यादि गणमान्य लोग भी निर्भया के आपन पुष्पांजली दिहल।

एह अवसर पर निर्भया ज्योति ट्रस्ट के सभे सदस्य व पदाधिकारी भी आपन पुष्पांजली अर्पित कईल जवना में, निर्भया के माता-पिता श्रीमती आशा देवी व श्री वद्रीनाथ सिंह, राज कुमार प्रसाद, आँचल रानी, सविता चतुर्वेदी, आर.एन.राय ,आकाश दीप, संतोष कुमार, राजेश मांझी रितु साह, मनोज राय इत्यादि लोग प्रमुख रहे।

कार्यक्रम के संचालन आईटीएल पब्लिक स्कूल, द्वारका के दसवीं कक्षा के छात्रा आँचल बखूबी निभवली। कार्यक्रम के आयोजन निर्भया ज्योति ट्रस्ट के तरफ से कईल गईल जवना में दाना साफ्टवेयर डेवेलपर्स प्राइवेट लिमिटेड, हेलो भोजपुरी, वीरांगना एन.जी.ओ., पटेल मैत्री समिति के विशेष सहयोग रहल।

***

दहेज ना, चार चकवा चाहीं

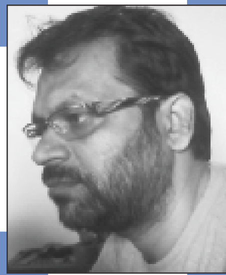

राजेश पाण्डेय

आज लड़िकाईं के एगो घटना याद आ रहल बा, हम आउर हमार एगो संघतिया बजारे जाए खातिर जईसहीं तइयार होके निकलनी सन, हमरा पड़ोस के गिरधारी काका भी हमनी के साथे-साथे चल देहलन। काकी भी माथा पर के साड़ी सम्हारत निकलली, काहे से कि जब भी काका बजारे जाए खातिर निकलस, त काकी उनकरा के छोड़े खातिर, गाँव के बहरी तक जास आउर रह-रह के एकहेगो समान उनकरा के इयाद दियावत रहस।

काका-काकी आगे-आगे आउर हमनी के पीछे-पीछे,रास्ता में ऊ दुनू बेकत के बीच जवन भी बात-चीत भईल ऊ हमनी के समाज के एगो अईसन रूप हटे, जेने से देखीं, करिये बा।

काका से काकी कहली ए जीलगन चढ़ गईल बा बबुआ के देखनहरू कबो दुआर के माटी कोड़े खातिर आ जईहन सन। घर में कुछुओ निमन-बेजाय के ठिकाना नईखे, स्वागत सत्कार खातिर कुछ समान घर में रहे के चाही कि ना?

काका कहलन ठीक बा लेले आईब बाकि अबहीं बियाह-शादी के ओकर उमर कहाँ बा, मैट्रिक त कर लेबे द।

काकी कहली बस रउरा ओकरा मैट्रिक-सैट्रिक में अझुराईल रहीं, तब तक अगल-बगल के लोग किहाँ सोहर पर सोहर उठत बा, आउर हमार करेजा ई सब देख के ककरी नियन फाटत बा।

काका के मजाक सुझल, कहलन ठीक बा बजारे से सुई धागा लेले आवत बानी, रात के बईठ के सी लीहऽ।

काकी के ई मजाक निमन ना लागल, कहली हँऽ-हँऽ, घर भर देवर भतार से ठाठा। अब रउरा ना रिगाईब त हमरा के रिगाई के?

बड़ा चलल बानी सुई धागा लियावे।

बेटी के बियाह में नमरी पर नमरी आउर गड्डी पर गड्डी लुटवनी त, दिमाग के तरे गरमात रहे, बेटहा त छाती पर चढ़ के जेतना ले जाए के रहे लूट खसोट के ले गईल, अब आपन मौका आईल बा त लड़िका के मैट्रिक जोहात बा, कहीं मैट्रिक करत-करत कवनो गोर-करिया लेके निकलल त, ना तऽ कहीं मुँह देखावे लाएक रही, ना ठाँच के जवन बेटी में गिनाईल बा उ निकाले के मौका। हमार मानी त अबकी के लगन बांव मत जाए दीं। वईसे भी ले दे के इहे एगो बेटा बा, सब सारधा एहि में पूरावे के बा, बियाह क के पतोह के गवना छोड़ दीं, फेर लड़िका के मैट्रिक-सैट्रिक जवन करवावे के बा करवावत रहीं।

अब आपन मौका आईल बा त लड़िका के मैट्रिक जोहात बा, कहीं मैट्रिक करत-करत कवनो गोर-करिया लेके निकलल त, ना तऽ कहीं मुँह देखावे लाएक रही, ना ठाँच के जवन बेटी में गिनाईल बा उ निकाले के मौका।

तब तक हमनी गाँव के बाहर आ गईल रहनी सन, काका कहलन कि ठीक बा अब लवट जा, बजार से आवत बानी फेर जवन सुनावे के बा सुनईहऽ। हमनी बाजार गईनी सन आउर साथ हीं लवट के अईनी सन, रास्ता में हमनी के काका से पुछनी सन कि काका का एह साल त बुझाता कि सतेन्दर भईया के बाजा बाजी।

काका कहलन बजावहीं के पड़ी ना त तोहनी के काकी हामार बारात निकलवा दिहन।

पता ना भगवान कहाँ सुन लेहलें, आउर अगिला दिने सतेन्दर भईया के देखनहरू आगईलन सन। लेन-देन तय होखे लागल, काकी केंवाड़ी के किल्ली बजा के काका के लगे बोलाके कहली, हामार बात ध्यान से सुन लीं। जेतना बेटी के देले बानी ओकरा से दूगना नगद चाहीं, आउर उपर से रेडियो, घड़ी आउर साईकिल, उ भी तीनू के तीनू नाया, लड़की वालन के सामने जब काका ई प्रस्ताव रखलन त सभे चौंक गईल बाकि चतूर अगुआ के चतूराईसे सब कुछ तय हो गईल। ओही लगले शादी के दिन भी धरा गईल।

काकी के खुशी के ठिकाना ना रहे, उ दउड़ के देवता वाला घर में गईली आउर देवता बाबा के सामने धड़ाम से गीर के कहली, जय हो देवता बाबा के, हमनी के जवन चहनी सन, तवन दियवा के रउरा हमनी पर बहुत कृपा कईनी। अब चान नियन पतोह देके हित के मुँह में चनन आउर मुदई के मुँह में करिखा पोंत दीं। जय हो देवता बाबा के।

बाकि तिलक के दिने, चतूर अगुआ के गड़बड़ी से तिलक फिरे के नऊबत आ गईल। लेन-देन के कुछ कमी से बहुत बखेड़ा खड़ा भईल। काकी कहली जिनगी भर बेटा कुँआर रह जाई बाकि तिलक के एको पईसा कम ना हो ई गाँव के बड़ बुजुर्ग समझा-बुझा के मामला के सलटवलें लोग। बाद में पता चलल कि जवना लड़की से सतेन्दर भईया के बियाह होत बा उ कहऽतिया कि हमरा ओ घर में नईखे जाए के जवन घर दुलहिन से ना दहेज से बियाह करत बा। सतेन्दर भईया के भी ई बात तींत शरबत के तरे लागल बाकि पिये के पड़ल, बियाह हो गईल जवन बाकी रहल उ आज तक बाकिये बा, ना मिलल ना मिली।

आज गाँव में ना काका रह गईलें ना ही काकी ना उ लोग के दहेज में मांगल रेडियो, घड़ी आउर साईकिल, बाकि सतेन्दर भईया आउर भउजी आज भी गाँव में बा लोग सुने में आवत बा एह साल सतेन्दर भईया के बेटा के बियाह होत बा दरोगा हो गईल बा, आउर जवन भउजी ई कहत रहली कि हम ओह घर में ना जाईब जवन घर दुलहिन ना दहेज से शादी कर रहल बा, आज अपना बेटा के ठाँच के दहेज ले रहल बाड़ी। दस लाख नगद, एगो चार चाका गाड़ी आउर शहर में एगो फ्लैट, बाह रे लोग आउर बाह रे दहेज जे मेटा दे उहे मरद।

***

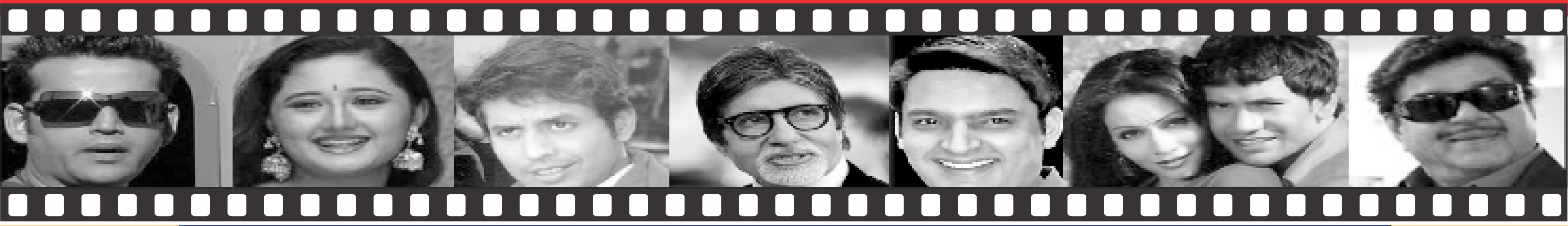

ग्लैमर की दुनिया का सच बताती ''आज का फैशन ट्रेंड''

समरजीत। स्टूडियो साऊंड एण्ड विजन द्वारा प्रस्तुत जेड फिल्म्स की हिन्दी फिल्म ''आज का फैशन ट्रेंड'' नवयुवक-युवतियों के लिये बनायी गयी एक उद्देश्यपूर्ण फिल्म है। ग्लैमर की दुनिया से साक्षात्कार कराती जगन्नाथ एस.आर. और मो. जियाउल्लाह की फिल्म ''आज का फैशन ट्रेंड'' मॉडलिंग उद्योग के पीछे का सच बड़ी चतुराई से उजागर करती है। ज़िया खान द्वारा निर्देशित इस फिल्म में एक महत्वाकांक्षिणी मध्यमवर्गीय युवती की ग्लैमर की दुनिया में दाखिले और उसकी संघर्ष यात्रा का बड़ा बेबाक चित्रण किया गया है। इसके साथ ही इस प्रोफेशन में किस तरह की प्रतिद्वंदिता है, ईर्ष्या है, सबका खुलासा करने का एक सार्थक प्रयास किया गया है। इसमें एक साधारण घर-परिवार की एक लड़की के मन में उपजी प्रसिद्धि पाने की लिप्सा को क्रमागत ढंग से अग्रसर होते दिखाया गया है। फिर रास्ते की परेशानियों के साथ अंततः इसकी परिणति क्या होती है, इसका भी ईमानदारी से समावेश किया गया है। यह फिल्म विषय वस्तु के आधार पर मधुर भंडारकर की बहुतचर्चित-प्रस्तुत-प्रशंसित ''फैशन'' से मिलती-जुलती ज़रूर है, लेकिन, प्रस्तुतिकरण व प्रवाह में यह पूरी तरह भिन्न है।

लव कुमार के मधुर संगीत से सजी इस मनोरंजक फिल्म के लिये खूबसूरत सिनेमैटोग्राफी की है अरुण एम. ने और इसके मुख्य कलाकार हैं-गगन निमेश, अरिष्टि सरकार, शेफाली, पूजा, ऐश्वर्या, समीक्षा भट्ट और आरिश वर्मा। फिल्म का पोस्ट प्रोडक्शन तीव्र गति से स्टूडियो साऊंड एण्ड विजन में चल रहा है।

प्रदर्शन को तैयार

'सेनुर पहिनब तोहरे नाम के'

समरजीत। मिश्रा फिल्म्स इंटरनेशनल की प्रस्तुति 'सेनुर पहिनब तोहरे नाम के' प्रदर्शन के लिये तैयार हो गयी है। निर्माता-निर्देशक सूर्यमणि मिश्रा की इस पारिवारिक फिल्म में मनोरंजन के सारे मसाले उपलब्ध हैं। यह फिल्म मूल रूप में दो भाईयों की कहानी से शुरु होती है। एक भाई नेक है, परिश्रमी है तो दूसरे मक्कार

भाई की नजर उसकी खुशहाली पर पड़ती है। वह नाटकीय ढंग से धीरे-धीरे भाई को शराबी बना देता है। अच्छी भली गृहस्थी में घुन लग जाता है। परिस्थितियां इतनी बिगड़ जाती हैं कि एक दिन शराबी का पुत्र आजिज होकर घर छोड़ कर चला जाता है। यहीं से सब उलट पुलट हो जाता है। फिर आगे और क्या-क्या उतार चढ़ाव आते हैं। इसी का एक खूबसूरत चित्रण है 'सेनुर पहिनब तोहरे नाम के'। माला महाजन द्वारा लिखित इस फिल्म के पटकथा-संवाद लेखक हैं

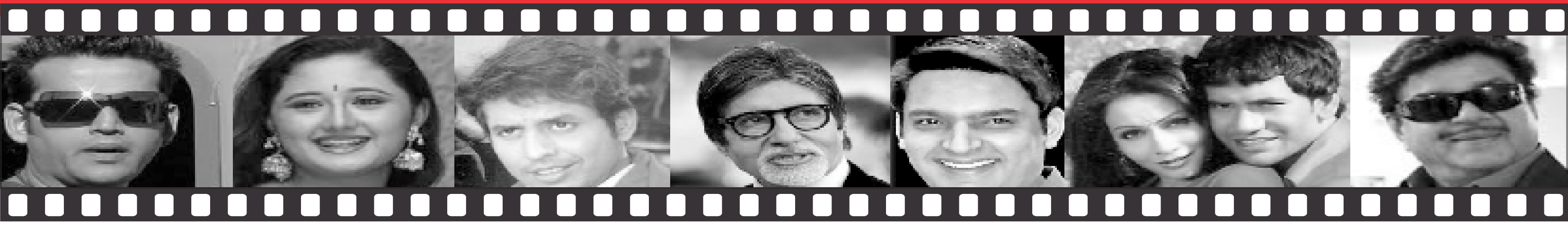

अपराध में लिप्त प्रेम-त्रिकोण की दास्तान है 'मधुबाला'

समरजीत। वाइस मोंक फिल्म्स प्रा.लि. द्वारा प्रस्तुत निर्माता सत्यम शिवम की भोजपुरी फिल्म ''मधुबाला'' रहस्य- रोमांच से भरी एक आपराधिक प्रेम कहानी है। श्री गोपाल द्वारा निर्देशित यह फिल्म एक त्रिकोणीय प्रेम कहानी को लेकर चलती है। कालान्तर में मधुबाला, राजा और मेघा के बीच एक पेंच बनी इस कहानी में अचानक नया मोड़ आता है।

मधुबाला की हत्या से सभी अवाक रह जाते हैं। इस जघन्य अपराध के पीछे की साजिश को बेनकाब करने आता है एक सीबीआई ऑफिसर प्रजापित। अब अंत में यह कहानी किस नतीजे पर पहुंचती है, यही है ''मधुबाला'' की कहानी।

इस सस्पेंस-थ्रिलर फिल्म की कथा-पटकथा अशोक नारायण ने लिखी है और संवाद श्री गोपाल के हैं। गीत माइकल बिहारी के, संगीत अमरेश शाहाबादी का और छायांकन हीरा सरोज का है। सुप्रीति शिवम और विभा सिन्हा सह-निर्मात्री हैं। मुख्य कलाकार हैं-राकेश मिश्र, तनुश्री चटर्जी, अर्चना सिंह, गिरीष शर्मा, उत्तम झा, मेहनाज, शशि भूषण और अशोक नारायण। राजेश राजपूत, संगीतकार हैं मधु-कृष्णा, नृत्य निर्देशक निहाल सिंह, कैमरा मैन प्रकाश चंद्र और पीआरओ समरजीत हैं। 'सेनुर पहिनब तोहरे नाम के' के मुख्य कलाकार हैं-बॉबी किशन, अंजना डॉब्सन, कमलकांत मिश्रा, गोपाल राय, गिरिजा शंकर शुक्ला, मीरा मिश्रा, निशा सिंह, आशीष सिंह, वंदना, प्रमोद, अर्पिता, दीपक सिंह, लालमणि मिश्रा, देवेन्द्र, शीतला प्रसाद, मा. दशरथ, मा. साजन, अजय शर्मा, अशोक श्रीवास्तव और आलोक शिव कुमार।

भोजपुरी फिल्म 'ठोक देब'बिहार में सुपर हिट

बहुचर्चित प्रोडक्शन कंपनी यश एंड राज इंटरटेनमेंट के बैनर तले एवं मधु सिंह प्रेजेंट 'ठोक देब' का प्रदर्शन विगत दिनों बिहार में हुआ और यह

फिल्म सुपर हिट साबित हुई भीषण गर्मी की परवाह न करके भी दर्शकों ने भोजपुरी फिल्म 'ठोक देब' को देखने के लिए लालायित दिखे, यही नहीं दर्शको में फिल्म को देखने के लिए अद्‌भुत उत्साह दिखा। अक्षरा सिंह, पवन सिंह, दिव्या द्विवेदी, नवोदित अभिनेता सुजीत और बिपिन सिंह, नीलिमा सिंह एवं अन्य अभिनेताओं सजी फिल्म को देखकर दर्शक गदगद हो गए। फिल्म के कर्णप्रिय गीत-संगीत को दर्शकों ने खूब सराहा, यही नहीं बिपिन सिंह, अक्षरा सिंह एवं पहली बार भोजपुरी फिल्म जगत में सशक्त महिला विलेन का किरदार निभाने वाली नीलिमा सिंह के अभिनय को दर्शकों ने बहुत प्रशंसा की, इस हफ्ते भी फिल्म 'ठोक देब' को देखने के लिए दर्शक बड़ी संख्या में सिनेमाघरो में पहुँच रहे है। फिल्म धमाकेदार प्रदर्शन के साथ ही हर सिनेमाघर में दूसरे सप्ताह की ओर अग्रसर है।फिल्म का निर्देशन अजय कुमार ने किया है।

***

Gorakh Pandey: A versatile Bhojpuri Writer

Gorakh Pandey is a famous Bhojpuri poet. He has written several things in Hindi but he became popular among readers by his Bhojpuri songs because it has been considered that he expressed himself in a better way in Bhojpuri songs only. Whatever he experienced in his short life, he expressed in Bhojpuri songs. His songs prove that he was deeply rooted in his society and for the betterment of his society he tried his best by his writings to bring about certain changes in Indian socio-political system where innocent people including women and tender children were suffering from various types of problems.

Gorakh Pandey born in a middle class family in 1945 in Pandit Ke Munderwa village in Deoria District of Uttar Pradesh. After a few days of his birth his mother died and thereafter his father remarried. There was no affection between him and his step mother at all. His paternal aunty (father's sister) who was a widow became his caretaker and groomed him with love like a real mother so that he never missed his mother's love. Hence, he has expressed in his poem "Bua Ke Liye"-

You are a mother for me
and more than a mother too…
[Tum mere liye ek maa ho/ aur maa se bhi badhkar….]

In "Gorakh Pandey Ke Bhojpuri Geet" which is published by National Book Trust Jitendra Verma has written that Pandey's father married him when he was not so mature so that the father's responsibility towards his son will be over. This marriage was not so fruitful for Pandey and his wife too. There was no good relationship between husband and wife. Every family desires that the sons of the family must became a person who can earn his livelihood. But the tact of earning was not there in Pandey and that is why his family was not happy with him. The members of the family tried their best to stimulate Pandey in this direction but the result was zero. Instead of earning livelihood Gorakh Pandey reached Varanasi for higher studies. But the aim of his study was not to gain money, post and position at all. His aim was to bring about certain changes in the system for the betterment of society because exploitation of innocent people was at extreme level.

Gorakh Pandey

Soon he reached Varanasi his social activities increased itself. He has been elected as President of Student's Union of Sampurnand Sanskrit University. He completed his Sahityacharya's Degree from this particular university. He earned his M.A. in Philosophy Degree from Benaras Hindu University in 1971. Then he moved to Jawaharlal Nehru University, New Delhi for research. The topic of his research in JNU was " Jyaan Pal Sartra Ke Asistitvavad Me Algaav Ke Tatva". When he was a Research Associate at JNU he died on 29th January 1989.

Gorakh Pandey lived a very short life of 44 years but he is so relevant due to his social concerns and responsibilities which reflect from him literary works. His poetry is very much similar to Kabir's poetry. He tried his best to bring about certain changes in the system with the help of his writings. Whereas songs are considered as romantic genre in literature, he associated songs with human struggle. During his life time only his two books have been published. First book, "Bhojpuri Ke Nau Geet" (Nine Bhojpuri Songs) has been published in 1978 by Janvadi Lekhak Sansthan, New Delhi and the second book "Jagte Raho Sone Wale" (Poetry Collection) has been published in 1983 by Radhkrishna Publications. Post humanly his poetry collection "Swarg Se Vidai" (1989), " Loha Garam Ho Raha Hai" (1990) and his research book "Dharma Ki Marxvadi Dharna" (2003) and "Samay Ka Pahia" a poetry collection (2005) have been published. Publication of his book after his death proves the relevance of the views of Gorakh Pandey.

In the year of 1969 itself he was deeply indulged into Peasant Movement. This attachment was beyond discourse. In this struggle he involved on every step and in this involvement his main motive was to bring about changes in the exploited and depressed class. For this reason he has written songs to sensitize people for their human rights. He has written songs on traditional style or we can say Lok Dhuna of Bhojpuri e.i. Holi, Jhoomar, Sohar, Barahmasa, Lorikayan etc. This is because every lok dhuna is having its own style and nature. Pandey has written the following song on Holi Dhuna-

Whose land is this Patwari
whose land is this ?

Caste system is main medium of exploitation in Hindu society to exploit the downtrodden and innocent people. Pandey criticized this system in this way:

Fate, Religion, Karma, Incarnation
are the tools of exploitation.

In our country Brahmanical system has divided a large number of people in different sub-castes.

Hence, Pandey raised his voice against this Brahmanical system and therefore he has written:

After mending their shoes
I became a cobbler,
And by carrying their Doli
I became a Kanhar.
And by oozing the oil
I became a Teli-Kalwar.
And by making a cart for them
I became a carpenter,
And after making hoe for them
I became a blacksmith.
They made the walls of castes
And separated farmers from each other.

The above poem proves that Gorakh Pandey was not in favour of caste system. His aim was to build a casteless society.

During the period of struggle for Independence a very beautiful picture of Independent India had been shown to innocent people. This is all because public support was required to fight against Britishers & without their support it was not possible to gain freedom. Zamindar, businessmen and rich-upper class was either with Britishers or standing far away from them. In the freedom struggle innocent people sacrified their lives at massive level. But after Independence they have been cheated by politicians and that is why Gorakh Pandey critized this thing.

Not only this Pandey has written several songs in Bhojpuri on the pathetic condition of women also who were going on wrong path in the name of fashion. For example one song of Pandey is given herein:

At those places
Ladies are so beautiful,
They look nude
when they wear cloths.
They speak Hindi
But communicate better in English.
Colourful Dance bars were built by rich people,
Where Saheb Calls madam with love to dance.
This way they do the publicity work of "Freedom for dance".

On the basis of above examples we can say that Pandey's songs are so simple and effective in nature. The simplicity and effectiveness of his songs made him popular in Bhojpuri society because the subject of those songs is still relevant in our contemporary society. In his short life of only 44 years he tried his best to bring about certain changes the socio-political system where a downtrodden can also live fearlessly.

(Rajesh Kumar "Manjhi" Ph.D Scholar, Deptt. of English, Jamia Millia Islamia, New Delhi)

1000 रुपिया के नगद ईनाम

ज्ञान गंगा प्रतियोगिता न. 6

प्रश्न 1. भोजपुरी सिनेमा के महानायक कुनाल सिंह कवना सीट से लोकसभा चुनाव लड़लें?

क. गोंडा   ख. सारण   ग. महाराजगंज   घ. पाटलिपुत्र

प्रश्न 2. शीला दीक्षित से पहिले दिल्ली के महिला मुख्यमंत्री के रहे?

क. किरण बेदी   ख. मायावती   ग. सुषमा स्वराज   घ. बरखा सिंह

प्रश्न 3. कहेके त सभे केहू आपन .... कवना फिलिम के गीत हऽ?

क. साजन   ख. गंगा किनारे मोरा गांव   ग. धरतीपुत्र   घ. बेटा

प्रश्न 4. मिस इंडिया-2014 के विजेता के बा?

क. पायल पांडेय   ख. नेहा धूपिया   ग. लारा दत्ता   घ. कोयल राणा

प्रश्न 5. बड़-बड़ घोड़ा दहा गइलें आ गदहा कहलें कतेक धूर पानी ..... के मतलब का भईल?

....

नांव ....

उम्र .... फोन नं. ....

पूरा पता ....

....

सभ प्रश्न के सही उत्तर लिखला के बाद आपन नांव, उम्र, फोटो, पूरा पता आ फोन न. लिख के नीचा लिखल पता पर भेज दिहीं। सही उत्तर देवे वाला विजेता के नांव लक्की ड्रॉ से निकालल जाई आ अगिला अंक में प्रकाशित कईल जाई।

सेवा में
हेलो भोजपुरी
ए-3 , गली न.-1, विकासकुंज एक्स., मोहन गार्डेन उत्तम नगर,
नई दिल्ली -110059

ग़ज़ल

काल्ह देखनी जे सपना बेकार हो गईल।
हाल कुकुरे के जईसन हमार हो गईल।।
खाक परदेश के हमनी छानत रहीं।
भले रोटी मिलल न उजार हो गईल।।
हल कुकुरे के जईसन............
आग लागल बा सगरे जब अलगाव के।
नेह कब ले रही ई कटार हो गईल।।
हाल कुकुरे के जईसन...........
कहाँ गवई गिरमिन के माटी गईल।
रहे हरियर फुलईल पठार हो गईल।।
हल कुकुरे के जईसन ....
नाम बड़के भले बा बड़ाई कहाँ।
छूंछ सोहरत के लागल बाजार हो गईल।।
हाल कुकुरे के जईसन ....

शंकर रमण
साहित्यकार/गजलकार
जमशेदपुर, झारखंड

आवश्यकता है

लोकतंत्र की बुनियाद

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)
दिल्ली से प्रकाशित, के लिए
पंचायत व जिला स्तर पर
संवाददाता, क्षेत्रीय प्रतिनिधि
की आवश्यकता है।

ईच्छुक व्यक्ति संपर्क करें।
Ph.: 09811441974, 09711441446
loktantrakibuniyad@gmail.com

युवा व्यवसायी व समाजसेवी शिवदास जी को पत्रिका भेंट करते हेलो भोजपुरी पत्रिका के संपादक राज कुमार अनुरागी

Director
Rizwan

Co-Ordinator
Abhinav Kumar

AL.J.R INTERNATIONAL

TECHNICAL TRAINING CENTRE

Note : Online Passport, Renewal.

Raghunath Market, Near Punjab National Bank,
Sadhu Medicine Complex, Babuniya More, Siwan, Bihar-841226
Ph. : 07352868441, 9661494313 , 08083406601, 07543807786
E-mail : shaikh1788@gmail.com; jr.international1786@gmail.com

विदेश जाने के लिए संपर्क करें

Starts With Website

Rs. 4999/- Only

About us

Stationed in New Delhi, Daana Software Developers is the home to plethora of affordable web hosting services to enhance your medium and large scale businesses.We make sure that our innovative services evolve with your business needs, so that you gain the optimum. Our team of extremely proficient IT professional will efficiently guide you through the latest IT solutions to meet your business needs.

WEB SOLUTION

SOFTWARE DEVELOPMENT

DOMAIN, WEB HOSTING

GRAPHICS SOLUTION

ONLINE DIGITAL MARKETING

BULK E-MAILING

Daana Software Developers:

F-103, First Floor, Plot No :3, Sudeep Plaza, Pocket-4 Market, Sec-11, Dwarka, New Delhi-75

Skype : daanaonline | BBM : 2B1A45D6 | Sales IVR: +91-9810081084 | Email:info@daanaonline.com